Annual Magazine

Released By

HIMWATS-Savidya

On The Occasion Of

National Science Day (28 Feb 2011)

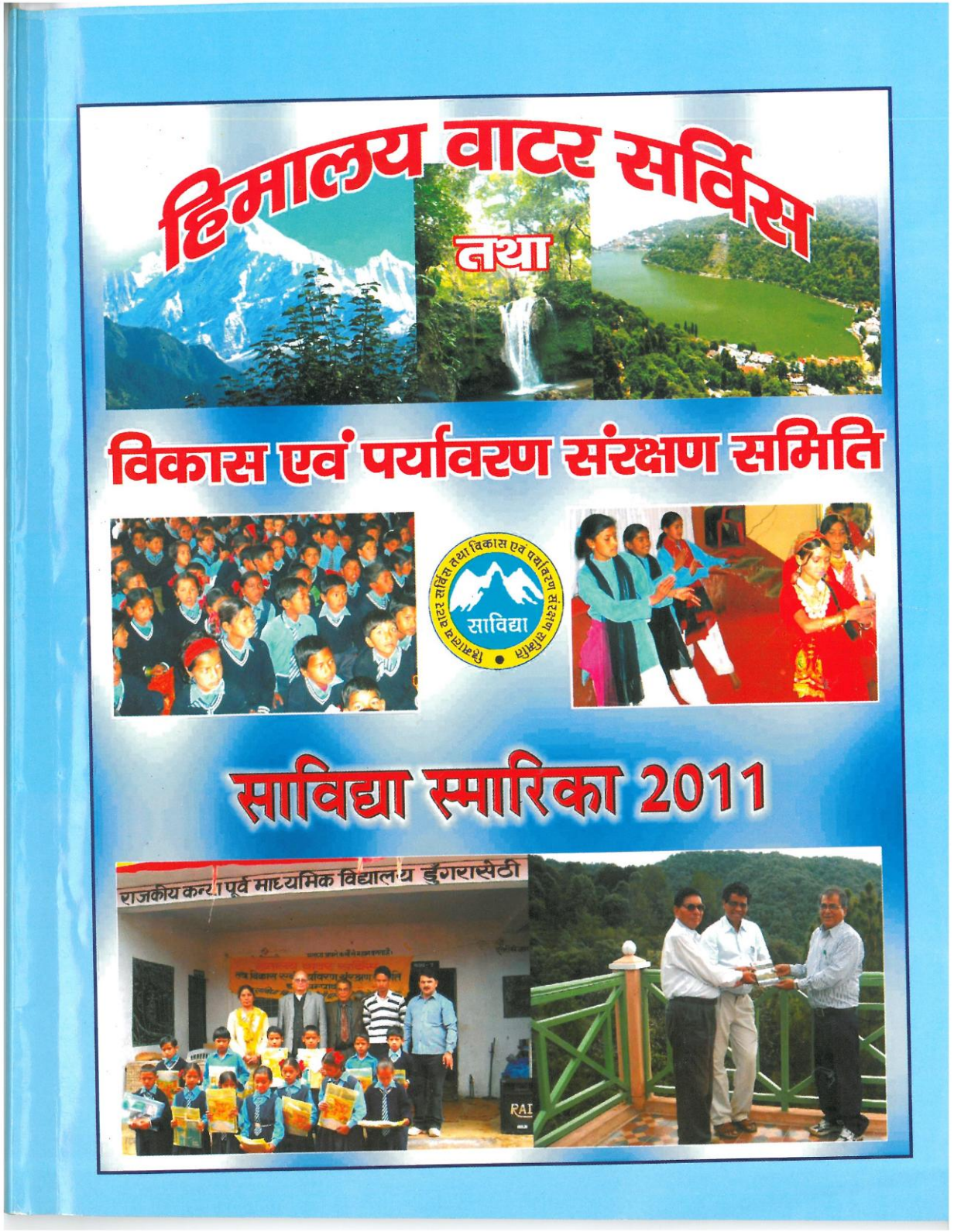

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति

अनुक्रमणिका

समिति	क्रमांक	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
अध्यक्ष **डा० के.के. पाण्डे**	1	सम्पादकीय, संदेश, संक्षिप्त इतिवृत्त, उद्देश्य, साविद्या उपसमिति।	4-10
सचिव **डा० एच.डी. बिष्ट** **सम्पादक मण्डल** **श्री एच.डी.बिष्ट**	2	आर्दश विद्यालय संकल्प एवं अवधारणा, अंगीकृत विद्यालय, गणवेश वितरण, शैक्षिक किट, रचनात्मक सुझाव एम.एम.पन्त, गेम्स, सपनों की उड़ान, छात्र-छात्रा जन्मदिवस, शिक्षा प्रचार-प्रसार, निःशुल्क दन्त प्रशिक्षण, राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन।	10-20
श्री बी.डी. गुरूरानी **श्री आर.डी. जोशी**	3	ज्ञान विज्ञान केन्द्र, स्थापना, उपलब्धियाँ, चक्रीय पुस्तकालय, विज्ञान संसाधन केन्द्र	21-23
छायांकन व साज सज्जा **श्री गणेश पन्त**	4	शिक्षक प्रशिक्षक कार्यक्रम: अनुश्रवण प्रोग्राम 2010, समीक्षात्मक योजना, कार्य, अनुश्रवण अधिकारियों की बैठक	24-26
श्री आर.के. पन्त **वित्त प्रबन्धन** **डा० जी.वी. बिष्ट**	5	सिद्ध जागरण सेवा समिति, बाल प्रभाग, युवा प्रभाग, वयस्क नागरिक प्रभाग, किसान मेला, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, शासन प्रशासन एवं स्थानीय प्रबुद्ध नागरिक, अन्य प्रयत्न	27-33
		फोटो पृष्ठ	34-40
कार्यक्रम प्रबन्धन **डा० एच.डी. बिष्ट**	6	अन्य कार्यक्रम, स्वास्थ्य, डॉ0 गिरिबाला पन्त प्रोत्साहन राशि, फाउण्डेशन फॉर एक्सीलैन्स।	41-43
टाइपिंग **मेघा भण्डारी**	7	आर्थिक स्त्रोत:, साविद्या परियोजना का मूल्यांकन, आशा फार एजूकेशन द्वारा प्रदत्त सहायता।	44-45
आवरण पृष्ठ बायें से दाये ऊपर हिमालय एक दृश्य, कार्बेट फाल, नैनी झील	8	आगन्तुक प्रतिक्रिया, डॉ0 अतुल पंत, ममता वर्मा, मीरा वर्मा, गिरीश चन्द्र पाण्डे, आशा पाण्डे, षष्टी पाण्डेय, मोहनी वर्मा, रेखा जोशी,	46-50
मध्य: राष्ट्रीय विज्ञान दिवस छात्र/छात्राएं सांस्कृतिक कार्यक्रम	9	प्रेरणा दायक प्रसंग, रूपये का प्रतीक चिह्न, प्रतिभा का अवतार, सक्सेस फंडा, अवसर की पहचान	51-56
नीचे-शैक्षिक किट वितरण **एम.एम.पन्त,** साइटविसिटर	10	शिक्षा का अधिकार अधिनियम, गुणवत्ता के आईने में। अन्य महत्वपूर्ण शैक्षिक लेख, भारत का संविधान।	57-63
रविराजगोपालन मायावती	11	विविध	64-67
आश्रम में।	12	विज्ञापन	68-74

सम्पादकीय

शिक्षा राष्ट्र का वर्तमान भी है और भविष्य भी। यह सच है कि कोई भी राष्ट्र सेना और पुलिस के भरोसे इतना सुरक्षित नहीं रह सकता जितना सुशिक्षित, संस्कारवान्, चरित्रवान और अनुशासित नागरिकों के भरोसे। हमारी शिक्षा व्यवस्था यदि चरित्रवान और ईमानदार नागरिकों का निर्माण करने में सक्षम है तो उसकी सार्थकता है अन्यथा व्यवस्था दोष पूर्ण है। सुनियोजित शिक्षा व्यवस्था सर्वप्रथम राष्ट्रीय आवश्यकता है।

देश के भविष्य का निर्माण उसके अध्ययन कक्षों में होता है। अत: निर्माण की गुणवत्ता पर नजर रखना और उसे परखना निर्विवाद रूप से जरूरी है। शासन-प्रशासन के अतिरिक्त प्रबुद्ध जनों का भी यह पुनीत दायित्व है कि राष्ट्रीय निर्माण की प्रक्रिया में वे अपनी प्रतिभा का योगदान करें। यह एक राष्ट्रीय दायित्व है। इसी भावना से प्रेरित होकर 'सावित्री' के माध्यम से हमने सुदूर चम्पावत जनपद में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों को गोद लेकर शिक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्य की दिशा में अभिनव प्रयोग किये हैं। विगत 5-6 वर्षों से निरन्तर बच्चों तथा अभिभावकों के साथ मिल-बैठकर शैक्षिक क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं की समीक्षा करते रहे हैं। निजी स्तर पर संसाधन जुटाकर समस्याओं का समाधान करने में संस्था तत्परता से अग्रसर हुई है। अपने स्तर पर आवश्यकता के अनुरूप अतिरिक्त शिक्षकों की व्यवस्था की है। वर्तमान सूचनाक्रान्ति के अनुरूप विद्यालयों को संसाधन-युक्त किया है तथा ज्ञान-विज्ञान केन्द्र की स्थापना की है।

कोई भी प्रतिभाशाली छात्र आर्थिक एवं सामाजिक विपन्नता के कारण उच्च तकनीकी अथवा मैडिकल शिक्षा के अवसरों से वंचित न रहे इसके लिए देश और विदेश में रहने वाले कार्यरत प्रतिभाशाली, दानशील मनस्वी युवाओं के सहयोग से हर स्तर पर अनेक छात्रवृत्तियों का वितरण प्रतिवर्ष सावित्री द्वारा किया जाता है। भू0पू0 राष्ट्रपति महामहिम डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के विजन 2020 के अनुरूप भारत महान् की संकल्पना साकार हो सके, इस महान लक्ष्य के प्रति हम अभिप्रेरित है; मनसा, वाचा और कर्मणा। सामाजिक दायित्व के नाते कहें या राष्ट्र के प्रति प्रत्युपकार के भाव से, हम इसके लिए प्रतिबद्ध हैं। डॉ0 प्रभु गोयल एवं अमेरिका में कार्यरत अनेकों भारतीय युवा हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं, जिन्होंने प्रतिबद्धता व्यक्त की है कि गरीबी के कारण कोई प्रतिभाशाली छात्र उच्च अध्ययन से वंचित न रहे।

देश की शिक्षा के इतिहास में वर्ष 2010 विशेष महत्वपूर्ण है। 1 अप्रैल 2010 से शिक्षा का अधिकार अधिनियम समूचे राष्ट्र में लागू हो चुका है, विलम्ब से ही सही। हमें आशा करनी चाहिए कि इसका क्रियान्वयन प्रभावी ढंग से होगा। जन-मन में इसके प्रति प्रतिबद्धता होगी। देश को सुसंस्कृत एवं संस्कारवान बनाने की बात हर कोई करता है। किन्तु भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो छात्रों के कौशल विकास में सहायक हो और आचरण की दिशा दे सकें। 'वृत्तं यत्नेनसंरक्षेत्' की भावना जगा सके। दोहरे चरित्र के लोग कदापि संस्कार नहीं जगा सकते। हमें संस्कारवान नागरिक चाहिए तभी सामाजिक विकास संभव है।

संविधान निर्माताओं ने शिक्षा को जन साधारण की खुशी और उससे भी अधिक भावी पीढ़ी के अभ्युदय से जोड़ा है। इसलिए आइए, आप और हम मिलकर इसे पूरा करने में योगदान करें। बच्चों की सोच और प्रतिभा को निखारकर विद्यालयों को उर्वरक बनावें और सुन्दर कल का निर्माण करें।

'सावित्री' इस पुनीत कार्य में किसी न किसी प्रकार से जुड़े सहभागियों, शिक्षाविदों विचारकों व दानदाताओं के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हुए इस दिशा में रचनात्मक सुझाव की भी कामना करती है इन्हीं विचारों के साथ सावित्री स्मारिका का यह चतुर्थ अंक आपको सादर समर्पित है।

-सम्पादक मण्डल

डा० बी.एस. बिष्ट
कुलपति
गोविन्द बल्लभ पंत
कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर-263145
जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

सन्देश

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति, ग्राम डड़ा, जनपद-चम्पावत विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी दिनांक 28 फरवरी 2011 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मना रहा है। इस अवसर पर आयोजकों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय वन दिवस की तैयारी, प्रबन्धन एवं संरक्षण के लिए एक कार्यशाला का आयोजन भी किया गया है। मुझे विश्वास है कि इस कार्यशाला के माध्यम से ग्रामीण जनों, विद्यार्थियों एवं क्षेत्रवासियों को आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे नये-नये आयामों के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व में विशेषकर हिमालयी क्षेत्रों के वन समूह के संरक्षण एवं संवर्धन की जानकारी प्राप्त होगी जो कि वनों के बचाव एवं विकास के लिए मील का पत्थर होगा। मैं इस अवसर पर अपनी तथा पन्तनगर विश्वविद्यालय परिवार की ओर से हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस एवं कार्यशाला कि सफल एवं भव्य आयोजन हेतु शुभ कामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा इसके आयोजकों की सराहना करते हुए उनके सत्प्रयासों की सफलता पर हार्दिक बधाई देता हूँ।

(बी.एस. बिष्ट)

डा० पंकज कुमार पाण्डेय
आई०ए०एस०
जिलाअधिकारी/
जिला मजिस्ट्रेट, चम्पावत।
दूरभाष-05965-230285 (का.)
230275 (आ.)

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति, डड़ा, जनपद चम्पावत द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिक संचार, परिषद विज्ञान तकनीकी मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में वैज्ञानिक ज्ञान को लोक प्रिय एवं व्यावहारिक बनाने हेतु विगत वर्षों की ही भाँति इस वर्ष भी दिनांक 28 फरवरी 2011 को, विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जा रहा है और इस उपलक्ष्य में संस्था 'सावित्री' स्मारिका का चौथा अंक भी प्रकाशित करने जा रही है। मेरे संज्ञान में लाया गया है कि उक्त संस्था, विशेष रूप से चम्पावत जनपद के ग्रामीण क्षेत्र एवं हल्द्वानी के पिछड़े वर्ग के छात्र/छात्राओं के चतुर्मुखी विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील है और विभिन्न विद्यालयों में छात्र/छात्राओं के शैक्षिक उन्नयन हेतु कार्य कर रही है। मैं हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति, डड़ा, जनपद चम्पावत द्वारा प्रकाशित की जाने वाली स्मारिका की सफलता की शुभकामना के साथ स्मारिका परिवार एवं संस्थान के समस्त सदस्यगणों को उनके इस पुनीत कार्य हेतु बधाई प्रेषित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित!

(डा० पकज कुमार पाण्डेय)

प्रकाश पन्त
मंत्री
पेयजल, श्रम, विधायी, संसदीय
कार्य, नियोजन, पुर्नगठन,
निर्वाचन, बाहस सहायतित
परियोजनायें, उत्तराखण्ड

विधान भवन,
देहरादून - 248001
दूरभाष: 2665088 का.
266598 (फैक्स)
2748200 (आवास)

सन्देश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति, ग्राम डड़ा चम्पावत द्वारा संस्था 'साविद्या' स्मारिका का चौथा अंक प्रकाशित किया जा रहा है। संस्था द्वारा जनपद चम्पावत व हल्द्वानी में विकास एवं जनहित के महत्वपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं, जो प्रशंसनीय है। वर्तमान में पलायन, पहाड़ की विकट समस्या के रूप में सामने आ रहा है। स्वयं सेवी संस्थाओ, व जनता के सहयोग से इस पर रोक लगायी जा सकती है। संस्था पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ पहाड़ की जनता को पहाड़ों के वास्तविक लाभ एवं जीवन से परिचित कराकर इस अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का प्रयास कर रही है आशा है, प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका में महत्वपूर्ण/पठनीय लेखों व अन्य सहायक सामग्री के माध्यम से जन मानस में जागरूकता लाने का प्रयास किया जायेगा।

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति द्वारा प्रकाशित की जाने वाली स्मारिका की सफलता हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

(प्रकाश पन्त)

प्रो० वी.पी.एस. अरोरा
कुलपति

कुमाऊँ विश्वविद्यालय
नैनीताल - 263001
कार्या.- 05942-235068
आवास: 05942-236855
फैक्स: 05942-235576
e-mail:vpsarora@gmail.com

सन्देश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि विगत वर्षो की भाँति इस वर्ष भी हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति, ग्राम डडा, चम्पावत द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिक संचार परिषद, विज्ञान एवं तकनीकी मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में वैज्ञानिक ज्ञान को लोकप्रिय एवं व्यावहारिक बनाने हेतु 28 फरवरी, 2011 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जा रहा है तथा इस अवसर पर 'साविद्या' स्मारिका का चौथा अंक प्रकाशित किया जा रहा है। एक कार्यशाला अन्तर्राष्ट्रीय वन दिवस की तैयारी के लिए धारणीय प्रबन्धन संरक्षण एवं वैश्विक वन विकास विषय पर आयोजित की जा रही है। यह बड़े गर्व की बात है कि यह संस्था विशेष रूप से चम्पावत जनपद के ग्रामीण क्षेत्र एवं हल्द्वानी के पिछड़े वर्ग के छात्र/छात्राओं के चतुर्मुखी विकास एवं उनमें विज्ञान के प्रति अभिरूचि जागृत करने हेतु सतत् प्रयत्नशील है। मैं संस्था से जुड़े समस्त वैज्ञानिकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों, छात्र/छात्राओं का अभिनन्दन करता हूँ, उनके प्रयासों की सराहना करता हूँ, एवं कार्यक्रम की सफलता की हार्दिक कामना करता हूँ।

शुभ कामनाओं सहित!

(वी.पी.एस. अरोरा)

डा० सुरेश चन्द्र टम्टा
अपर निदेशक।

चिकित्सा सवास्थ्य एवं
प.क. कुमाऊँ मण्डल,
नैनीताल

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि हिमालय वॉटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति-डडा, चम्पावत अपनी वार्षिक स्मारिका का अवलमोचन करने जा रही है। इस अवसर पर मैं स्वास्थ्य विभाग की ओर से संस्था द्वारा किए जा रहे जनहित के कार्यो का अभिनन्दन करता हूँ इस संस्था द्वारा प्रत्येक वर्ष कुमाऊं मण्डल के विभिन्न जनपदों के दूरस्थ असेवित क्षेत्रों में नेत्र शिविरों का आयोजन कर, अन्धता निवारण कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग को सहयोग दिया जा रहा है, जिसकी में सराहना करता हूँ, साथ ही आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह संस्था विभाग को सभी राष्ट्रीय कार्यक्रमों में नि:स्वार्थ से सहयोग प्रदान कर, क्षेत्र के लाभार्थियों को सेवाएँ प्रदान करेगी।

स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ।

शुभाकाँक्षी

डॉ० सुरेश चन्द्र टम्टा

डॉ० के.के. पाण्डे
अध्यक्ष (हिमवत्स)

सन्देश

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति ग्राम डडा, चम्पावत प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी 28 फरवरी को चम्पावत में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन कर रही है। इस अवसर पर मैं समिति के पदाधिकारियों, सदस्यों, स्वयंसेवक शिक्षकों तथा संस्था के सहयोगी शिक्षाविदों एवं जन प्रतिनिधियों को बधाई देना चाहूंगा, जिनके सतत् सहयोग से समिति द्वारा अंगीकृत विद्यालयों को समाज में आदर्श विद्यालय के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है, तथा विविध जनजागरण के कार्यकलापों में गति प्रदान की जा सकी है।

दूरस्थ क्षेत्रों में समिति द्वारा किये जा रहे शैक्षिणिक स्वास्थ्य रक्षा एवं जन जागरण सम्बन्धी विविध कार्यकलापों का विवरण यह संस्था प्रतिवर्ष 'साविद्या' स्मारिका के माध्यम से प्रकाशित करते आ रही है। इस वर्ष भी 'साविद्या स्मारिका' का विमोचन राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर प्रस्तावित है। मुझे आशा है कि यह स्मारिका स्थानीय छात्र/छात्राओं, अभिवावकों एवं क्षेत्रीय ग्रामीण वासियों के लिए लाभप्रद एवं मार्ग दर्शक सिद्ध होगी।

मैं विज्ञान दिवस, स्मारिका के विमोचन एवं इस अवसर पर आयोजित की जा रही ''धारणीय प्रबन्धन, संरक्षण एवं वैश्विक वन विकास'' विषयक कार्यशाला के सफल आयोजन की कामना करता हूँ।

अध्यक्ष

डॉ० के.के. पाण्डे

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति (हिमवत्स)

संपादक मंडल

एच.डी. बिष्ट

आर.डी. जोशी

बी.डी. गुरूरानी

आर.के. पंत

गणेश पंत

मेघा भंडारी

संक्षिप्त इतिवृत्त

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण समिति (हिमवत्स): अपने स्वयंसेवी एवं समुन्नत आर्दशों के प्रति अभिमुख होकर मूलत: 1997 से कार्यरत है। स्मारिका के विभिन्न अंकों में जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, संस्था के पंजीकरण का विवरण निम्नवत् है-

1. सोसाइटी रजि0एक्ट0क्र0 758/1997-98 दि0 10.11.1997
2. विदेशी सहायता नियम अधिनियम के तहत पंजीकरण क्र0 36890007 दि0 23.1.2008
3. आयकर छूट-भारतीय दान दाताओं हेतु 12 के अन्तर्गत पत्रावली 5E/A.A/HAL/G 80 H.W.M.T.V.A.P
4. पैन रजि0- पैन No AAAJH0221L
5. भारतीय स्टेट बैंक हल्द्वानी में लेखा संख्या-
   विदेशी मुद्रा हेतु-11178424028
   भारतीय मुद्रा हेतु-11178424017

संस्था मूलत: स्थानीय एवं क्षेत्रीय विकास के अनुरूप शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास, पर्यावरण संरक्षण, पेयजल की सुविधा तथा जन चेतना जैसे महत्वपूर्ण विषयों से जुड़ी है तथा इन्ही महान् उद्देश्य और लक्ष्यों की सतत् सम्प्राप्ति की दिशा में अग्रसर है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य विषयक गतिविधियों को अधिक प्रभावी एवं व्यावहारिक दिशा प्रदान करने हेतु एवं कार्य की सुविधा की दृष्टि से समिति का शाखा कार्यालय मार्च 2004 में 14/35 जी.बी. पन्त मार्ग तिकोनियाँ हल्द्वानी में खोला गया जो कि सावित्रा उप समिति का मुख्य कार्यालय भी है। समिति का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण उत्तराखण्ड है। प्राय: प्रबुद्ध समाज में दायित्व बोध की कमी तथा जन चेतना के अभाव में शासन द्वारा संचालित विकास कार्य न तो अपेक्षित गति प्राप्त कर पाते है और न ही इतने प्रभावी सिद्ध होते हैं, जितनी कामना की जाती है। नीति नियामकों के वैचारिक मतभेद, सत्ता परिवर्तन, प्रबल इच्छा शक्ति का अभाव आदि और भी अनेक कारण हो सकते हैं। इन सब कारणों के रहते हम उस राष्ट्रीय लक्ष्य से बहुत पीछे हैं जहां हमें होना चाहिए था।

प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता से परे उसके सार्वजनीकरण के लक्ष्य को हम 60 साल में भी प्राप्त नहीं कर सके जो 1950 के बाद 10 साल की अवधि में पा लिया जाना था। पुनश्च नामांकन पूरा करने मात्र से तो शिक्षा का लक्ष्य पूरा नहीं हो जाता। शिक्षा कोई अनुष्ठान मात्र नहीं है जो सामान्य औपचारिकता भर से पूरा कर लिया जाय। सरकारी स्तर पर किये जा रहे तमाम प्रयासों की तब तक सार्थकता नहीं है जब तक वे धरातल पर खरे न उतरें। हमारी संस्था, सरकारी संसाधनों से परे सरकारी प्रयासों को एक सुदृढ़ आधार देकर शिक्षा के स्तरोन्नयन की दिशा में ठोस प्रयास करने में जुटी है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति रूचि बढ़ाना, चेतना जगाना, आम आदमी में दायित्वबोध उत्पन्न करना, आदि कार्यों में विशेषज्ञों की प्रतिभागिता को बढ़ावा देकर 'हिमवत्स' एक ललक, एक आत्मीयता तथा एक जुनून के साथ छात्रों, शिक्षकों एवं क्षेत्र की जनता के मध्य प्राणप्रण से तत्पर है।

जन-जीवन को उन्नत दिशा प्रदान करने, विकास की धारा से समाज को क्रियात्मक रूप से जोड़नें, श्रम के प्रति आस्था जगाने, पलायन को रोकने, लोगों को परिस्थिति की जानकारी देने जैसे विषयों पर 'हिमवत्स' देश एवं प्रदेश के वरिष्ठ विद्वानों, वैज्ञानिकों कृषि विशेषज्ञों, तथा विशिष्ट संस्थानो व विश्वविद्यालयों तथा स्वास्थ्य संगठनों की यथेष्ट सहभागिता व सहयोग अनवरत प्राप्त करता रहा है।

समिति के उद्देश्यों का उल्लेख स्मारिका 2010 में किया जा चुका है तथापि मुख्य उद्देश्य नीचे दिये जा रहे है।

1. संस्था के वर्तमान कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत गुणात्मक शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार करना।
2. आदर्श विद्यालयों की अवधारणा को विकसित करना।
3. छात्रों में वैज्ञानिक अभिरूचि का संवर्धन व विकास करना।
4. निर्धन छात्रों को प्रगति का अवसर प्रदान करना।
5. छात्रों में स्वालंबन के प्रति अभिरूचि जगाना।
6. सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करना व जन चेतना जागृत करना।
7. महिला सशक्तिकरण में सहयोग प्रदान करना।
8. स्वरोजगार को बढ़ावा देना, स्वरोजगार के विभिन्न विषयों को सूचीबद्ध कर उनमें प्रशिक्षण प्रदान करना व कौशल विकसित करना।
9. समाज में श्रमशक्ति के प्रति आस्था जगाना।
10. पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना व जल संरक्षण, वृक्षारोपण तथा प्रदूषण रहित वातावरण के लिए जन चेतना जगाना।
11. आपदा प्रबन्धन के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था व जागरूकता पैदा करना।
12. भ्रष्टाचार व शोषणमुक्त समाज के प्रति जन चेतना जगाना।
13. उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समय-समय पर क्षेत्र में गोष्टियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों व विशेषज्ञ वार्ताओं का आयोजन करना।

सावित्रा उप समिति

सावित्रा, हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावण संरक्षण समिति (हिमवत्स) की उपसमिति है। सावित्रा का मूल उद्देश्य नवाचारी शिक्षण प्रयोगों द्वारा शिक्षा का गुणात्मक विकास करना है। समिति छात्रों को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने हेतु संसाधन उपलब्ध कराती है तथा मेधावी व निर्धन छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती है। समिति का ध्येय है कि कोई भी छात्र आर्थिक मजबूरी के कारण शिक्षा के लाभ से वंचित न रहे। संस्था छात्र-छात्राओं को बढ़ते समय के अनुरूप विकास की दिशा प्रदान करने के प्रति सतत् सचेष्ट है तथा इसके लिए यथोचित संसाधन जुटाती है। विशेषज्ञों का सहयोग लेती है तथा अभिभावकों को अभिप्रेरित करती है। शैक्षिक विकास के क्रम में उत्पन्न होने वाले अवरोधों को दूर करने की दिशा में संस्था और उससे जुड़े हुए विशेषज्ञों का निरन्तर प्रयास रहता है। इस लक्ष्य को पूरा करने हेतु संस्था द्वारा चम्पावत क्षेत्र में विज्ञान संसाधन केन्द्र स्थापित किया गया है। देश और विदेश के अनेक वैज्ञानिक व शिक्षाविद् समय-समय पर उक्त केन्द्र में पधार कर वार्ताओं व विविध वैज्ञानिक प्रयोगो का प्रदर्शन कर छात्र, शिक्षक व क्षेत्रीय जनता का बौद्धिक विकास करने में भरपूर सहयोग करते हैं। आई0आई0टी0 कानपुर के भू0पू0 प्रोफेसर डॉ0 एच0डी0 बिष्ट की अन्त: प्रेरणा से इस केन्द्र की स्थापना की गई तथा उनके सत्प्रयासों से ही अनेक देश-विदेश के वैज्ञानिकों का सानिध्य लाभ इस केन्द्र को मिलता है।

सावित्री समिति विद्यालयों में अत्यन्त गरिमामय शैक्षिक वातावरण का निर्माण करना चाहती है जिससे छात्र 21वीं शताब्दी के अनुरूप शैक्षिक वातावरण में ढलकर सुखद एवं गरिमामय भविष्य के लिए तैयार हो सकें। उक्त आलोक में संस्था का प्रयास है कि-

1. छात्र परीक्षाओं में अच्छा स्थान प्राप्त करें।
2. प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल रहें।
3. सैनिक स्कूल, नवोदय विद्यालय व राजीव विद्यालय जैसी विशिष्ट संस्थाओं हेतु उनका चयन हो सके।
4. छात्र जीवन के हर क्षेत्र में सफल प्रतिभाग कर सके।
5. माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने के बाद I.I.T तथा I.I.M जैसे डिग्री कोर्सो हेतु उनका चयन हो सके।
6. आदर्श नागरिकों के रूप में समाज और राष्ट्रीय विकास की धारा से अभिन्न रूप से जुड़ सकें।

सावित्री के आर्थिक स्त्रोत-

1. संस्था के सचिव डॉ0 एच0डी0 बिष्ट द्वारा उपलब्ध कराई गई धनराशि से अर्जित ब्याज।
2. अन्य सम्मानित दानदाताओं द्वारा प्रदत्त धनराशि।
3. आशा फार एजूकेशन (A.F.E) द्वारा अवमुक्त सहायता।
4. (F.F.E) द्वारा अवमुक्त धनराशि।

सावित्री उपसमिति की आधारभूत दिशाएँ

1. आर्दश विद्यालय

1.1 संकल्प एवं अवधारणा

शिक्षा के क्षेत्र में एक उपलब्धि यह है कि शिक्षा के प्रति अभिभावकों में जागरूकता बढ़ी है, तथापि उसे सही दिशा मिलनी शेष है। सार्वभौमिक शिक्षा के संवैधानिक अधिकार के चलते विद्यालयों का जाल फैलता गया। पिछले दो दशकों के अन्दर तो 'सबके लिए शिक्षा' अथवा सर्वशिक्षा योजनाओं के अर्न्तगत सरकारी विद्यालयों को साधन सम्पन्न भी किया गया। शिक्षा में नवाचार व स्तरोन्नयन का नित-नूतन उद्घोष होता रहा। 40 वर्षो के सूनेपन को विगत दो दशकों में परिवर्तन का स्वर तो मिला किन्तु शिक्षण का स्वरूप नहीं बदला। आवश्यकता है बालक के सर्वतोमुखी विकास की। संविधान निर्माताओं ने प्रारंभिक शिक्षा में किए गए निवेश को सर्वाधिक फलदायी माना है। इसका संबन्ध उत्पादकता और जन साधारण की खुशी और उससे भी अधिक भावी पीढ़ी के निर्माण से है। इसलिए हमारी संस्था विद्यालय को ऐसे सामुदायिक केन्द्र के रूप में विकसित करना चाहती है। जहाँ बच्चे केवल पढ़ने-लिखने तक ही सीमित न रहें वरन उनके दिल और दिमाग को विकास का पूरा मौका मिले, उनकी सोच और प्रतिभा का विकास हो और वे सुन्दर कल के लिए तैयार हो सके। हम विद्यालयों को ऐसा उर्वरक स्वरूप प्रदान करना चाहते हैं। आदर्श विद्यालयों की यही हमारी अवधारणा है। इसे पाना संस्था का लक्ष्य है।

शिक्षा का मौलिक अधिकार, नि:शुल्क, शिक्षा, उसके अन्तर्गत प्राप्त सुविधाएँ, ये सब किसके लिए? सरकारी विद्यालयों से छात्रों का पलायन? ऐसा क्यों? नीति नियन्ताओं व प्रबुद्ध लोगों के सम्मुख यह एक प्रश्नवाचक है। इसी प्रश्नवाचक से उद्वेलित होकर 'हिमवत्स' ने परंपरागत विद्यालयों को आदर्श विद्यालयों का स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया है ताकि वहाँ रोचक व प्रभावी शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करने में शासन के मन्तव्य को पूरा करने व सरकारी नीति में निहित संकल्पना के अनुरूप एक आदर्श प्रस्तुत किया जा सके ताकि शिक्षा का यथोचित लाभ आम आदमी तक पहुँच सके।

इसी अभिप्राय से संस्था ने चम्पावत जनपद में 5 प्राथमिक तथा 2 उच्च प्राथमिक विद्यालयों को अंगीकार किया है और उन्हें आदर्श विद्यालयों के रूप में उभारने के प्रयास में संस्था नितान्त नि:स्वार्थ भाव से समर्पित है। इसके पीछे प्रबल इच्छाशक्ति है, सेवाभाव है तथा परमार्थ की ललक है।

विद्यालयों को आदर्श स्वरूप प्रदान करने के लिए संस्था ने निजी स्त्रोतो से अंगीकृत विद्यालयों को संसाधनयुक्त किया

है और छात्रों को मनोरम एवं सरस शैक्षिक वातावरण सुलभ कराने का ठोस प्रयास किया है, इसके अंर्तगत-

1. अतिरिक्त कक्ष निर्माण कराये हैं।
2. कंप्यूटर सुलभ कराये गये हैं।
3. पुस्तकालय की सुविधा प्रदान की गई है।
4. खेल सामग्री उपलब्ध करायी गई है।
5. विज्ञान संसाधन केन्द्र की स्थापना की गई है।
6. अतिरिक्त प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति की गई है।
7. शिक्षकों के पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है।
8. प्रतिवर्ष छात्रों को नि:शुल्क गणवेश सुलभ कराया जाता है।

1.2 अंगीकृत विद्यालय :

छात्रों के शैक्षिक स्तर को उन्नत करने तथा उन्हें विकास की वर्तमान धारा से जोड़ने के अभिप्राय से चम्पावत जनपद में संस्था के द्वारा पांच प्राथमिक विद्यालयों एवं दो पूर्व माध्यमिक विद्यालयों को अंगीकृत किया गया है। ताकि अन्य विद्यालयों एवं शिक्षा प्रशासन के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया जा सके।

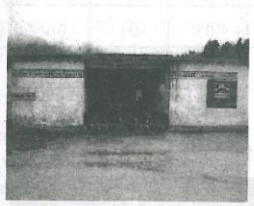

सत्र 2004 से अंगीकृत राजकीय 'प्राथमिक एवं पूर्वमाध्यमिक' विद्यालयों मे क्रमश: विद्यार्थियों, राजकीय शिक्षकों एवं सावित्री शिक्षकों की संख्या

पाठ	कुलेठी	डुगरासेठी*	खर्ककार्की*	डुगरासेठी	ढकना	बडौला	खर्ककार्की
04-05	53, 2, 0						
05-06	55, 2, 4	84, 4, 0					
06-07	69, 1, 3	91, 4, 2					
07-08	81, 1, 3	81, 4, 2	64, 4, 0,	36, 1, 3	79, 1, 0		
08-09	76, 1, 3	97, 4, 2	66, 4, 2	44, 1, 2	74, 1, 3	41, 1, 3,	104, 1, 0
09-10	73 ,1 , 3	104, 4, 2	77, 4, 2	49, 1, 2,	74, 1, 3	42, 1, 2	105, 1, 0
10-11	81, 2, 3	84, 5, 2	78, 5, 2	41, 1, 3	70, 2, 3	39, 1, 2	112, 1, 2

अंगीकृत विद्यालयों की छात्र संख्या तथा राजकीय एवं साविद्या प्रदत्त शिक्षकों का विवरण

वर्ष- 2010 - 11

विद्यालय	कक्षा में छात्र					कुल	शिक्षक सं०		
प्रा0पा0	1	2	3	4	5		रा0	सा0	कुल
कुलेठी:	10	15	16	17	23	81	02	03	05
डुगरासेठी	06	10	10	08	07	41	01	03	04
ढकना	07	13	14	23	13	70	01	03	04
ढ0बडौला	08	10	08	09	04	39	01	02	03
खर्ककार्की	24	20	33	18	17	112	01	02	03
जू0हा0	6	7	8				रा0	सा0	कुल
डुगरासेठी	29	31	24			84	05	01	06
खर्ककार्की	28	28	33	17		78	05	02	07

1.3 गणवेश वितरण (दिनांक 4 जून 2010)

छात्र/छात्राओं के स्वास्थ की रक्षा अनुशासन एवं उनमें समानता का भाव विकसित करने के लिए हिमवत्स अपने सभी अंगीकृत विद्यालयों के छात्र/ छात्राओं को समिति द्वारा निर्धारित गणवेश एवं दवाइयां नि:शुल्क प्रदान करती रही है। इस वर्ष भी 4 जून 2010 को चम्पावत की जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती प्रेमा पाण्डे की अध्यक्षता में क्षेत्र के शिक्षाविदों बुद्धि जीवियों, जन, प्रतिनिधियों अंगीकृत विद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा समिति के स्वयं सेवक शिक्षकों के एक समारोह में अंगीकृत सातों विद्यालयो के छात्र - छात्राओं को गणवेश एवं आवश्यक दवाइयाँ वितरित की गई। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्रीमती पाण्डे ने छात्र/छात्राओं की शिक्षा में गुणवत्ता विकसित करने के लिए शिक्षकों, अभिभावकों ग्राम प्रधानों एवं क्षेत्रीय जागरूक नागरिकों के साथ शिक्षा विभाग के संयुक्त प्रयास की आवश्यकता पर बल दिया। समारोह में उपस्थित खण्ड शिक्षा अधिकारी चम्पावत श्री महेश राम ने छात्रों की शैक्षिक उन्नति के लिए प्रशासन के पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। बी0आर0सी0 समन्वयक श्री वर्मा ने सर्वशिक्षा अभियान के अर्न्तगत शैक्षिक परिवेश में सुधार के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी उपलब्ध कराई। इस अवसर पर संस्था के मुख्य कार्यकारी डा0 एच0डी0 बिष्ट ने इस क्षेत्र में शिक्षा एवं स्वास्थ्य तथा जन जागरण के लिए हिमवत्स द्वारा जन समूह को विगत 5 वर्षों द्वारा किये जा रहे प्रयासों की जानकारी दी इसी अवसर पर समिति द्वारा सभी अंगीकृत विद्यालयों

के छात्र/छात्राओं को दवाइयां भी वितरित की गई।

पैन्ट, सर्ट, स्वेटर, जूता, मोजा, टाई, बैल्ट प्रदान किये गये। छात्राओं के लिए-सलवार/स्कर्ट टाप सर्ट स्वेटर, टाई जूता मोजा वितरित किये गये दवाइयों में सभी विद्यार्थियों को मल्टी विटामिन, डीवार्मिग तथा लिव-52 वितरित किया गया।

1.4 शैक्षिक किट वितरण कार्यक्रम :-

हिमालय वाटर सर्विस एवं विकास तथा पर्यावरण संरक्षण समिति शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए वचनबद्ध है। इस क्रम में संस्था विभिन्न स्त्रोतों से छात्रों को प्रोत्साहित करती है तथा शिक्षा से जुड़े विभिन्न विशेषज्ञों व संस्थानो का सहयोग प्राप्त करती है। छात्रों एवं अभिभावकों को अभिप्रेरित करने के लिए विविध कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। इसी क्रम में इग्नू के प्रो0 वाइसचांसलर (से0नि0) प्रो0 एम0एम0 पन्त के सौजन्य से वर्ष 2010 में 490 शैक्षिक किट संस्था को प्राप्त हुई। शैक्षिक किट निम्नांकित तीन चरणों में संस्था द्वारा अंगीकृत विद्यालयों में वितरित की गई-

1 राजकीय प्राथमिक विद्यालय सुभाषनगर हल्द्वानी- दिनांक 26.04.2010 को विशेष समारोह में उक्त विद्यालय के प्रत्येक छात्र को शैक्षिक किट प्रदान की गई। छात्रों को किट वितरित करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि मान0 शिक्षामंत्री श्री गोविन्द सिंह बिष्ट ने हिमवत्स द्वारा शैक्षिक स्तरोन्नयन के इस महान् कार्य में हिमवत्स तथा डॉ0 एम0एम0 पन्त के योगदान की सराहना की। समारोह की अध्यक्षता उत्तराखण्ड मु0 विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 विनय कुमार पाठक ने की। विद्यालय के छात्र छात्राओं ने इस अवसर पर विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए समिति के अध्यक्ष डॉ0 के0के0 पाण्डेय निदेशक तार्थंकर विश्वविद्यालय मुरादाबाद, सचिव डॉ0 एच0डी0 बिष्ट, जिला शिक्षा अधिकारी जीवन सिंह ह्यांकी अपर शिक्षा अधिकारी श्री एच0सी0 टम्टा, विद्यालय की प्रधानाध्यापिका कु0 गीता आर्या, अभिभावक, क्षेत्र की जनता एवं शिक्षा अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

2 द्वितीय चरण में चम्पावत के अंगीकृत विद्यालयों के सभी प्रधानाध्यापक/प्रधानाध्यापिकाओं को एक-एक किट नमूने के तौर पर वितरित की गई। इसका अभिप्राय किट में दी गई पठन-पाठन सामग्री की उन्हें जानकारी देना रीओरिएन्टेशन कोर्स के रूप में सामग्री का अध्ययन कराना था ताकि ये छात्रों के स्कूल रेडीनैस प्रोग्राम में उपयोगी इस पाठ्य सामग्री का सदुपयोग छात्रों से करा सकें।

3 तृतीय चरण में अंगीकृत विद्यालयों के समस्त छात्र-छात्राओं को किट सुलभ कराई गई तथा उनके सदुपयोग के निर्देश दिए गए। किट में पढ़ने-लिखने की दक्षता, अभ्यास कार्य, सुलेख आदि समक्षित्रों में अभ्यास योग्य सामग्री समाहित है। सामग्री का कक्षावार विवरण निम्नांकित है-----

कक्षा	सामग्री
1.	माडर्न अंग्रेजी पुस्तक (Capital A,B,C,D) सुलेख (अ,आ.....) डायरी । पेंसिल बॉक्स (पेंसिल-4, रबर-2 , सार्पनर-2)
2	माडर्न अंग्रेजी पुस्तक (Small a,b,c,d CursiveA,B,C,D) डायरी । पेंसिल बॉक्स (पेंसिल-4, रबर-2 , सार्पनर-2)
3 4/5	ड्राइंग बुक, बाल पहाड़ा, डायरी । पेंसिल बॉक्स (पेंसिल-4, रबर-2 , सार्पनर-2) कलर पेंसिल पैकेट ड्राइंग बुक, डायरी। ,ज्योमिट्री वाक्स, डिक्शनेरी, मिनी ऐसे राइटिंग बुक जी.के कलर पेंसिल पैकेट

1.4.1 प्रो०एम०एम०पन्त द्वारा शैक्षिक स्तरोन्नयन के विषय में दिए गए रचनात्मक सुझावः-

दिनांक 27 मई 2010 को हिमवत्स द्वारा चम्पावत में ज्ञान की चुनौतियाँ विषय पर एक चर्चा आयोजित की गई। प्रो0 एम0एम0 पन्त इस आयोजन में मुख्यवार्ताकार के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम में समाज के प्रबुद्ध जन और शिक्षा विद् सम्मिलित रहे। चर्चा का विषय चम्पावत के विद्यार्थियों की शिक्षा की चुनौतियाँ और प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था में सुधार था। प्रो0 एम0एम0 पन्त ने निम्नांकित विषयों पर दिशा निर्देशक विचार प्रस्तुत किए:-

1. सूचना का अधिकार तथा शिक्षा के अधिकार पर चर्चा करते हुए राय व्यक्त की गई कि शासन के मन्तवय के अनुरूप लोगों द्वारा इनका प्रभावी उपयोग किया जा रहा है। प्रारम्भिक चरण में सामुदायिक प्रतिभागिता पर प्रसन्नता व्यक्त की गई और आशा व्यक्त की गई कि शासकीय संसाधनों में अतिरिक्त संसाधन जुटाने में समुदाय की भी प्रतिभागिता रहेगी।

2. देखा गया कि शैक्षिक क्रिया-कलाप में अभिभावकों का सहयोग महत्वपूर्ण है। उनका दायित्व बच्चों को स्कूल भेजने तक ही सीमित वरन् उन्हें विद्यालयीय एवं सामाजिक क्रिया कलापों के लाभ के प्रति उन्हें अभिप्रेरित और प्रोत्साहित भी करना है।

3. सुझाव दिया गया कि अभिभावकों के लिए प्रेरक सामग्री विकसित कर उन्हें सुलभ कराई जानी चाहिए। जिससे निरक्षर अभिभावक भी अपने बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकें। पंचतंत्र का अच्छी कहानियाँ, कविताएं, लोकगीत आदि ये साधन हो सकते हैं।

4. नये युग के अनुरूप नवीन विकसित शिक्षण विज्ञान की आवश्यकता की ओर संकेत किया गया जो छात्र की बहुविध योग्यताओं के अनुरूप विभिन्न क्षेत्रों उसके स्वाध्याय अथवा ग्रुपलर्निंग आदि प्रक्रियाओं में सहायक हो।

5. पठन अक्षमता जन्य दोष DYSLEXIA, DYSCACULIA तथा मूक-वधिर, आदि अनेक प्रकार की विकलांकता की स्थिति में उन्हें चिह्नित करने की आवश्कता है तथा उनके अनुरूप सहायक सामग्री चार्ट पोस्टर तथा अन्य उपकरणों की मदद से सीखने हेतु बच्चों और अभिभावकों को अभिप्रेरित करना अपेक्षित है। उनमें ज्ञान के प्रति ललक, लालसा कौशल एवं उत्साह पैदा करना आवश्यक है।

6. छात्र एवं शिक्षक दोनों में विविध योग्यताएँ विकसित करना जैसे- Learn to learn,Yearn to learn, Learn and work in teams,Mathmetical skills,computer and mobile skills आदि इस कार्य के लिए विज्ञान संसाधन केन्द्र के अतिरिक्त ज्ञान संसाधन (Knowledge Resourse Centre) केन्द्र की भी स्थापना प्रस्तावित की गई।

1.5 विद्यालयों में गेम्स, स्पोर्ट्स और एथलैटिक्स

अ. बैडमिन्टन, स्क्वैस, टेबिल टेनिस, लॉनटेनिस, बालीबाल

ब. हॉकी, बास्केटबाल, स्वीमिंग, वेटलिफिटंग क्रिकेट, फुटबाल आदि योग का अभ्यास भी कराया जाता है।

विद्यालयों में इनडोर-आउटडोर खेलों की व्यवस्था की गई है। विद्यालय समय में और उसके बाद भी छात्र-छात्राओं से विभिन्न खेलों के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उन्हें प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। निम्नांकित खेलों की सावित्रा विद्यालयों में सुलभ कराई गई है।

अंगीकृत-विद्यालयों के शिक्षणेत्तर कार्यक्रमों में प्रतिभागी छात्र मूल्यांकन 2010-2011 :-

	राजकीय प्रा० विद्यालय				राजकीय पूर्व मा०विद्यालय		
विद्यालय का नाम → कार्यक्रम ↓	कुलेठी	डु०सेठी	ढकना	खकार्की	बडौला	डु०सेठी	खकार्की
30.04.2010 को छात्र सं0	71	40	70	101	40	88	78
खेल प्रतियोगिता में मैडल प्राप्त करने वाले छात्र	8	8	7	.	4	12	35
वाद विवाद मैडल	.	.	.	.	.	.	4
ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता	2	2	1	.	.	3	5
कविता पाठ में मैडल	.	2	1	4	.	3	5
बाल सभा कार्यक्रमों में	25	20	30	50	20	.	77
सार्वजनिक कार्यों में रुचि	20	15	18	80	20	37	77
साफ सुथरी यूनीफार्म	70	41	60	112	31	80	77
प्रतिदिन मंजन करके आना	40	35	55	40	36	75	77
प्रतिदिन स्नान करके आना	30	25	20	35	19	20	50
साफ सुथरे जूते मौजे पहनना	60	35	50	90	34	52	77
सांस्कृतिक कार्यों में भाग	20	18	15	50	17	19	55
स्काउट गाइड छात्र						20	16

1.5.1 विभिन्न क्षेत्रों में छात्र/छात्राओं के बहिर्मुखी विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रिया-कलापों में प्रतिभाग करने का बहुत बड़ा योगदान रहता है। इसी अभिप्राय से विद्यालयों में इन कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने पर विशेष बल दिया जाता रहा है। छात्रों के शारीरिक विकास में खेल-कूद आदि का जैसा योगदान है वैसा ही उनकी अभिव्यक्ति, चिन्तन और तार्किकता को बढ़ाने के लिए साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विशेष महत्व है। ये सभी क्रियाएं छात्रों के ज्ञानात्मक, भावात्मक और कौशल विकास के लिए आवश्यक हैं।

अंगीकृत-विद्यालयों के पाठय सहगामी कार्यक्रमों में राज्य-,क* जनपद-ख*, ब्लॉक-ग* संकुल-घ*, स्कूल-च* स्तर प्रतिभागी छात्र मूल्यांकन 2010-2011

	प्रा०विद्यालय					जूनियर विद्यालय	
	कुलेठी	डुगरा	खर्ककार्की	ढकना	ढ.बडौला	डुगरा	खर्ककार्की
लम्बी कूद	रेखा बिष्ट; क युवराज; च । अन्य ।	पूजा रावत; ग 3	सुरेश ख ।	मनीष ग 3	-------	-------	राकेश ख
50 मी0 दौड	रेखा, बिष्ट क अन्य 2		तरूण ख2				
100 मी0 दौड़			सुरेश ग 2 पूजा ग ।				
200 मी0 दौड़		पूजा ग 3	तरूण ख 2 सुरेश ग 2	संजय ग 3			
400 मी0 दौड़			सुरेश ख । तरूण ख 2				
खो-खो	रेखा बिष्ट क युवराज ख			अंजलि क तनूजा ख राधा ग	नितिन ख तनूजा ग आकाश ग		गोविन्द क अन्य 5
कुर्सी दौड़	पूर्णिमा च । युवराज च ।					अंजू च 2 शकुन्तला च 3	
कबड्डी			दीप्ति टीम ख 2 अन्य 4	अंजलि क तनूजा ग आकाश घ सौरभ घ		अन्य 7	विपिन ख
गोला फेंक							अर्जुन ख
क्रिकेट							राकेश क राहुल ख
अल्पना ऐपण		जया च ।					
चित्रकला	सूरज च । मनीष च 2 ब्बीता च 3	प्रिया च । मनीषा च 2	दीप्ति ग 2 रजनी ख 3				
सुलेख हिन्दी, अंग्रेजी	रेखा बिष्ट च । कविता च 2 नेहा च 3	गायित्री च 2 सचिन च 2 अमन गयित्री च ।	रजनी च । योगेश च 2 लक्ष्मी				
अन्त्याक्षरी		गौरव टीम ख अन्य 6					
सामान्य ज्ञान	रेखा बिष्ट च । ज्योतिनेगी च 2 ज्योतिटम्टा च 3						
ज्ञान विज्ञान	रेखा बिष्ट च ।		रजनी च 3 हरीश च 2	गीता महर च 2		अपर्णा च 3	मनीष च ।
सांस्कृतिक कार्यक्रम लोकगीत						सपना च । टीम अन्य 8	नेहा टीम ख अन्य 6
भाषण						अपर्णा च । कंचन च 2 स्मृति रेखा च 3 अन्य 9	

अन्य 1:- कौशल, भैरव नाथ, निशा, बबीता, अन्य 2:- रोहित, युवराज, कौशल, पूर्णिमा, बबीता अन्य 3:- रोहित बिष्ट, रोहित टम्टा, कविता, बबीता, अन्य 4:- प्रिया, लक्ष्मी, रजनी, रोमी, ममता, पूजा, अन्य 5:- सुमित, कमल, रेशमा, मनीषा, सूरज, राकेश, शिवानी, अन्य 6:-अंजु, दीपिका, ज्योति, मनीषा, ममता, नेहा, हंसा, बलदेव, भुवन पंकज, दीपक, अजम, पंकज, राकेश, मोहित। अन्य 7:- नाम उपलब्ध नहीं है।
अन्य 8:-अनीता जया, किरण, संगीता, अन्य 9:-दीवान

नोट :- । क ख ग घ च क्रमश: राज्य, जिला, ब्लाक, संकुल, व विद्यालय स्तर को दर्शाते हैं।
2 सामने अंकित । 2 3 क्रमश: प्रथम, द्वितीय, तृतीय, पोजीशन दर्शाते हैं।
3 अन्य प्रतिभागियों के नाम क्रमानुसार अन्य।, अन्य 2, अन्य 3, तथा इसी क्रम में एक साथ दर्शाये गये हैं।

उपर्युक्त सारिणी विद्यालयों का एक स्पष्ट प्रतिदर्श है कि किस विद्यालय ने विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रिया-कलापों में कितनी प्रतिभागिता की और कितनी रूचि ली। जिन विद्यालयों ने जितना अधिक प्रतिभाग किया और विभिन्न प्रतियोगिताओं में उनकी अच्छी उपलब्धि रही अथवा राज्य स्तर तक प्रतिभाग किया, उनकी सराहना की जाती है। जिन विद्यालयों ने कम प्रतिभाग किया उनसे अपेक्षा की जाती है कि सभी कार्यक्रमों में अपेक्षित प्रतिभाग करेंगे।

1-6 चम्पावत में सपनों की उड़ान एवं बाल शोध प्रतियोगिता (राजकीय प्राथमिक केन्द्र विद्यालय चम्पावत) 21, 22 दिसम्बर 2010

प्रतियोगिता के लिए सामान्य ज्ञान कंप्यूटर, कविता पाठ, विज्ञान, बाल शोध, हिन्दी सुलेख, अंग्रेजी सुलेख, स्वच्छता चित्रकला, गणित विषय रखे गये। इस प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाले अंगीकृत विद्यालय:- कुलेठी, डुँगरासेठी, ढकना बडोला, ढकना, खर्ककार्की रहे अन्य विद्यालय वयारकूडा, सिमल्टा, मौनपोरबरी, कफलां, कूंगर, बस्तियाभूठ, गोली, कन्यूड़ा को भी प्रतिभागी बनाया गया था। विभागीय अधिकारियों में ए.डी.ई.ओ. (बेसिक) आनन्द भारद्वाज, खण्ड शिक्षा अधिकारी बी.आर.सी समन्वयक श्याम सिंह लडवाल, मुकेश वर्मा, भूपेन्द्र चौहान, अमित वर्मा, रूद्र सिंह बोहरा, बसन्ती अधिकारी, रेखा जोशी मीरा वर्मा रहे। उपरोक्त प्रतियोगिताओं में हमारे अंगीकृत विद्यालय विजयी रहे। प्रथम स्थान में डुँगरासेठी द्वितीय स्थान में कुलेठी, तृतीय स्थान में खर्ककार्की रहे। उच्च प्राथमिक में खर्ककार्की प्रथम, डुँगरासेठी द्वितीय स्थान में रहे।

सपनों की उड़ान एवं बाल शोध प्रतियोगिता में अंगीकृत विद्यालयों का परिणाम निम्न है।

	प्रा०विद्यालय					जूनियर विद्यालय	
	कुलेठी	डुगरा सेठी	खर्ककार्की	ढकना	ढ.बडौला	डुगरा सेठी-2	खर्ककार्की -2
सामान्य ज्ञान	रेखा बिष्ट 1 कौशल पाण्डे 2	गौरव सिंह 2	सुरेश ख ।	मनीष ग 3	------	अपर्णा पनेरू 2	सूरज सेठी 3
कम्प्यूटर	कौशल 1 युवराल 2					चन्द्रशेखर ।	सुमित 2
कविता पाठ	निशा, कविता 1	गीता, तनूजा 2	शोभा,लक्ष्मी3			अंकित,सचिन 2	आरूषी, प्रीती 3
विज्ञान	रेखा1, युवराज 2						
बालशोध	ज्योति,कौशल 2	गौरव, पूजा 1				अर्पणा, नेहा 3	गोविन्द, कविता 1
हिन्दी सुलेख					रवीना 2		
अंग्रेजी सुलेख			तरूण 3		रवीना 2	सुमित 1	आरूषि 2
स्वचछता		गीता1, प्रिती 2					
चित्रकला			शोभा 2			मनीषा 2	सुमन 3
गणित		गीता 2		संजय 3	गीता महर 1	निखिल 1	
खो-खो	युवराज टीम						
कबड्डी	युवराज टीम अन्य* विजयी						

अन्य* कौशल, भैरवनाथ, रोहित, सावन, मनोज, अमित, मोहित, महेन्द्र, प्रदीप, सौरभ, सूरज, रेखा, ज्योति, पूर्णिमा, जानकी, कविता, ज्योति निकिता, बबीता, पूजा, आरती, निशा, नेहा।

1.4 अंगीकृत विद्यालय में छात्र-छात्राओं के जन्मदिवस आयोजन

दिसम्बर 2010 से सभी अंगीकृत विद्यालयों में प्रात:कालीन प्रार्थना के समय बच्चों को जन्मदिवस पर प्रोत्साहित करने के लिए उपहार सामग्री दी जाती है। बच्चों के जन्म दिन का विवरण उदाहणार्थ प्रस्तुत है फरवरी माह की सूची-

दिनांक	कुलेठी	डुँगरासेठी	खर्ककार्की	ढकना	ढ.बडौला	डुगरासेठी २	खर्ककार्की २
1			रजनी-5 दीपा-5			लक्ष्मी-6	
2	कविता		आशुतोष-1				
3	दीपक		गीता-3				
4	प्रेमसिंह		राहुल-5	शोभा-3 अनकिता-4			संगीता-6
5	कमल-3		काजल-3			अनिता-6	
6	सीमा-3 मनोज-1				राधा-5	सौरभ-6	
7	बबीता-5			अंजली			अंकित-7
8			दीपा-1				
9			निकिता-4			जया-6	
10	रेखा-5		सलोनी-1 रोमी-4				
12	कुलदीप-1						
13							सूरज-8
14		अभय-4	ललित-1				अंजू-7
15	नीमा -2	विजय-3 शालीनी-3	संजय-3		प्रियंका-2		
17							दीपशिखा-6
18	सुमन-1						
19			नीशा-2	लक्ष्मी-4		देवेन्द्र-6	
20		बबीता-3	रोहित-2 गौरव-2				
22	मनीषा-3						
23	प्रदीप-5						
24				विनिता-2			
25	करन-4	सगर-3					
28	कौशल-5						

1.7 शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु गाँव का भ्रमण-

जागरूकता अभियान :- इस वर्ष साविद्या के स्वयं सेवकों शिक्षकों, अतिथियों द्वारा अंगीकृत विद्यालयों में जिन गाँवो से विद्यार्थी आते हैं उनमें जाकर विद्यार्थियों, माता-पिताओं, अभिभावकों एवं बुजुर्गो को नयी पीड़ी को पढ़ने के लिए उत्साहित करने का प्रयत्न किया गया। इसी कड़ी में अमेरिका से आए हुये सी0के0 बिष्ट का ताराचौड़ गाँव में फोटो उनके साथ ग्रामवासी, बच्चे, छात्र, परिजन एवं कुलेठी के स्वयं सेवी शिक्षक गाँव के मकान में दिखाये गये हैं। इस प्रकार के प्रयत्नों से ग्रामीणों द्वारा बच्चों को पाठशाला में भेजने में सहायता मिलती है।

1.8 निशुल्क दन्त परीक्षण :

उपर्युक्त समारोह में दर्शक के रूप में उपस्थित डा. लक्षिता जोशी

बी.डी.एस, दन्त चिकित्सक ने इस समिति के कार्यकलापों से प्रोत्सहित होकर विद्यालय के छात्र/छात्राओं के दन्त परीक्षण के लिए निशुल्क सेवाएँ प्रदान करने की इच्छा प्रकट की। समिति ने सहर्ष उनका आग्रह स्वीकार करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य की सहमति के साथ दिनांक 28.04.2010 को विद्यालय में छात्र/छात्राओं का दन्त परीक्षण कराया। डॉ0 लक्षिता जोशी जिन्होने नि:शुल्क दन्त परीक्षण में।

1.9 राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन:- समिति द्वारा अंगीकृत सभी सातों विद्यालयों में 15 अगस्त 2010 को स्वतंत्रता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया, प्रात: काल से ही छात्रों द्वारा प्रभात फेरी के माध्यम से अपने अपने क्षेत्रों में इस दिवस के प्रति जनजागरण का कार्य किया। 8 बजे प्रभात फेरी के समापन के साथ प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाचार्यों ने छात्रों अभिवावकों एवं क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में झंडारोहण किया एवं इस दिवस की महत्ता पर अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रा0 विद्यालय कुलेठी में संस्था के संरक्षक श्री जी0बी0 रस्यारा की उपस्थिति में ग्रामप्रधान श्रीमती आशादेवी द्वारा 6 छात्रों को गणवेश वितरित किया गया। संस्था सदस्य श्री बी0डी0 रस्यारा ने हिमवत्स संस्था के उद्देश्य एवं गतिविधियों पर विचार व्यक्त किये। विज्ञान संसाधन केन्द्र के क्यूरेटर द्वारा पर्यावरण से सम्बन्धित जानकारी दी गयी।

रा0प्रा0वि0 डुँगरासेठी तथा ढकना में छात्र/छात्राओं द्वारा वन्दना, देशभक्ति, कविता भाषण लोकगीत, लोकनृत्य एवं समूहगान आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

राजकीय प्रा0वि0 ढकना बडौला में भाषण लोकगीत लोकनृत्य कविता पाठ के अतिरिक्त सुलेख, कुर्सीदौड़, जलेबीदौड़, प्रतियोगिता आयोजित की गई, तथा अन्त में मिष्ठान वितरिण किया गया। इसी प्रकार रा0प्रा0वि0 खर्ककार्की में विविधा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त 100मी0 दौड़ का आयोजन किया गया तथा छात्र/छात्राओं की पुरस्कृत किया गया। रा0क0मा0 विद्यालय खर्ककार्की एवं डुँगरासेठी में भी स्वतंत्रता दिवस समारोह के उपक्रम में खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन सम्पन्न हुआ।

इस समारोह में विभिन्न विद्यालयों में छात्र/छात्राओं अभिभावकों व शिक्षकों की उपस्थिति का विवरण -

विद्यालय का नाम	छात्र संख्या	उपस्थिति	स्वयंसेवी शिक्षक	राजकीय शिक्षक	अभिवावक
कुलेठी	81	81	08	02	4
डुगरासेठी	41	41	03	01	27
ढकना	70	66	03	01	63
ढकनाबडौला	39	39	02	01	21
खर्ककार्की	112	112	02	01	108
हा0डुगरासेठी	85	78	01	05	67
जू0हा0, खर्ककार्की	78	78	02	04	280

इसी क्रम में 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस, 30 सितम्बर को गोविन्द बल्लभ पन्त जयन्ती, 2 अक्टूबर को गांधी जयन्ती तथा 14 नवम्बर 2010 को बाल दिवस कार्यक्रमों का आयोजन सभी विद्यालयों में किया गया।

1.9.1 5 जून 2010 को विश्व पर्यावरण दिवस के क्रम में : 25 जुलाई 2010 को प्रत्येक विद्यालय में बृहत वृक्षारोपण किया गया, विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में अंगीकृत प्राथमिक व पूर्वमाध्यमिक विद्यालयों के छात्र, अभिभावक व शिक्षकों द्वारा वृक्षा रोपण में प्रतिभाग किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित है।

1.9.2 अंगीकृत प्राथमिक एवं पूर्व० माध्यमिक* विद्यालयों में किये गये वृक्षारोपण कार्य का विवरण

विद्यालय	उपस्थित समुदाय की संख्या					वृक्ष एवं फूल रोपित पौधों की सं०				
प्रा.पा	छात्र सं०	स्वयसेव	रा०शि०	अभिभावक	कुल	अन्य	छायादार	फलदार	फूल पौधे	कुल
कुलेठी	40	8	2	10	60	5	25	10	115	150
डुँगरासेठी	35	3	1		39	.	19	2	45	66
ढकना	35	3	1	4	43	.	15	10	15	40
ढबडौला	16	2	1	5	24	.	20	.	25	45
खर्ककार्की	36	2	1	10	49	.	60	10	30	120
डुगरासेठी*	50	1	4	6	61	.	30	10	20	60
खर्ककार्की*	77	2	4	15	90	.	50	10	60	120

2 ज्ञान एवं विज्ञान केन्द्र

2.1 केन्द्र की स्थापना

शिक्षा केवल लिखने-पढ़ने और विषयों के सतही ज्ञान तक ही सीमित न रहे इसके लिए जरूरी है कि छात्रों के अन्दर मौलिक चिन्तन के प्रति अभिरूचि पैदा की जाय। उनके अन्दर स्वयं करके सीखने और अन्वेषण की इच्छा जगाई जाय। इसी उद्देश्य को लेकर मई 2008 में राजकीय प्रा0 विद्यालय कुलेठी के परिसर मे विज्ञान संसाधन केन्द्र की स्थापना की गई। इसका शुभारंभ आई0आई0टी0 कानपुर के वैज्ञानिक प्रो0 एच0सी0 वर्मा द्वारा सम्पन्न हुआ था। विज्ञान संसाधन केन्द्र में संकल्पना के पीछे विज्ञान शिक्षण को प्रभावी बनाना, छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण जाग्रत करना तथा खोज के प्रति अभिरूचि जगाने का भाव निहित है। विज्ञान संसाधन केन्द्र के भवन का निर्माण तत्कालीन राज्य सभा सदस्य के सतीश चन्द्र शर्मा द्वारा सांसद निधि से अवमुक्त छह लाख रूपये की धनराशि से किया गया। प्रारंभ में आई0आई0टी0 कानपुर के वैज्ञानिकों के सहयोग से 125 से भी अधिक प्रयोगों वाले उपकरण केन्द्र को सुलभ हुए।

2.2 उपलब्धियाँ

डॉ0 एच0डी0 बिष्ट एवं डॉ0 एच0सी0 वर्मा के संयुक्त प्रयास द्वारा केन्द्र की परिधि में आने वाले शिक्षकों को उपकरणों के प्रयोग एवं डिमोनस्ट्रेशन में प्रशिक्षित किया गया। इसके फलस्वरूप चम्पावत एवं समीपस्थ पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के सैकड़ों छात्र विज्ञान के प्रभावी शिक्षण से लाभान्वित हो रहे हैं। 25 विद्यालयों के प्राय: 2500 छात्र इससे लाभान्वित हो रहे हैं। विगत 2 वर्षों में अनेक ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक विज्ञान-संसाधन केन्द्र के भ्रमण पर आ चुके हैं तथा इसकी गतिविधियों पर प्रसन्नता व्यक्त कर चुके हैं। इसका उल्लेख स्मारिका 2010 में विशेष रूप से किया जा चुका है तथापि अद्यावधिक आगन्तुक विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों व शिक्षाविदों का नामोल्लेख पुन: समीचीन होगा। इनमें डॉ रूप सिंह भाकुनी, एम.डी. गुडडयर कम्पनी यू0एस0ए0, डा0 एच0सी0 वर्मा I.I.T कानपुर, डॉ0 पी0बी0 बिष्ट I.I.T चेन्नई, डॉ0 निर्मला शर्मा सोसियल वेलफेयर विभाग यू0के0, श्री सुनील बिष्ट, बोस्टन, यू0एस.ए, श्रीमती मंजू बिष्ट यू0एस0ए0 श्री ए0पी0 श्रीवास्तव उपनिदेशक (से0नि0) केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड मध्य प्रदेश, के नाम प्रमुख हैं।

वर्तमान शिक्षा सत्र में कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 पी0एस0 अरोड़ा, प्रो0 बी0एस0 बिष्ट कुलपति कृषि एवं प्रौद्योगिक वि0वि0 पन्तनगर तथा प्रो0 विनय कुमार पाठक कुलपति उत्तराखण्ड मुक्त वि0वि0 हल्द्वानी एवं उनके विशेषज्ञों का विशेष सानिध्य, सहयोग एवं प्रतिभाग संस्था को प्राप्त हुआ। विवेकानन्द अनुसन्धान शाला अल्मोड़ा के निदेशक एवं एरीज नैनीताल के निदेशक डॉ0 रामसागर ने विज्ञान दिवस के आयोजन के अवसर पर स्वयं एवं अपने विशेषज्ञों का योगदान प्रदान किया। पन्तनगर वि0वि0 के सुंई केन्द्र के विशेषज्ञों ने विश्व पर्यावरण

दिवस के कार्यक्रम समायोजित किये। वर्तमान सत्र में क्षेत्र का भ्रमण करने वाले विशेषज्ञों में विशेष उल्लेखनीय नामों श्री रविराजगोपालन स्टिवर्ड सावित्रा परियोजना सिलिकान वैली यू0एस0ए0 श्री टी0के0 बिष्ट, श्रीमती भगवती बिष्ट चन्द्रकान्त बिष्ट, मिशगिन यू0एस0ए0, श्री भारत जोशी, मे0 जन0के0एन0 भट्ट, श्री अतुल पन्त आदि हैं। संस्था को प्रो0 एम0एम0 पन्त भू0पू0 प्रो0 वाइसचान्सलर इग्नू एवं वर्तमान में संस्थापक एल0एम0पी0 एजयूकेशन ट्रस्ट एवं एस्मार टैक्नौलौजी ने व्यक्तिगत रूप से छात्रों को किट वितरित कर तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करने के साथ ही संस्था को विशिष्ट मार्गदर्शन किया।

2.3 चक्रीय पुस्तकालय-

चक्रीय पुस्तकालय ज्ञान एवं विज्ञान संसाधन केन्द्र का महत्वपूर्ण भाग है। पुस्तकालय में बाल साहित्य, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, भाषा एवं साहित्य, बाल मनोविज्ञान आदि सभी विषयों पर 2500 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों में महापुरूषों एवं वैज्ञानिकों के जीवन चरित भी सम्मिलत हैं। इनसे छात्र एवं अभिभावक लाभान्वित होते हैं। शिक्षकों के उपयोग में आने वाले सन्दर्भ ग्रन्थ एवं हिन्दी/अंग्रेजी के शब्दकोष भी पुस्तकालय में समाहित हैं। पुस्तकें रोटेशन में वितरित की जाती हैं। छात्रों के अतिरिक्त पढ़ने-लिखने में रूचि लेने वाले ग्रामीण भी इससे लाभान्वित होते हैं। विविध सेवाओं में चयन में भी कई पाठक लाभान्वित हुए।

2.3.1 चक्रीय पुस्तकालय का विभिन्न विद्यालयों एवं समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा प्रयोग-निर्गत की गई पुस्तकें सत्र 09-10 एवं 10-11

माह	अंगीकृत विद्यालय		स्थानीय विद्यार्थी		अभिवावक		शिक्षक	
फरवरी	160		25		27		20	
मार्च	150	144	30	21	15	16	14	27
अप्रैल	180		25	18	12	17	15	30
मई	170	150	20	17	10	15	13	32
जून	150		15		16		11	
जुलाय	160	232	28	16	19	15	12	34
अगस्त	175	165	18	65	18	13	10	34
सितम्बर	180	190	16	15	11	11	16	15
अक्टूबर	234	208	20	15	22	10	31	24
नवम्बर	210	225	22	18	20	11	22	12
दिसम्बर	200		14		11		21	

2.3.2 पुस्तकालय में विभिन्न वर्षों में सम्मिलित की गई पुस्तकों की संख्या

वर्ष	पुस्तक	वर्ष	पुस्तक	वर्ष	पुस्तक	वर्ष	पुस्तक	वर्ष	पुस्तक	वर्ष	पुस्तक
2005	200	06	130	07	200	2008	713	2009	1023	2010	229

2.4 विज्ञान संसाधन केन्द्र

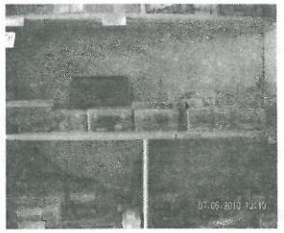

2.4.1 विज्ञान केन्द्र का उपयोग करने वाले विद्यालय एवं विद्यार्थी

माह	विद्यालय	छात्र सं०	प्रयोग सं०
अप्रैल	कु0	34	04
मई	कु0,जू.डु	.....	.....
जून	कु0,जू.डु	163	09
ग्रीष्मकालीन	कु0 जू.डु विद्या रा0क0इ0 का	245	36
जुलाय	जू.डु, खर्क, कुलेठी	120	04
	मल्लिकार्जुन बीर	57	34 पांच दिन
अगस्त	कु0 जू.डु	59	8
	वीरशिवा	52	29
सितम्बर	जू.डु, खर्क, कु0	208	15
अक्टूबर	कु0 जू. खर्क, जू.डु, कु0	123	17
	पब्लिक स्कूल	14	03
नवम्बर	कु0, खर्क, जू.डु,	114	14
	पब्लिक स्कूल	13	03

3 शिक्षक प्रशिक्षण

3 शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम : समिति द्वारा वर्ष 2010 में जून के अन्तिम सप्ताह में 10 दिन की कार्यशाला के बाद शिक्षकों के शिक्षण कार्य का निरीक्षण करने तथा तत् सम्बन्धी आवश्यक सुझाव एवं निर्देश देने के लिए अनुश्रवण कार्य की योजना लागू की गई इसके अन्तर्गत स्थानीय शिक्षा-विदों के सहयोग से प्रतिमाह प्रत्येक शिक्षक के शिक्षण कार्य का निरीक्षण किया जाता है। निरीक्षक द्वारा शिक्षण कार्य को और अधिक प्रभावशाली एवं छात्र/छात्राओं के लिए रूचिकर बनाने के उद्देश्य से आवश्यक सुझाव एवं निर्देश दिये जाते है। प्रभावशाली ढंग से इस कार्य को गति प्रदान करने के लिए निम्न लिखित

शिक्षाविदों एवं विद्वानों का सहयोग (प्रशिक्षण एवं निरीक्षण) समिति को अनवरत रूप से प्राप्त हो रहा है:-

1. डा डी0डी0 जोशी- सेवा निवृत्त विभागाध्यक्ष बी.एड. संकाय
2. डा0 बी0डी0 सुतेडी- सेवा निवृत्त प्रोफेसर
3. श्री0 जी0बी रस्यारा- सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य
4. श्री आई0एस0 बोहरा- सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य
5. डा0 तिलक राज जोशी- सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य
6. श्री बी0डी0 फुलारा - सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य
7. श्री कमलेश रस्यारा- निदेशक रस्यारा टैकनोलोजी

माह के अन्तिम दिन अंगीकृत विद्यालयों के सभी शिक्षकों की एक मीटिंग आहूत की जाती है जिसमें शिक्षक अपने माह भर के शिक्षण कार्य का लेखा-जोखा एवं डायरी प्रस्तुत करते हैं। अनुदेशकों द्वारा शिक्षकों की डायरी का निरीक्षण करने के बाद शिक्षकों के कार्य से संबन्धित अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की जाती है तथा विषय वस्तु को प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक निर्देश प्रस्तुत किए जाते हैं। अगले माह इन्ही बिन्दुओं को ध्यान में रखकर अनुश्रवण कार्य किया जाता है।

उपरोक्त विद्वानों से स्वयंसेवकों को निम्न लाभ प्राप्त हो रहे हैं।

1:- पूर्व में स्वयं सेवकों को अन्यत्र प्रशिक्षण दिया जाता था जिससे केवल स्वयंसेवक लाभान्वित हो रहे थे। किन्तु वर्तमान समय में अनुभवी अनुश्रवण कर्ताओं के विद्यालय में आने से छात्रों तथा स्वयंसेवकों दोनों को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हो रहा है।

2:- अनुभवी अनुश्रवणकर्ताओं द्वारा प्राथमिक स्तर पर शिक्षण की सरल व रोचक विधि से स्वयं सेवकों को अवगत कराया जा रहा है जिससे शिक्षण कार्य अधिक रूचिकर हो रहा है।

3:- अनुश्रवणकर्ताओं द्वारा स्वयंसेवकों की शिक्षण शैली की कमियों का निराकरण किया जाता है जिससे स्वयं सेवक की शिक्षण शैली में सुधार हो रहा है।

4:- अनुश्रवणकर्ताओं द्वारा प्रत्येक विद्यालय में ग्राम शिक्षा समिति व अभिभावकों की गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों की अनुपस्थिति, गृहकार्य, स्वछता के विषय में चर्चा की गई साथ ही अभिभावकों द्वारा उक्त कमियों को दूर करने का आश्वासन दिया गया।

5:- अनुश्रवण कार्य से विगत माहों की अपेक्षा वर्तमान में छात्रों के वाचन, लेखन, पहाड़े, अंक बोध एवं छात्र उपस्थिति में लगातार वृद्धि हो रही है।

6:- उपरोक्त अनुभवी विद्वानों द्वारा हिमवत्स संस्था एवं स्वयंसेवकों को सहयोग प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त करते हुए ही आशा करते हैं कि भविष्य में भी इसी प्रकार हमारा मार्गदर्शन व सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

स्वयंसेवक कार्यकर्ता चम्पावत:-

भगवत सिंह चौधरी, चन्द्रमोहन जोशी, श्रीमती लक्ष्मी बडौला, श्री रमेश सिंह बिष्ट, बबीता चौधरी, आशा चौधरी, दीपक कुमार टम्टा, भुवन चन्द्र पुनेठा, मनोज पाण्डेय, अनिल कुमार, श्रीमती हेमलता, जीवन चन्द्र पनेरू, मुक्तेश पंचौली, मुकेश टम्टा, प्रकाश चन्द्र पुनेठा, अशोक कुमार टम्टा, हीरा बल्लभ कुलेठा, गौरव कुमार बोहरा।

3.1 अनुश्रवण प्रोग्राम 2010

निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता महसूस की गई।

1 प्रत्येक अध्यापक को चाहिये कि अध्यापन में छात्र सहभागिता पर विशेष बल दें।
2. छात्र/छात्राओं के बुनियादी ज्ञान को मजबूत बनाया जाय।
3. हिन्दी इमला लिखने पर विशेष ध्यान दिया जाय।
4. लिखित कार्य की नियमित जॉच की जाय अशुद्ध शब्दों को पॉच-पॉच बार शुद्ध रूप से लिखा जाय।
5. हिन्दी भाषा व अंग्रेजी भाषा का समूचित बोध कराया जाय।
6. छात्र/छात्राओं के प्रति मधुर व सहानभूति पूर्ण व्यवहार किया जाय।
7. विषय वस्तु को रोचक बनाकर विषय वस्तु को रूचिकर बनाया जाय।
8. छात्रों को स्व अनुशासन की ओर प्रेरित किया जाय।

3.2 समीक्षात्मक अनुश्रवण योजना

छात्र/छात्राओं के शारीरिक व मानसिक विकास एवं शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षक एक अति महत्वपूर्ण इकाई है। बच्चों में सीखने की प्रवृत्ति के विकास के लिए सतत् प्रयत्न तथा शारीरिक क्षमता में वृद्धि के लिए नियमित खेल कूद, प्राणायाम एवं यौगिक क्रियाओं की आवश्यकता होती है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संस्था द्वारा अंगीकृत विद्यालयों में कार्य करने वाले स्वयं सेवी नवयुवक/युवतियों के लिए सत्र 2008-09 एवं 2009-10 में 10 दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया था, जिससे ये स्वयंसेवी शिक्षक राजकीय विद्यालयों के परिवर्तनशील पाठ्यक्रमों के कठिन बिन्दुओं को प्रशिक्षित प्रशिक्षकों के माध्यम से ठीक प्रकार से समझ कर कक्षा में प्रवेश कर सकें। इन प्रशिक्षण शिविरों में प्रत्येक कक्षा के निर्धारित पाठयक्रम के अतिरिक्त आदर्श विद्यालय की अवधारणा के अनुरूप कक्षा-कक्ष एवं विद्यालय की साज सज्जा, शिक्षण में सहायक सामग्री के उपयोग एवं उसके महत्व, चार्ट मॉडल आदि का प्रयोग जैसे विषयों की भी जानकारी दी जा रही है। वैयक्तिक विकास के लिए विविध शिक्षणेत्तर कार्यों जैसे संगीत, गायन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सुलेख, कविता पाठ, वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा विविध खेल एवं शारीरिक शिक्षा का महत्व पर बल दिया जाता है।

सत्र 2010-11 में उपर्युक्त कार्यक्रमों को योजनाबद्ध तरीके से कार्य रूप प्रदान करने के लिए एक समीक्षात्मक अनुश्रवण कार्य की योजना का प्रस्ताव पारित किया गया। संस्था के सहयोगी स्थानीय शिक्षा विदों के सम्मुख यह प्रस्ताव रखा गया कि वे प्रतिमाह दो दिन विद्यालय पहुँचकर शिक्षकों के शिक्षण कार्य की समीक्षा करें। इससे शिक्षण का स्तर ऊँचा होगा और उसमें निखार आएगा।

शिक्षकों को अपने शिक्षण कार्य का लेखा जोखा एवं कार्य आने वाली कठिनाइयों का विवेचन भी करना होता है। अत: यह निश्चित किया गया कि प्रत्येक माह के अन्तिम तिथि को सभी स्वयंसेवक शिक्षकों एवं किन्ही दो शिक्षाविदों की

एक बैठक में शिक्षण कार्य की समीक्षा हेतु की जायें जिसमें कार्यो की जाये जिसमें निम्नांकित बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाय-

1 प्रत्येक माह के शिक्षण कार्य का विवरण शिक्षक डायरी में अंकित किया जाय। जिसमें पढ़ाये गये पाठ का नाम, विषय का संदर्भ, यदि भाषा का पाठ है तो क्या सभी छात्र पाठ का पठन कर सकते हैं? पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण अभ्यास में दिये गये प्रश्नों का समाधान, विषय को पढ़ाने में किये गये सहायक सामग्री का उपयोग आदि महत्वपूर्ण तथ्यों को समाहित किया जाना आवश्यक है।

2 अध्यापक द्वारा कराया गया लिखित कार्य एवं त्रुटि सुधार का विवरण।

3 यदि अभ्यास के प्रश्न पाठय पुस्तक में पर्याप्त नही हो तो शिक्षक द्वारा कराये गये स्वरचित प्रश्नों का विवरण।

4 शिक्षक द्वारा खेल कूद एवं अन्य शिक्षणेत्तर कार्यो में सहभागिता का विवरण।

5 विज्ञान केन्द्र के क्यूरेटर द्वारा विभिन्न विद्यालयों में प्रदर्शित किये गये कार्य का विवरण।

6 इस अवधि में किये गये शिक्षणेत्तर कार्यो का विवरण।

समीक्षात्मक अनुश्रवण कार्य : अनुश्रवण कार्यक्रम में कक्षा शिक्षण में शिक्षक छात्र सहभागिता को ध्यान में रखकर छात्र/छात्राओं के बुनियादी ज्ञान को एक सशक्त आधार प्रदान करने पर जोर दिया गया। इसके अन्तर्गत आधार प्रदान करने पर जोर दिया गया। इसके अन्तर्गत छात्रों को हिन्दी श्रुत लेख, लिखित कार्य में त्रुटि सुधार शब्दों का शुद्ध उच्चारण, अशुद्ध शब्दों को कम से कम पांच बार लिखना, हिन्दी तथा अंग्रेजी वर्णमाला के अभ्यास पर जोर दिया गया। विषय वस्तु को रोचक बनाकर पढ़ाना, छात्र/छात्राओं के प्रति मधुर एवं सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करते हुए उनको स्व. अनुशासन के प्रति प्रेरित करने का प्रयत्न करने की आवश्यकता महसूस की गई। इसके लिए शिक्षकों को आवश्यक निर्देश दिये गये। समीक्षात्मक अनुश्रवण बैठक में सभी स्वयंसेवक शिक्षक उपस्थित रहे शिक्षक दैनन्दिनी का निरीक्षण कर प्रत्येक शिक्षक को आवश्यकतानुसार निर्देश दिये गये। लिखित कार्य के त्रुटिसुधार का कार्य नियमित पाया गया। हिन्दी के शब्द जैसे मे-में दोनो-दोनों, है-हैं आदि शब्दों को बोलने में निकलने वाली ध्वनि को स्पष्ट करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। 10 सितम्बर तक कक्षा 3 में 10 तक के पहाड़े एवं कक्षा 4 तथा 5 में बीस तक के पहाड़े सभी छात्रों को याद कराने का लक्ष्य रखा गया। पठन पाठन में छात्र-शिक्षक सहभागिता पर संतोष व्यक्त किया गया तथा अग्रिम शिक्षण कार्य करने के निर्देश दिये गये।

3.3 अनुश्रवण अधिकारियों की बैठक: शिक्षण की गुणवत्ता के विकास को ध्यान में रखते हुए अनुश्रवण अधिकारियों की समीक्षात्मक बैठकों का प्रावधान किया गया है। नवम्बर 2010 को एक समीक्षात्मक बैठक का आयोजन किया गया। डॉ0 डी0डी0 जोशी की अध्यक्षता में उक्त बैठक सम्पन्न हुई।

प्राय: सभी विशेषज्ञों ने बैठक में प्रतिभाग किया। परम्पराओं से हटकर नूतन नवाचारी शिक्षण पद्धतियों से शिक्षकों को अवगत कराने के लिए डाइट के विशेषज्ञों के सहयोग की कामना सावित्रा समिति के सचिव द्वारा निरन्तर की जाती रही है। इस अभिप्राय से जिला प्रशिक्षण संस्थान लोहाघाट के विशेषज्ञ डॉ0 एम0पी0 जोशी को इस बैठक में आमंत्रित किया गया। डॉ0 जोशी ने शिक्षण की नवीन गतिविधियों के अन्तर्गत निम्नांकित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला तथा तदनुरूप कार्य करने का सुझाव दिया-

1. अनुश्रवण के दिन माह में कम से कम एक बार ग्रामीण शिक्षा समिति की बैठक की जाए। अनुश्रवण अधिकारी ग्रामीण शिक्षा समिति के साथ विचार विमर्श कर उनकी सहभागिता के साथ विद्यालयों में शैक्षिक उन्नयन हेतु गतिविधियों की जानकारी दें।

2. डा0 एम0पी0 जोशी (डायट) ने नवीन गतिविधियों की जानकारी उपलब्ध कराते हुए अनुश्रवण हेतु एक फार्मेट उपलब्ध कराया, जिस पर अगली मीटिंग में संस्था विचार विमर्श कर अगली कार्यवाही सुनिश्चित करेगी।

समस्त उपस्थित सदस्यों ने अपने महत्वपूर्ण सुझाव भी उक्तवत दिए। तद्नुसार कार्य करने की सहमति व्यक्त की गई।

4. रोजगार परक प्रशिक्षण

रोजगार परक प्रशिक्षण वर्तमान शिक्षा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण मांग है। बिना रोजगारपरक शिक्षा अथवा कार्यानुभव के शिक्षा पूरी नहीं होती। स्कूल कालेज से निकलकर रोजगार पाना और अपने पैरों पर खड़ा होना हर किसी के लिए जरूरी है। इसी उद्देश्य को लेकर स्कूल पाठ्यक्रम में कार्यानुभव अथवा कौशल विकास को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा 2005 में भी कार्यानुभव पर विशेष चर्चा की गई है। शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन में तो बहुत पहले कहा गया था कि हर छात्र को स्कूल या कालेज से निकलते ही डिग्री या डिप्लोमा के साथ रोजगार सुलभ करा दिया जाना चाहिए। स्वरोजगार की दृष्टि से भी छात्रों को कौशल विकसित करने का प्रशिक्षण देना जरूरी है। जिससे छात्र-छात्रा के अन्दर प्रारम्भ से स्वावलम्बन व श्रम के प्रति रूचि पैदा हो सके इसी क्रम में साविद्या द्वारा रोजगारपरक प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है तथा उसके लिए संसाधन सुलभ कराए जाते हैं।

उक्त क्रम में संस्था द्वारा गरीब एवं मेघावी छात्र-छात्राओं के लिए गतवर्ष की तरह शिवगोपाल सरस्वती शिशु मन्दिर नई बस्ती हल्द्वानी में वर्ष 2010 में भी ड्रेस डिजाइनिंग से सम्बन्धित सिलाई प्रशिक्षण तथा पृथक से कंप्यूटर प्रशिक्षण आयोजित किये गये। सिलाई प्रशिक्षण मई 2010 में आयोजित हुआ। इसमें 20 प्रतिभागी संमिलित हुए तथा कंप्यूटर नवम्बर 2010 में आयोजित हुआ। इसमें 15 परिक्षार्थी लाभान्वित हुए।

5. सिद्ध जागरण सेवा समिति

5.1 सिद्ध जागरण सेवा :- शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग, स्त्री-पुरूष व युवाओं में चेतना जगाना भी है। चेतना, सामाजिक सरोकारों के प्रति, अपने अधिकार व दायित्व के प्रति तथा और भी कई क्षेत्रों में जिसमें शिक्षा एवं स्वास्थ्य भी आते हैं, से सम्बन्धित है इस अभिप्राय से सिद्ध जागरण सेवा समिति की स्थापना की गई। इसके तीन प्रभाग हैं-

5.2 बाल प्रभाग :- जिसमें 6 से 16 वयवर्ग के बच्चे आते हैं। इस वयवर्ग के अन्तर्गत पठन-पाठन के प्रति चेतना जगाना, विद्यालयों में नामांकन टीकाकरण, सफाई-स्वछता, महिला स्वास्थ्य, वाहन चालन के प्रति सावधानी, धूम्रपान निषेध, स्वच्छ मनोरंजन, खेलकूद आदि क्रियाएं आती हैं।

5.3 युवा प्रभाग :- सामाजिक व शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता सामाजिक व पारिवारिक समस्याओं का निदान व समाधान, क्षेत्रीय विकास में योगदान सरकारी विकास कार्यों के क्रियान्वयन की समीक्षा व सुझाव, हिमवत्स द्वारा प्रायोजित शैक्षिक विकास कार्यक्रमों में सहभागिता, छात्रवृत्तियों के लिए योग्य छात्रों का चयन आदि क्रियाकलाप इस प्रभाग के कार्यक्षेत्र में आते हैं।

5.4 वयस्क नागरिक प्रभाग :- विविध क्षेत्रों में जीवन का व्यापक अनुभव रखने वाले वयोवृद्ध स्त्री-पुरूष इसके अन्तर्गत आते है। अपने अनुभवों से युवापीढ़ी को मार्गदर्शन करना, प्रेरणा दायक व्यवहार से सामाजिक रहन सहन को मधुर बनाना, सामाजिक सौहार्द पैदा करना, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार पर नजर रखना उसके प्रति आम लोंगो को सचेत करना इस प्रभाग के दायित्व में आते है।

5.6 किसान मेला (5 जून 2010)

समिति का लक्ष्य है- शिक्षा की गुणवत्ता, स्वास्थ्य की सुरक्षा एवं पर्यावरण की शुद्धता। इन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु समिति वर्ष भर विभिन्न प्रकार के समारोह एवं कार्यक्रम आयोजित करती है। क्षेत्रीय जनता ग्रामीण किसानों एवं महिलाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता, पर्यावरण के प्रति लगाव, स्वास्थ्य के प्रति सचेत करना एवं किसानों को खेती के प्रति नये-नये प्रयोगों से अवगत कराने के, उद्देश्य से हिमालय वाटर सर्विस विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति निरन्तर सचेष्ट रहती है। इसी अभिप्राय से कृषि विज्ञान केन्द्र लोहाघाट ''कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय पन्तनगर के सहयोग से, 5 जून 2010 विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक विशाल कृषि मेले'' का आयोजन किया गया। इस मेले में विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान अल्मोड़ा के अतिरिक्त उत्तराखण्ड सरकार के कृषि, उद्यान, पशुपालन, मत्स्य, स्वास्थ्य तथा वन एवं पर्यावरण विभागों ने अपना सहयोग किया।

क्षेत्रीय जनता एवं ग्रामीण किसानों के अतिरिक्त ,बुद्धिजीवियों ने किसान मेले में भाग लिया। अंगीकृत विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने तख्तियों और बैनरों में पर्यावरण सम्बन्धी नारों के साथ मेले में प्रतिभागिता की। विभिन्न स्टालों में उपस्थित विभागीय कर्मचारियों ने किसानों एवं छात्रों को मृदा बीज, खाद कृषि सुरक्षा सम्बन्धित जानकारी के साथ दुग्ध उत्पादन, पौष्टिक चारा आदि की जानकारी दी।

इस अवसर पर एक किसान गोष्ठी भी आयोजित की गई। वक्ताओं ने क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर एवं गांव, क्षेत्र प्रदेश तथा सम्पूर्ण विश्व को स्वच्छ रखने की प्रेरणा दी। मुख्य अतिथि डा0 बी0एस0 बिष्ट ज्वांइट डाइरेक्टर उच्च शिक्षा उत्तराखण्ड ने जोर देकर कहा की यदि पर्यावरण संरक्षण के विषय में अभी से नहीं सोचा गया तो आने वाले पचास वर्षो में यह समस्या बहुत विकट रूप ले सकती है। जिस पर नियंत्रण करना बहुत कठिन हो जायेगा।

कृषक वैज्ञानिक चर्चा-वार्ता में डा0 अरूण गुप्त, डा0 एम0पी0 गुप्ता डा0 अभिषेक बहुगुणा डा0 यशवन्त रावत, डा0 जितेन्द्र वरौला ने अपने विचार व्यक्त किए तथा श्रोताओं की शंकाओं का समाधान किया। गोष्ठी का संचालन सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य श्री बी0डी0 फुलारा ने किया। विज्ञान केन्द्र प्रा0 वि0 कुलेठी की ओर से एक विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। विज्ञान के विविध नियमों का रोचक प्रदर्शन सराहनीय रहा। श्री अमरनाथ वर्मा की अध्यक्षता में गणित गोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री एस मर्तोलिया के अतिरिक्त संस्था के सचिव डा0 एच0डी0 बिष्ट, डा0 जी0बी0 बिष्ट, डा0 टी0आर0 जोशी, श्री जी0बी0 रस्यारा, डा0 डी0डी0 जोशी डा0 बी0डी0 सुतेडी, डा0 एम0पी0 जोशी, डा0 जी0सी0 पाण्डे, डा0 एम0 तिवारी, श्री इन्द्रसिंह बोरा तथा डा0 वी0एस0 बिष्ट ने भाग लिया।

5.7 राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन हर वर्ष '28 फरवरी' को सम्पूर्ण भारत में किया जाता है। हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति वर्ष 2008 से प्रतिवर्ष जनपद चम्पावत के मुख्यालय में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन कर रही है। 28 फरवरी को होली का पर्व होने के कारण विज्ञान दिवस का आयोजन 5-6 मार्च को सम्पन्न किया गया।

5 मार्च 2010 को प्रातः 10 बजे चम्पावत के गौरल चौड़ में स्थित वन पंचायत के सभागार में जिला पंचायत अध्यक्ष माननीय प्रेमा पाण्डे ने दीप प्रज्जवलित कर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2010 के दो दिवसीय समारोह का उद्घाटन किया। समारोह की अध्यक्षता जनपद चम्पावत के जिलाधिकारी के प्रतिनिधि ए.डी.एम., श्री त्रिलोक सिंह मर्तोलिया ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में मेजर जनरल के0एन0 भटट् एवं डा0 रूप सिंह भाकुनी उपस्थित थे।

राजकीय प्रा.वि. कुलेठी की छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीत की प्रस्तुति के उपरान्त समिति के सचिव डा0एच0डी0 बिष्ट ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए मंच पर उपस्थित सभी अतिथियों का परिचय कराया, तथा समिति की ओर से शाल भेंटकर उनको सम्मानित किया। इसी क्रम में चम्पावत में कार्यरत समिति के कुछ चयनित स्वयंसेवकों को उनके विशिष्ट कार्यों के लिए प्रतीक चिह्न भेंट किये। श्री जी.बी. रस्यारा एवं श्री दीवान सिंह ने अतिथियों को बैच लगाकर अलंकृत किया। तत्पश्चात श्री बी0डी0 फुलारा ने विज्ञान दिवस की महत्ता एवं उसके आयोजन के निहितार्थ को बताते हुए उपस्थित जनसमुदाय एवं छात्र समुदाय को वैज्ञानिक सोच के विकास के लिए कार्य करने का सुझाव दिया। समिति के सदस्य श्री आर0डी0 जोशी ने समिति द्वारा सत्र 2009-2010 में किये गये कार्य कलापों एवं उपलब्धियों की आख्या प्रस्तुत की। डा0 बी0डी0 सुतेडी ने विज्ञान दिवस पर प्रस्तावित विचार गोष्ठी 'जैव विविधता की वैश्विक चुनौती' पर अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चम्पावत की दो छात्राओं कु0 मीना भट्ट एवं कु0 बबीता भट्ट को डा0 गिरिबाला पन्त प्रोत्साहन छात्रवृत्ति प्रदान की।

समारोह के कार्यक्रमों के बीच-बीच में रा.प्रा. विद्यालय कुलेठी, डुंगरासेठी, ढकना, ढकना बडौला, खर्ककार्की तथा रा.पू.मा.वि. डूंगरासेठी एवं खर्ककार्की के नन्हे-मुन्ने छात्र छात्राओं द्वारा मनोहारी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर दर्शको का मन मोहते हुए दर्शकों की प्रशंसा बटोरी।

समारोह के अंत में डा0 टी0के0 बिष्ट ने मुख्य अतिथि सहित सभी अतिथियों, आगुन्तको, छात्र-छात्राओं एवं समारोह के आयोजकों को उनके सफल प्रयास के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह में स्थानीय जनता, व छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त कुमाऊँ विश्वविद्यालय अल्मोड़ा परिसर, पन्तनगर विश्वविद्यालय तथा आर्य भट्ट शोध संस्थान के वैज्ञानिक उपस्थित थे।

विज्ञान दिवस समारोह के अवसर पर उपस्थित जन समूह छात्र/छात्राओं एवं अतिथियों के लिए भोजन की व्यवस्था श्री सतीश पाण्डे ठेकेदार पी.डबल्यू.डी. लोहाघाट चम्पावत द्वारा की जा रही है इस वर्ष भी भोजन की यह व्यवस्था श्री पाण्डे जी द्वारा ही की गई। यह संस्था श्री पांडे जी के इस सहयोग के लिए धन्यवाद व्यक्त करती है।

भोजनावकाश के बाद दूसरे सत्र में शैक्षणिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। चम्पावत के समीपवर्ती क्षेत्रों के अनेक विद्यालयों से इस समारोह में उपस्थित छात्रों के मध्य समिति द्वारा स्थापित विज्ञान केन्द्र में उपलब्ध वैज्ञानिक प्रयोगों का प्रदर्शन अत्यन्त रूचिकर ढंग से किया गया। इनमें बल, ऊर्जा, गुरूत्व केन्द्र, तरंग, विद्युत, चुम्बक आदि से सम्बधित प्रयोग मुख्य थे। विद्यार्थियों ने स्वयं इन वैज्ञानिक प्रदर्शनों में भाग लिया। गौरव बोरा द्वारा विज्ञान-प्रयोगों का प्रदर्शन किया गया। श्री0 टी0के0 बिष्ट ने मैडल वितरित किये।

एरीज नैनीताल के तत्वाधान में वहां के वैज्ञानिक डा0 वी0वी0 सनवाल, डा0 बृजेश कुमार एवं श्री तिवारी ने गोरल चौड़ मैदान में एक टेलीस्कोप स्थापित कर छात्र/छात्राओं एवं उपस्थित जन समुदाय को सूर्य की सतह में स्थित अनेक धब्बों को प्रदर्शित किया यह रोमांचकारी क्षण स्कूली छात्रों के लिए अद्भूत था।

इतना ही नहीं रात 7 बजे से एक अन्य टेलीस्कोप से स्थानीय तहसील के मैदान से जो काफी ऊँचाई में स्थित है, वैज्ञानिकों ने तारों के गुच्छे, मंगल ग्रह, बृहस्पति तथा तारा समूह प्रदर्शित किया।

दिनांक 6 मार्च को प्रातःकालीन सत्र का शुभारम्भ प्रातः 10 बजे माननीय मेजर जनरल (से.नि.) श्री के.एन. भट्ट की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डा0 एच0डी0 बिष्ट ने विभिन्न विश्वविद्यालयों, उच्च शैक्षिक संस्थानों, सरकारी विभागों के प्रतिनिधियों, उपस्थित जनसमूह एवं छात्रों का स्वागत करते हुए प्रस्तावित संगोष्ठी, जैव विविधता की वैश्विक चुनौती पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए सर्वप्रथम पंतनगर विश्वविद्यालय के पर्यावरण विभाग के प्रोफेसर

डा0 उमा मैलकानियां को आमंत्रित किया। डा0 मैलकानियां ने पर्यावरण शब्द की व्याख्या करते हुए समाज की स्वास्थ्य रक्षा के लिए शुद्ध एवं प्रदूषण रहित पर्यावरण के महत्व की व्याख्या की। छात्र-छात्राओं का ध्यान उनके घर, विद्यालय, गांव अथवा पानी के स्थान के आस-पास बिखरे हुए कूड़ा-करकट, पालिथिन आदि से होने वाले प्रदूषण की ओर आकर्षित किया तथा बताया कि किस प्रकार वे अपने पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखने के लिए इन प्रदूषित वस्तुओं से छुटकारा पा सकते है। 1972 से 5 जून को प्रति वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। डा0 मैलकानियां ने आशा व्यक्त की कि सभी छात्र इस दिन अपने-अपने गांव, घर अथवा विद्यालय तथा आस-पास के स्थानों को प्रदूषण रहित रखने की प्रतिज्ञा करेंगे तथा इस दिशा में अपना योगदान करेंगे। दिन-प्रतिदिन उभरती हुई जैव विविधता के महत्व के संदर्भ में अपने विचार प्रकट करते हुए कुमाऊँ विश्वविद्यालय अल्मोड़ा परिसर के प्रोफेसर डा0 पी0सी0 पाण्डे ने श्रोताओं का ध्यान चम्पावत क्षेत्र में बहुतायत में उपलब्ध जंगली वनस्पतियों की ओर आकर्षित करते हुए उनके संवर्धन पर बल दिया।

मेहल के वृक्ष में नाशपाती की कलम चढ़ाकर फलों की गुणवत्ता में सुधार के बारे में बताया। कैंसर रोधी गुणों का परिचय कराने के लिए उपयोगी वनस्पतियों जैसे किलमोडा, तिमूर, बुरांस आदि विभिन्न प्रकार के जंगली औषधीय वनस्पतियों की जानकारी दी। उन्होंने सुझाव दिया कि अश्वगंधा, गुर्ज, शतावरी आदि वनस्पतियों को विद्यालयों में रोपित कर छात्रों को उनके महत्व के बारे में शिक्षित किया जा सकता है।

इसी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आर.सी. गुप्ता ने जिंगोगाइलोबा रोग में बुढ़ापा रोकने तथा एलजाइमर रोग में स्मृति वर्धन के लिए उपयोगी पौधों की कटिंग विधि से सवंर्धन की जानकारी दी। डॉ0 गुप्ता ने विशाक्त एवं खाने योग्य जंगली मसरूम के अन्तर की जानकारी श्रोताओं को दी। उन्होंने इच्छा प्रकट की कि इस दिशा में अधिक जानकारी की जिज्ञासा रखने वाले व्यक्तियों को अल्मोड़ा परिसर का वाटनी विभाग नि:शुल्क परामर्श एवं उपयोगी पौधों की कटिंग उपलब्ध करा सकता है।

एरीज नैनीताल के प्रतिनिधि डा. वी.वी. सनवाल एवं उनकी टीम द्वारा दोनों दिन प्रात: सौर मंडल की विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करने के बाद इस सत्र में टैलिस्कोप की संरचना, कार्य विधि एवं तीव्रता के विषय में जानकारी दी। भारत में विभिन्न वेधशालाओं में उपलब्ध शक्तिशाली टैलीस्कोपों के विषय में जानकारी देते हुए डॉ. सनवाल ने इस क्षेत्र में हो रहे प्रयासों के बारे में बताया।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान हल्द्वानी की ओर से सहायक निदेशक श्री सुभाष काण्डपाल ने इस अवसर पर एक औद्योगिक अभिप्रेरणा अभियान का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के विभिन्न रोजगार उन्मुख, कार्यक्रमों, कौशल-विकास, प्रबन्धन विकास, उद्यमिता विकास, पी.एम.ई.जी.पी तथा क्लस्टर विकास, वित्त व्यवस्था आदि की जानकारियां प्रस्तुत की। कार्यक्रम में बैंक अधिकारियों द्वारा उद्यमियों की वित्त सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण किया गया। इस आम प्रेरणा शिविर में बड़ी संख्या में क्षेत्र के शिक्षित बेरोजगार नवयुवक/युवतियों ने भाग लिया।

5.8 शासन-प्रशासन एवं स्थानीय प्रबुद्ध नागरिकों की शुभकामनाएँ

समिति द्वारा आयोजित विविध गोष्ठी व स्मारिका 2010 के विमोचन के अवसर पर निम्नलिखित जनप्रतिनिधियों व विद्वानों ने शुभकामना संदेश प्रेषित किए उनका सारांश निम्नांकित है-

1. महामहिम राज्यपाल ने जैविक विविधता की वैश्विक चुनौतियाँ विषय पर गोष्ठी आयोजित करने पर प्रसन्नता व्यक्त की और स्मारिका के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ देते हुए आशा व्यक्त की कि संस्था छात्र-छात्राओं में निहित रचनात्मक व संवेदनशील क्षमताओं को उभारकर उनको सकारात्मक स्वरूप देने में सहायक होगी। (चित्र में महामहिम राज्यपाल को सचिव स्मारिका प्रदान करते हुए।)

2. माननीय मुख्यमंत्री डा0 निशंक ने कहा यह हर्ष का विषय है 'संस्था द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर एक साविद्या स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। आपकी संस्था शिशुकल्याण के क्षेत्र में किये जा रहे उल्लेखनीय कार्यों के लिये बधाई के पात्र है। मेरी ओर से साविद्या स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु ढेर सारी शुभकामनाए'।

3. माननीय पेयजलमंत्री व संसदीय कार्य मंत्री श्री प्रकाश पन्त ने 'छात्र/छात्राएँ देश का भविष्य है, जिस कारण उनके स्वास्थ्य एवं शिक्षा की उचित व्यवस्था कर उन्हें सबल बनाना नितांत आवश्यक है। एक बेहतर समाज के निर्माण हेतु बच्चों को सही दिशा प्रदान करने एवं उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सचेत करने से निश्चित ही दूरगामी परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।' समिति द्वारा शिक्षा व स्वास्थ्य क्षेत्र में सहयोग करने हेतु सराहना की है।

4. डॉ. एम.एम. पन्त ने अपने संदेश में समिति के कार्यों की सराहना करते हुए कहा "Samiti which is doing yeomen service to the people through promoting the care and development of the children. To foster intreset in science it is celebrating the national Science day, 2010.The theme Challenges of Bio-Diversity Globally" chosen for the Seminar during the United Nations International Year of biodiversity is of critical importance and hence very appropriate and timely" है कि समिति बच्चों के उत्थान के लिए आवश्यकता के अनुरूप सेवा कर सराहनीय कार्य कर रही है।

5. श्री आर.जी. बुधानी निदेशक, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोग शाखा द्वारा अपने संदेश में कहा 'संस्था के प्रयासों से राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर जिन प्रतियोगिताओं, प्रदर्शनियों और गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है उससे विद्यालय के छात्र/छात्राएं शिक्षक, शिक्षाविद् एवं वैज्ञानिक अवश्य लाभान्वित होंगे और हिन्दी के माध्यम से विज्ञान के प्रचार-प्रसार को नई दिशा मिलेगी' संस्था द्वारा चम्पावत के ग्रामीण क्षेत्र एवं हल्द्वानी के पिछड़े वर्ग के छात्र/छात्राओं में विज्ञान को लोकप्रिय एवं व्यवहारिक बनाने के प्रयास की प्रशंसा की है।

प्रो0 वी0पी0एस0 अरोरा कुलपति कुमाऊँ विश्वविद्यालय ने अपने संदेश में कहा "It is indeed, praiseworthy, that the NGO is working on Quality Education and health care" of under-priviledged children studyingin Government Schools of remote arreas. I am confident that the NGO will attain its aim.

श्री विनय कुमार पाठक कुलपति उत्तराखण्ड मुक्त विद्यालय ने समिति द्वारा आयोजित हाने वाली गोष्ठी के सम्बन्ध में कहा 'समकालिकता और उपादेयता सर्वविदित है। यह आज के वैश्विक परिदृश्य में होने वाले आर्थिक एवं समाजिक परिवर्तन से होने वाली चुनौतियों से निपटने में एक सार्थक दिशा को रेखांकित कर सकती है।'

8. श्री अवनेन्द्र सिंह नयाल जिलाधिकारी चम्पावत ने कहा 'मेरे संज्ञान में लाया गया है कि उक्त संस्था जनपद के विभिन्न विद्यालयों में छात्र/छात्राओं के शैक्षिक उन्नयन हेतु कार्य कर रही है' उन्होंने चम्पावत के उज्जवल भविष्य की कामना की है।

9. श्री शैलेश बगौली जिलाधिकारी नैनीताल ने समिति द्वारा मनाये गये विज्ञान दिवस पर अपने उद्देश्य में कहा 'मेरी जानकारी मैं आया है कि यह संस्थान विशेष रूप से चम्पावत जनपद के ग्रामीण क्षेत्र एवं हल्द्वानी के पिछड़े वर्ग के छात्र/छात्राओं के चतुर्मुखी विकास के लिए सतत प्रयत्नशील रहा है' इस अवसर पर संस्थान राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर संस्थान द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिता, ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता, विज्ञानप्रदर्शनी एवं विज्ञान गोष्ठी का आयोजन किया जायेगा, जो छात्रों के लिए उपयोगी रहेगा।'

10. मो0 वसीम काजमी निदेशक बी.एस.एन.एल हल्द्वानी ने अपने संदेश में कहा 'आज का युग विज्ञान का युग है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका प्रभाव विद्यमान है। ऐसी स्थिति में मेरा यह मानना है कि विज्ञान के बेसिक एवं आधारभूत तथ्यों की जानकारी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर से ही छात्रों को प्रदान की जाय तो आगे बढ़कर ये विज्ञान जगत की विस्तृत परिकल्पनाओं को आसानी से समझ सकेंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में सम्प्रति जहाँ पर संसाधनों का अभाव है वहाँ संस्था द्वारा छात्र/छात्राओं के हितार्थ किया जा रहा प्रयास नि:संदेह साधुवाद के योग्य है।'

11. श्री संजय धींगरा सी0ई0ओ0, आम्रपाली इन्सीट्यूट हल्द्वानी ने अपने संदेश में कहा 'बड़े हर्ष की बात है कि आपके और आपके सहयोगियों के पिछले कई वर्षों के निरन्तर प्रयासों के कारण आपकी संस्था हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति, ग्राम-डड़ा चम्पावत लगातार उन्नति के पथ पर अग्रसर है'। आप साधुवाद के पात्र हैं।

12. डॉ0 सुरेश चन्द्र टम्टा अपर निदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, कुमाऊँ मंडल ने अपने संदेश में कहा 'स्वास्थ्य विभाग को संस्था के माध्यम से कुमाऊँ मण्डल के विभिन्न जनपदों के दूरस्थ असेवित क्षेत्रों-चम्पावत, पिथौरागढ़ (धारचूला, डीडीहाट, बेरीनाग एवं गंगोलीहाट), नैनीताल 'पहाड़पानी, औखलकाण्डा, खुनस्यू, मालधनचौड़) में प्रतिवर्ष नेत्र शिविरों का लगातार आयोजन कर अन्धता निवारण में सहयोग की सराहना करता हूँ।

इससे पूर्व नारायण दत्त तिवारी महामहिम राज्यपाल आंध्र प्रदेश एवं भूतपूर्व मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड, श्री भुवनचंन्द्र खण्डूरी भूतपूर्व मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड श्री बची सिंह रावत भूतपूर्व राज्यमंत्री ज्ञान एवं तकनीकी भारत सरकार श्री वंशीधर भगत कबीना मंत्री उत्तराखण्ड श्रीमती वीना महाराना भूतपूर्व राज्यमंत्री उत्तराखण्ड सरकार, जिलाधिकारी नैनीताल श्री राकेश शर्मा, जिलाधिकारी चम्पावत श्री अवनेन्द्र सिंह नयाल, श्री रमेश चन्द्रपाठक एवं डॉ0 प्रताप सिंह गुसाई श्री विनोद कुमार पाठक एवं दयाल सिंह नाथ नेगी समिति के कार्यों की सरहाना करते हुए प्रोत्साहित किया।

5.9 अन्य प्रयत्न

भारत व उत्तराखण्ड के विश्व विद्यालयों के कतिपय कुलपतियों, राष्ट्रीय एवं प्रदेशीय विज्ञान शालाओं के निदेशकों, वैज्ञानिकों एवं प्राध्यापकों, चम्पावत के प्रबुद्ध शिक्षाविदों, नागरिकों, जिला एवं ग्राम पंचायत अध्यक्षों द्वारा पूर्ण सहयोग दिया जाता रहा है। चम्पावत के शिक्षाविद सहयोगियों को 'शिक्षण प्रशिक्षण' के अन्तर्गत वर्णित किया गया है। वर्तमान सत्र से 'गिरिबाला पन्त' प्रोत्साहन राशि के अतिरिक्त अन्य छात्र वृत्तियों का प्रावधान किया गया है।

Asha For Education & Foundation for Excellence का सहयोग उत्तराखण्ड में समिति के विभिन्न कार्यक्रमों में किया जा रहा है। America India Foundation के इक्जीक्यूटिव डाइरेक्टर डा0 इथाम वडके लासन से सान्ताक्लारा मे तथा दिल्ली में डॉ0 रावत से William.J.Clinton fellowship- MAST प्रोग्राम में भाग लेने हेतु प्रयत्न जारी है।

गावों में जाकर अभिभावकों से सम्पर्क कर उन्हें छात्रों को उनकी शिक्षा हेतु विद्यालय भेजने को प्रोत्साहित किया जा रहा है। छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु पूरा सहयोग दिया जा रहा है।

संस्था के सचिव डा0 एच0डी0 बिष्ट वर्ष भर अपना समय साविद्या के प्रचार-प्रसार हेतु व्यतीत करते आ रहे हैं। विगत वर्ष में अपने प्रवास से आते ही डा0 चंद्रशेखर पाठक द्वारा आयोजित 'पहाड़ रजत समारोह' (अक्टूबर 27-28,2009) में प्रतिभाग करते हुए उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों के संज्ञान में हिमवत्स की गतिविधियों को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया

गया। समारोह में उपस्थित विशिष्ठ अतिथियों प्रमुख रूप से पदमभूषण प्रो0 एस0के0 जोशी, बी0डी0 खर्खवाल डी.जी.पी (अ0प्र0) प्रो0 सी0ए0 मथेला, श्री प्रकाश पन्त मंत्री उ0 सरकार, श्री प्रकाश टम्टा, डॉ0 डी0डी0 जोशी, श्री चन्दन डांगी, डॉ0 जे0एस0 मेहता, गिरीश उप्रेती, डॉ0 उमा0 भट्ट अन्य स्थानीय वैज्ञानिक, शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता जिला शिक्षा अधिकारी सहित शासन एवं प्रशासन के प्रमुख व्यक्ति एवं अन्य नागरिकों आदि से वार्तालाप कर संस्था गतिविधियों से अवगत कराया। प्रचार-प्रसार की इसी श्रृंखला में आई0आई0टी कानपुर द्वारा आयोजित स्वर्ण जयन्ती वर्ष भी मददगार रहा। जनवरी 1-4, 2010 को आई0आई0टी0 के 50 वर्षों के सर्वाधिक ख्याति प्राप्त व्यक्तियों का सम्मेलन हुआ उसमें कई प्रख्यात व्यक्तियों से मिलने का शुभअवसर मिला इस प्रबुद्ध वर्ग को संस्था के कार्यकलापों से परिचित कराया गया। यहाँ एम0पी, डी0पी0 राय, कमिशनर श्री धर्मवीर, प्रो0 श्रीमती कया सूर, आदि के साथ प्रोफेसर हरीश वर्मा की शिक्षा सोपान का सानिध्य प्राप्त हुआ।

जनवरी 5, 2010 को हल्द्वानी में विज्ञान संस्कृति दिवस पर प्रतिष्ठित सम्मानित व्यक्तियों को कुमाऊँ वि0वि0 के कुलपति की अध्यक्षता में सम्मानित करते हुए संस्था के कार्यों को सराहा गया व अन्य विद्यालयों को देखने का अवसर भी मिला।

फरवरी 16-17, 2010 को आई0आई0टी0 के प्रथम बैच के पुनर्मिलन समारोह में प्रतिष्ठित व्यक्तियों, मार्च 16-17, 2010 को भौतिक विभाग के सेवा निवृत्त सदस्यों व दिसम्बर 30, 2010 को लेजर टैक्नोलौजी के सेवानिवृत्त सदस्यों के पुनर्मिलन समारोहों में साविद्या स्मारिका को भेंट कर हिमवत्स के कार्य कलापों से अवगत कराया गया।

सान्ताक्लारा में हुये समारोह में भाग लेकर विदेश में रहने वाले आई0आई0टी0 के स्नातकों एवं पूर्व छात्रों में हिमवत्स के कार्यों की जानकारी दी गयी। ए0एफ0ई, एफ0एफ0ई0 एवं अमेरिकी इण्डिया फाउन्डेशन के अधिकारियों से उसके कार्यस्थल में जाकर साविद्या के उद्देश्यों और कार्यों का बखान किया गया।

"Education is the Manifestation of the Perfection already Inherent In Man"
(Swami Vivekanand)

"There Is No Issue more Important more unifying,more Urgent or more universal,than the welfare of the Children"
(Kofi annan)

वर्ष के कुछ साविद्या समाचार

1–4 डॉ0सी0के0बिष्ट क्षेत्रवासियों के साथ,5 कृषि–वैज्ञानिक वार्तालाप(पर्यावरण दिवस),6–7 पर्यावरण दिवस पर छात्र/छात्राएं शिक्षक एवं अभिभावक 8–पर्यावरण दिवस पर सांस्कृतिक कार्यकम प्रस्तुत करते बच्चे,9 किट वितरण समारोह में छात्र/छात्राएँ अभिभावक 10–डॉ0 पी0बी0बिष्ट ग्रामीणों से वार्ताकरते हुए, 11–शैक्षिक किट का अवलोकन करते हुए डॉ0बिष्ट 13–डॉ0अतुल पन्त को सम्मानित करते हुए डा0के0के0पाण्डे,14–उ0मुक्त0वि0वि0के प्रोफेसरों के साथ डॉ0बिष्ट एवं स्वयंसेवक शिक्षक 15–गणवेश वितरण पर छात्र/छात्राएं,16 समिति द्वारा प्रदत्त कम्पयूटर में काम करते छात्र, 17–स्वागत गान प्रस्तुत करती हुई छात्राएं 18 डॉ0एम0एम0पन्त के साथ समिति के सदस्य 19–गणवेश वितरण समारोह अभिभावक 20–पर्यावरण दिवस पर अभिभावक।

(1)

(2)

(3)

(4)

(5)

(6)

(7)

(8)

(9)

(10)

(11)

(12)

(13)

(14)

(15)

(16)

(17)

(18)

(19)

(20)

1राष्ट्रीय विज्ञान दिवस–2010 2.दीप प्रज्ज्वलन 3.मंचासीन अतिथि 4.सचिव द्वारा सम्मान–प्रेमा पाण्डेय 5–9 क्रमशः सर्व0श्री0टी0एस0मर्तोलिया,रूपसिंह भाकुनी,टी0के0बिष्ट,एम0एल0साह,के0एन0भट्ट 10. पत्रिका का विमोचन 11–13. छात्रों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति 14. गिरिबाला पन्त पुरस्कार 15. किट वितरण 16. मु0अतिथि द्वारा पुरस्कृत गणेश पन्त 17. श्री काण्डपाल को सम्मानित करते सचिव 18–20 सम्मानित होते हुए बच्चे।

(21)

(22)

(23)

(24)

(25)

(26)

(27)

(28)

(29)

(30)

(31)

(32)

(33)

(34)

(35)

(36)

(37)

(38)

(39)

(40)

21–22 बच्चों द्वारा प्रयोग–प्रदर्शन 23–27 ऐरीज के वैज्ञानिक डॉ0बृजेश कुमार व डॉ0बी0बी0सनवाल द्वारा तारामंडल का प्रदर्शन 28.एस0एस0आई0आई0 द्वारा आयोजित कार्यशाला 29 समारोह में प्रतिभागी छात्र 30.मा0शिक्षा मंत्री श्री0गो0सि0बिष्ट द्वारा किट वितरण 31.शिक्षा मंत्री को स्मृति चिह्न भेंट करते डॉ0बिष्ट 32–33 उ0मु0वि0वि0में समिति द्वारा आयोजित छात्रवृत्ति कार्यक्रम 34–36 समिति द्वारा आयोजित निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर 37. प्रो0एम0एम0पन्त0द्वारा चम्पावत में किट वितरण 38.रोजगारपरक प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित करते सचिव 39–40 मूल्यांकन कार्य में भारत जोशी व रवि राजगोपालन।

(1)

(2)

(3)

(4)

(5)

(6)

(7)

(8)

(9)

(10)

(11)

(12)

(13)

(14)

(15)

(16)

(17)

(18)

(19)

(20)

1–4 गणवेश वितरण के दृश्य, 4–8 हिमवत्स द्वारा आयोजित कृषि मेले में विभिन्न विभागों के स्टाल 9– कृषि मेले में प्रतिभाग करते स्कूली बच्चे 10 कंप्यूटर पर कार्य करते हुए छात्र/छात्राएँ 11–12 ए0एफ0ई0 प्रतिनिधि श्री रविराजगोपालन विद्यालयों का नीरीक्षण करते हुए 13–श्रीमती षष्टी पाण्डे प्रधानाचार्य प्रा0पा0डुगरासेठी करे सम्मानित करते हुए सचिव 14–16 समिति के कार्यकारिणी की बैठक में,अध्यक्ष,सचिव एवं अन्य सदस्य 17 खेल–कूद में पुरस्कृत रा0प्रा0वि0कुलेठी के छात्र/छात्राएं 18–19 संस्था द्वारा रोजगार परक शिक्षा के लाभार्थी छात्रों को प्रमाण पत्र देते हुए संस्था के सचिव 20 संस्था द्वारा रोजगार परख शिक्षा हेतु प्रदत्त कम्प्यूटर।

सहयोग हेतु प्रयत्न

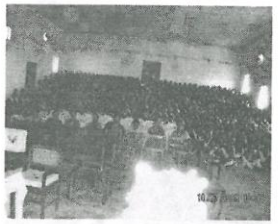

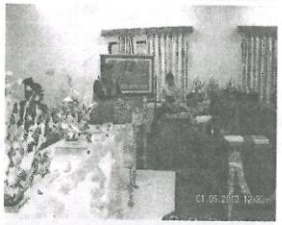

चम्पावत में 1. ढकना प्रधानाचार्य श्रीमती वर्मा व तीन सावित्री शिक्षक 2. पदम् विभूषण एस0के0 जोशी 3. सांस्कृतिक कार्यक्रम व डी0एम0 अवनेन्द्र नयाल 5. प्रकाश पन्त बिना महाराणा 6. जी0जी0आई0सी0 में लैक्चर 7. आई.आई.टी. कानपुर-पी0डी0 राय एम0पी, अभय भूषण, धर्मवीर आदि। हल्द्वानी में 8-9. विज्ञान संस्कृति दिवस, 10-12 राष्ट्रीय विज्ञान दिवस में सावित्री द्वारा सम्मान- डॉ0 सुतेडी, भगवती बिष्ट, सतीश पाण्डेय।

सहयोग हेतु राष्ट्रीय विज्ञान दिवस कार्यक्रम

1. श्रीमती प्रेमा पाण्डेय, 2. मेजर जर्नल के0एन0 भट्ट, 3. स्मारिका विमोचन, 4 आर. डी.जोशी, 5-12 विभिन्न विद्यालयों द्वारा विज्ञान दिवस समारोह में वन पंचायत भवन गौरलचौड़ के सभागार में सांस्कृतिक कार्यक्रम की झांकियाँ।

6 अन्य कार्यक्रम

6.1 जनस्वास्थ्य- साविद्या निर्बल, निर्धन एवं वृद्धजनों को निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए निरन्तर सचेष्ट है। इसके लिए चिकित्सा क्षेत्र के विशेषज्ञ डाक्टरों का सहयोग प्राप्त किया जाता है। राष्ट्रीय अन्धता निवारण कार्यक्रम के अर्न्तगत सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में शिविरों का आयोजन कर चिकित्सकों द्वारा निःशुल्क नेत्र परीक्षण तथा मोतियाबिन्द के आपरेशन किये जाते है। नेत्र विशेषज्ञ डॉ0 जी0बी0 बिष्ट तथा उनकी टीम द्वारा यह कार्य 2006 से प्रतिवर्ष कराया जा रहा है। 2006 तक कुल 951 मोतियाबिन्द के आपरेशन मण्डल के विभिन्न क्षेत्रों में कराए गए वर्ष 2010 के नेत्र परीक्षण एवं आपरेशन का विवरण निम्नांकित हैं-

स्थान	तिथि	ओ०पी०डी०	आपरेशन
बेरीनाग	12 से 14 मई	250	58
बेरीनाग	16 से 18 नवम्बर	345	84
भीमताल	23 से 24 नवम्बर	75	18
गरमपानी	16 से 17 दिसम्बर	56	09
योग		726	169

वर्ष 2006 से अब तक किए गए आपरेशन 951+169 =1120

उक्त महत्वपूर्ण कार्य डॉ0 जी0बी0 बिष्ट तथा उनकी टीम के विशेष सेवाभाव के अर्न्तगत सम्पन्न हुआ। नेत्र सहायक श्री पछाँई, आन्नद, राजेन्द्र और ईश्वरी दत्त पन्त का सहयोग प्रदान हुआ। साविद्या समिति के सदस्य श्री गणेश पन्त का संस्था के प्रतिनिधि के रूप में निरन्तर प्रतिभाग रहा।

6.2 डॉ गिरिबाला पंत प्रोत्साहन राशि :- कुमाऊँ विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुल सचिव श्री आर.सी. पंत द्वारा अपनी पत्नी स्व. डॉ. गिरिबाला की स्मृति में उक्त छात्रवृत्ति प्रदान की जाती हैं। डॉ0 गिरिबाला पन्त छात्रवृत्ति उत्तराखण्ड में अध्ययनरत कक्षा 9 और 10 के प्रतिभाशाली निर्धन छात्रों को प्रदान की जाती है। कक्षा 8 की परीक्षा में सर्वोच्च मैरिट के आधार पर निम्न आर्य वर्ग के छात्र/छात्राओं का चयन छात्रवृत्ति हेतु किया जाता है।

वर्ष 2007 में 16 छात्र, वर्ष 2008 में 21 तथा वर्ष 2009 में 26 छात्र छात्राओं को उक्त छात्रवृत्ति वितरित की गई। वर्ष 2010 में 29 छात्र/छात्राएँ इस छात्रवृत्ति से लाभान्वित हुए। छात्रवृत्ति वितरण समारोह उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी के सभागार में सम्पन्न हुआ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर विनय कुमार पाठक की अध्यक्षता में उक्त छात्रवृत्तियां वितरित की गयी।

वर्ष 2010 के लाभार्थियों का विवरण निम्नवत् है:-

क्र.सं.	छात्र/छात्रा कक्षा 10	रा० विद्यालय	क्र.सं०	छात्र/छात्रा कक्षा 9	राजकीय विद्यालय
1	कु0 सपना शर्मा	धौलाखेड़ा	15	कु0 पूजा बुजवासी	धौलाखेड़ा
2	कु0 नीमा भट्ट	चम्पावत	16	कु0 शुभम मौर्य	नारायण नगर
3	कु0 बबीता भट्ट	चम्पावत	17	कृष्ण चन्द्र पाण्डे	लामाचौड़
4	कु0 संगीता जोशी	हरिपुर जमन सिंह	18	दिव्यराज सिंह नेगी	विधौलाखेड़ा
5	कु0 पूजा पाण्डे	लामाचौड़	19	हिमांशु	हल्दूचौड़
6	कु0 दीपा अलचौनी	फूलचौड़	20	दीपक धरीयाल	मोतीनगर
7	दीपक परगाई	फूलचौड़	21	पंकज कुमार सक्सेना	राजपुरा
8	कु0 रेनू रौतेला	नारायण नगर	22	कु0 उषा जोशी	हल्द्वानी
9	कु0 हेमा	बर्मौरी	23	कु0 इन्द्रा विश्वास	दौलिया
10	कु0 पूजा भट्ट	दौलिया	24	कु0 कोमल साह	बर्मौरी
11	कु0 विमला अटवाल	दौलिया	25	संजय सिंह बिष्ट	चम्पावत
12	कु0 कल्पना रावत	हल्द्वानी	26	कु0 पूजा बोहरा	चम्पावत
13	कु0 गीतिका जोशी	हल्द्वानी	27	संदीप जोशी	कठघरिया
14	कु0 निशा बमेठा	हल्दूचौड़	28	कु0 विनीता तिवारी	फूलचौड़
			29	चेतन तिवारी	सेन्ट पाल हल्द्वानी

श्री पन्त द्वारा उक्त योजना के अन्तर्गत इस संस्था को अब तक 1,05,000 से अधिक धनराशि दान स्वरूप दी जा चुकी है डॉ0 गिरिबाला पन्त छात्रवृत्ति के अतिरिक्त कतिपय अन्य छात्रवृत्तियां भी हिमवत्स के तत्वावधान में प्रदान की जाती है। इनका विवरण इस प्रकार है:-

1 हरिश्चन्द्र पन्त छात्रवृत्ति- यह छात्रवृत्ति मुम्बई में कार्यरत डॉ0 पार्थ पन्त द्वारा अपने दादाजी की स्मृति में वर्ष 2010 से प्रारंभ की गई। नैनीताल एवं चम्पावत जनपदों के कक्षा 9/10 में अध्ययनरत 2-2 प्रतिभाशाली निर्धन छात्र इस छात्रवृत्ति हेतु चयनित किये जाते हैं। प्रोत्साहन राशि रू 1000 प्रति छात्र है। कु0 सोनाली साहू, नेहा पन्त, भावना रौतेला, 2010 के लाभार्थी हैं।

2 मुरलीधर जोशी शास्त्री छात्रवृत्ति- श्रीमती माया त्रिपाठी द्वारा अपने स्व0 पिता श्री मुरलीधर शास्त्री जी की स्मृति में यह छात्रवृत्ति दी जाती है। इसके अन्तर्गत हल्द्वानी एवं चम्पावत में संस्कृत विद्यालयों में अध्ययनरत पूर्वमध्यमा के 4 छात्रों को रु0 1000 प्रतिवर्ष प्रतिछात्र प्रोत्साहन राशि देय होगी।

3* दुर्गा त्रिपाठी छात्रवृत्ति- इसके अन्तर्गत एक छात्र प्रतिवर्ष लाभान्वित होगा। देयराशि रू 1000 ।

4* सावित्री (Saraswati Amba Village Imprest for development of youth Aspiration) छात्रवृत्ति का प्रावधान डॉ0 गोविन्द बिष्ट एवं श्रीमती निर्मला बिष्ट द्वारा अपने पूज्य माता-पिता की स्मृति में किया गया है। इसके अर्न्तगत एक सुपात्र बच्चे को रू0 31000 के अन्तर्गत प्रतिवर्ष की सहायता दी जाती है।

5* बसन्ती पन्त (एवं हरिप्रिया पाण्डेय) छात्रवृत्ति- डा0 के0के0 पाण्डेय द्वारा अपनी स्व0 नानी जी (एवं स्व0 दादी जी) के नाम से दो निर्धन छात्रों को पिछले दो वर्षों से दी जा रहीं है। लाभार्थियों का चयन दान दाता द्वारा स्वयं किया जाता है।

छात्रवृत्तियों के लिए चयन के नियम :-

(1) प्रोत्साहन राशि के लिए कक्षा 9 में राजकीय विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले उन छात्र-छात्राओं का चयन किया जाता है, जिन्होंने कक्षा 8 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र के अंको का 80 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किये हों।

(2) प्रोत्साहन राशि के लिए छात्र-छात्राओं के चयन में ग्रामीण क्षेत्रों के राजकीय/राजकीय मान्यता प्राप्त विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं को प्राथमिकता दी जाती है।

(3) प्रोत्साहन राशि का भुगतान शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में बराबर संख्या में किया जाएगा।

(4) कक्षा 10 में प्रोत्साहन राशि उन्हीं छात्रों को देय होगी जो कक्षा 9 में 80% अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण होते हैं अथवा कक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थी के 80% तक अंक या उससे अधिक अंक प्राप्त करते हैं।

(5) कक्षा 9 के सुपात्र छात्रों के नामों के लिए प्रयास इस प्रकार से किया जाए, जिससे प्रवेश की घोषित अंतिम तिथि तक प्रवेश लेने वाले छात्रों में से सुपात्र छात्रों के नाम प्राप्त हो सकें। आवेदन पत्रों के प्राप्त होने की अंतिम तिथि 30 जुलाई होगी, इसके पश्चात प्राप्त आवेदन पत्रों पर विचार नहीं किया जाएगा।

(6) कक्षा 10 के सुपात्र छात्रों का नाम परीक्षा परिणाम घोषित होने के पश्चात ही प्राप्त किए जा सकते हैं। ऐसे छात्रों के आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तिथि विद्यालय के दीर्घकालीन अवकाश के लिए बंद होने का दिन होगा।

(7) एक विद्यालय से 2 से अधिक छात्रों पर विचार नहीं किया जाएगा।

विशेष:- * तारांकित छात्रवृत्तियों के नियम दानदाताओं के निर्देशानुसार निर्णीत हो रहे हैं।

6.3 फाउण्डेशन फॉर एक्सीलैन्स (F.F.E)

फाउण्डेशन फॉर एक्सीलैन्स निर्धन किन्तु प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को इंजीनियरिंग और मेडिकल के क्षेत्र में उच्च अध्ययन हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करने वाली एक स्वयं सेवी संस्था है। सावित्रा स्मारिका के पिछले अंक में उक्त संस्था का परिचय दिया जा चुका है तथापि यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि यह अमेरिका में पंजीकृत स्वयं सेवी संस्था है जिसकी स्थापना 1994 में एक प्रवासी भारतीय डॉ0 प्रभु गोयल और श्रीमती पूनम ने की। बाद में अमेरिका में बसे अनेक प्रवासी भारतीय इस संस्था से जुड़े और वर्तमान में 300 से भी अधिक प्रवासी भारतीयों का इसमें योगदान है। सम्प्रति कई वे इंजीनियर भी संस्था से जुड़ चुके हैं, जिन्होंने एफ.एफ.ई. की आर्थिक सहायता से अध्ययन कर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उच्च डिग्रियां प्राप्त की।

संस्था का उद्देश्य भारत में निम्न आयवर्ग के मेधावी छात्र-छात्राओं को इंजीनियरिंग और मेडिकल के क्षेत्र में अध्ययन हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करना है ताकि वे निर्बाध रूप से अपना अध्ययन जारी रख सकें तथा अपने-अपने क्षेत्र में विकास प्रक्रिया में अपना रचनात्मक योगदान प्रदान करते हुए अपने परिवार के जीवन स्तर को उठा सके तथा विकास की धारा को गति प्रदान कर सकें।

एफ.एफ.ई. का निर्धन एवं प्रतिभाशाली छात्रों के लिए लोकोत्तर संदेश यही है कि कोई भी सुपात्र एवं प्रतिभाशाली छात्र आर्थिक तंगी के कारण शिक्षा के लाभ से वंचित न रहने पावे क्योंकि राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में युवा पीढ़ी का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। संस्था का उद्देश्य अपने प्रयास को तब तक जारी रखने का है जब तक भारत में प्रत्येक सुपात्र विद्यार्थी को समुचित शिक्षा अर्जित करने का समुचित अवसर सुलभ न हो जाय।

फाउण्डेशन फॉर एक्सीलैन्स इण्डिया ट्रस्ट (F.F.E.I.T) उक्त लक्ष्य के परिप्रेक्ष्य में यह उल्लेख करना आवश्यक है कि जुलाई 2003 में फाउण्डेशन फॉर एक्सीलैन्स इण्डिया ट्रस्ट की स्थापना की गई जो आयकर अधिनियम 1961 के अर्न्तगत पंजीकृत है। उक्त ट्रस्ट को दी जाने वाली धनराशि आयकर अधिनियम 80 जी के अर्न्तगत कर मुक्त होगी। F.F.E.I.T प्रमुख स्वयंसेवी संस्था डिबिलिटी एलाएन्स मुम्बई का भी सदस्य है। ट्रस्ट द्वारा Sponser a student Program चलाया गया है। इसका उद्देश्य दानदाता द्वारा छात्र-छात्रा को निजी स्तर पर अंगीकार करना/गोद लेना है। दानदाता अपनी प्राथमिकता के आधार पर छात्र का चयन कर सकता है। दानदाता भारत के अन्दर किसी भी राज्य/जनपद के किसी भी छात्र/छात्रा को किसी भी विशिष्ट शिक्षा स्तर के लिए सहायता प्रदान करने हेतु स्वतंत्र होगा।

एफ.एफ.ई. की भारतीय सलाहकार सदस्यों की उपसमिति इण्डिया ट्रस्ट की व्यवस्था संचालित करती है। वर्तमान में F.F.E.I.T के भारत स्थित कार्यालय के मुख्य कार्यकारी निदेशक आर0एस0 शास्त्री हैं। पत्राचार का पता निम्नांकित है।

Foundation for Excellence
840,M.H.T. house I Floor
5th Main Indiranagar 1st stage
Bangaluru,560038
Ph.No (080) 25201925 mob. 9886021861

डॉ0 प्रभु गोयल अब तक अपनी अनुदानित धनराशि से उनके पूर्व निर्धारित लक्ष्य 10000 छात्र-छात्राओं को अंगीकार और लाभान्वित करने के सापेक्ष 10885 छात्र छात्राओं को लाभान्वित कर चुके हैं उत्तराखण्ड के 240 सुपात्र छात्र अब तक लाभान्वित हो चुके है। भारत के छात्रों को 6.081 मिलियन डालर की सहायता वितरित की जा चुकी है। सम्प्रति अनेक संस्थागत दानदाता ट्रस्ट से जुड़ चुके हैं। प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं के कल्याणार्थ व्यक्तिगत दानदाताओं से यथाशक्ति

दान की अपेक्षा की जाती है।

छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु पात्रता-

अभिवावक की वार्षिक आय अधिकतम - 125000.00

शैक्षिक स्तर B.E/B.Tech छात्रों हेतु **मेडिकल छात्रों के लिए**

राज्य स्तरीय रैंक = 2500(5000)* = 500(700)*

अखिल भारतीय रैंक = 100000 (5000)*

*छात्र जिन्होंने राजकीय विद्यालयों से परीक्षा उत्तीर्ण की हो।

7- आशा फॉर एजयूकेशन (AFE)

7.1 सावित्रा परियोजना का मूल्यांकन

आशा फॉर एजूकेशन सिलिकान वैली यू0एस0ए0 की यह एक सामान्य प्रक्रिया है कि वह प्रति वर्ष सावित्रा द्वारा अंगीकृत विद्यालयों के कार्य कलापों का मूल्यांकन अपने प्रतिनिधियों द्वारा नियमित रुप से कराती रहती है। इस वर्ष परियोजना के संयोजक श्री रवि राजगोपालन ने अमेरिका से स्वयं चम्पावत पहुँचकर दिनांक 5 तथा 6 जुलाई को इस कार्य को सम्पन्न किया। श्री रविराजगोपालन 4 जुलाई को सम्पर्क क्रान्ति एक्सप्रेस से रात्रि 11. 30 पर हल्द्वानी पहुचे। लोक निर्माण विभाग के निरीक्षण भवन में रात्रि विश्राम के बाद दूसरे दिन भारी वर्षा के बीच प्रात: 8 बजे हिम्वत्स के सचिव डॉ0 एच0डी0 बिष्ट संस्था के सदस्य श्री आर0डी0 जोशी तथा श्री गणेश पन्त के साथ चम्पावत के लिए रवाना हुए। भारी वर्षा, टूटी-फूटी सड़को, ठंडी हवाओं एवं घने कोहरे के बीच चम्पावत की 180 किमी. की यह यात्रा निश्चित रुप से उनके लिए एक नया अनुभव रहा होगा। अपराह्न 3.30 पर हम लोग चम्पावत पहुँचे। एक घंटा विश्राम के बाद 5 बजे स्थानीय राजकीय कन्या इन्टर कालेज में एक बैठक आहूत की गई। सभी अंगीकृत विद्यालयों के प्रधानाध्यापक, स्वयं सेवी शिक्षकों, स्थानीय समाज सेवी शिक्षा विदों की राजकीय कन्या इन्टर कालेज चम्पावत में एक संक्षिप्त बैठक में उनका परिचय प्राप्त कर परियोजना के विभिन्न कार्यक्रमों की प्रगति विद्यालयों में उपलब्ध कक्षा कक्षों की संख्या, पीने के पानी की उपलब्धता, खेल सामग्री, पुस्तकालय, विज्ञान शिक्षण तथा अन्य विषयों के शिक्षण में सहायक सामग्री की सुविधा आदि सूचनाएं प्राप्त की और यह सुनिश्चित किया गया कि आशा द्वारा अंगीकृत विद्यालयों को दी जा रही सहायता का सदुपयोग हो रहा है। इस अवसर पर नवोदय-विद्यालय प्रवेश परीक्षा में चयनित रा0प्रा0वि0 डुँगरा सेठी के दो छात्र, पूजा एवं शमित सहित विद्यालय के प्रधानाध्यापिका श्रीमती षष्ठी पाण्डे एवं स्वयं सेवी शिक्षक अशोक कुमार को सम्मानित किया गया।

अगले दिन श्री राजगोपालन ने रा0प्रा0वि0 डुँगरा सेठी एवं कुलेठी में वृक्षारोपण किया तथा अंगीकृत विद्यालयों सहित कुलेठी स्थित विज्ञान संसाधन केन्द्र में पुस्तकालय तथा विज्ञान केन्द्र का अवलोकन किया। केन्द्र के कार्य संचालन की जानकारी प्राप्त की। सभी विद्यालयों के छात्र छात्राओं एवं उपस्थित अभिवावकों की इस परियोजना पर प्रतिक्रिया जानने का प्रयास किया। विद्यालयों के छात्र/छात्राओं से बातचीत में नन्हें-मुन्ने बच्चों का उत्साह एवं सहयोग देखकर श्री राजगोपालन काफी उत्साहित थे। प्राय: सभी विद्यालयों के प्रत्येक कक्षा में छात्र/छात्रों के साथ उन्होंने काफी समय व्यतीत किया।

श्री रवि राजगोपालन द्वारा विद्यालयों का भ्रमण करने अभिवावकों शिक्षकों प्रधानाध्यापकों एवं स्थानीय शिक्षाविदों से सम्पर्क अभियान से हिम्वत्स के सचिव डॉ0 एच0डी0 बिष्ट काफी उत्साहित थे। इस अवसर पर अपनी प्रतिक्रिया में उन्होंने कहा कि वर्ष 2005 से आशा फार एजूकेशन प्रतिवर्ष अपने प्रतिनिधि भेज कर विद्यालयों का मूल्यांकन करता रहा है किन्तु इस वर्ष इस परियोजना के संयोजक ने व्यक्तिगत रूप से चम्पावत पहुँच कर स्वयं परियोजना के कार्य कलाप व उसकी प्रगति एवं समस्याओं का अध्ययन किया। इस मूल्यांकन कार्य के उपरान्त श्री रविराजगोपालन की प्रतिक्रियाओं से परियोजना की भविष्य की योजना बनाने में सहायता मिलेगी जो छात्र हित में आवश्यक है। दो दिवसीय इस परियोजना के मूल्यांकन में सभी अंगीकृत विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों, अभिभावकों के अतिरिक्त क्षेत्रीय शिक्षाविद उपस्थित थे।

7.2 आशा फार एजुकेशन द्वारा प्रदत्त सावित्रा उपसमिति को प्राप्त विदेशी सहायता (डॉलर) एवं भारतीय मुद्रा रुपए में-

	वर्ष	दानदाता	प्रथम किस्त	द्वितीय किस्त	योग
1.	2005-06 (09-05) (02-06)	सिलीकौन बै. स्टैलफोर्ड	(3188) 138422=96 (800) 35883= 00	(3154) 138176=74 ब्याज 226=39	(6362=00) 276824=09 800=00)/35883=00
2.	2006-07 (07-06) (02-07)	सिलीकौन वैली	(7775) 356278=00 ब्याज	(8760) 357489=60 4361=59	(16535=00) 718109=19
3.	2007-08 (01-08) (05-08)	सिलीकौन वैली सिलीकौन वैली	(22865) 892420=95	---- (21992) 9412332.60 9491.98 18360= 00	(22865=00) 892420=95 (21992=00) 968764=58
4	2008-09 (04-09) (11-09)	सिलीकौन वैली	(20660) 109959=20 ब्याज	(22136) 1023100=920 9943= 00	(42796=00) 2053003=12
5	2009-10	सिलीकौन वैली	(22177) 982859.64		

कुल राशि यू.एस (डॉलर में 2005 से 2010 तक) (1,11,330 = 00) अथवा भारतीय रू0 में 49,45,004=00

19,65,718
69,10,722

8 उपयोगी-प्रतिक्रियाएँ

8.1 डा० अतुल पंत, सह संस्थापक इनेबिलिंग डाइमेनशन टाइम लैस लाइफ स्किल द्वारा डा० एच०डी० बिष्ट को सम्बोधित पत्र

(London U.K To Champawat U.K*)

स्नेही प्रो0 बिष्ट,

मैं व्यक्तिगत रूप से आनन्दित था। बहुत वर्षों के बाद मुझे पर्वतों के दर्शन का अवसर प्राप्त हुआ। इस पर आपसे मिलना अति उत्साह जनक था। यह एक बड़ी उपलिब्ध है कि तीन छात्र नवोदय विद्यालय पाने में सफल रहे आपके प्रयास

सफल हो रहे हैं। मुझे विश्वास है कि इससे अन्य अभ्यर्थियों के आत्म विश्वास में भी वृद्धि होगी। अपने कालेज के दिनों में मैं कुछ स्वयं सेवी कार्यों के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा संचालित एक अन्धता निवारक संस्था में जाया करता था उस समय उस विद्यालय के सभी विद्यार्थियों की आकांक्षा थी कि वे संगीत शिक्षक या भाषा शिक्षक बने अथवा किसी सरकारी कार्यालय में क्लर्क का कार्य करें, क्योंकि उस समय केवल ये ही पथ प्रर्दशक आदर्श उपलब्ध थे। कुछ वर्षों बाद उस विद्यालय के दो छात्र कंप्यूटर बेसिक एवं थोड़े से सोफ्टवेयर पैकेज का अध्ययन कर सार्वजनिक संस्थान 'गेल' में कंप्यूटर सहायक के पद पर कार्यरत हो गये। इस प्रकार सामान्य रूप से पांच-छः हजार रूपये प्रति माह के स्थान पर उन्हें बारह हजार रुपया मूलवेतन मिलने लगा। एकाएक विद्यालय के सभी छात्रों की इच्छा कंप्यूटर शिक्षा प्राप्त करने की होने लगी। सफलता की कहानी तथा पथ प्रदर्शक आदर्श का इस प्रकार का प्रभाव होता है।

चम्पावत में पूर्व माध्यमिक विद्यालय के छात्रों से मैंने पूछा कि उनका प्रिय एवं रूचिकर कार्य क्या है? उत्तर सामान्य रूप से सबका एक ही था कंप्यूटर। कुछ छात्रों ने क्रिकेट बताया। मुझे भी प्रसन्नता हुई कि पथ प्रदर्शन का दीप प्रज्वलित होना प्रारम्भ हो गया है। मेरे विचार से चम्पावत के शैक्षिक वर्ग को जितने भी स्रोतों की आवश्यकता है उतनी ही विचारों की भी आवश्यकता है। वर्तमान में उपलब्ध मोबाइल फोन का ज्ञान निश्चित रूप से निकट भविष्य में एक अच्छे इन्टरनेट सम्पर्क को विकसित करेगा। 'साविद्या' का एक उद्देश्य शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के लिए ज्ञान एवं विचार की सहभागिता से युक्त नेटवर्क का सृजन करना हो सकता है, ये नेटवर्क मोबाइल फोन पर आधारित या अनौपचारिक नेटवर्क सृजित क्षेत्र जैसे फेसबुक (जैसा कि डा0 एम0पी0 जोशी एवं ए.बी. सी. के संस्थापक ने मुझे बताया था।) हो सकते है।

मैंने दक्षिणा वेब साइड में पढ़ा था। यह एक शुभ संकेत है कि बहुत सारे नवयुवक विद्यार्थी इस कार्य को प्रोत्साहित कर रहे हैं मुझे विश्वास है कि चम्पावत में इनका योगदान आपके प्रयत्नों को गति प्रदान करेगा। साविद्या का उददेश्य चम्पावत में 5 ऐसे मेधावी प्रतिभाओं को खोजकर यह सुनिश्चित करने का प्रयत्न होना चाहिए जो I.I.T / I.I.M में अच्छा प्रदर्शन कर सके अथवा सम्बद्ध शैक्षिक हस्तक्षेप के द्वारा किसी सार्थक सामाजिक प्रभा वाले कार्य को महत्व देना चाहिए। अगर कुछ छात्र I.I.T / I.I.M में प्रवेश पा जाते है तो यह एक बड़ी उपलब्धि होगी।

चम्पावत के संदर्भ को मैं बहुत अच्छी तरह नहीं समझ पाया हूँ। मैंने भारत में अपंग वयस्कों के साथ काम किया

है। यहाँ भारत में सामाजिक सुरक्षा का कोई उचित तंत्र न होने के कारण उनके माता-पिता की एक मात्र चिन्ता होती है कि उनकी मृत्यु के पश्चात उनके पाल्यों का क्या होगा इस प्रकार स्वतंत्रता पूर्वक जीवन यापन तथा आर्थिक स्वतंत्रता भारतीय अपंग युवकों की जीवन शैली की कुंजी है। इनमें से जो शहरो में निवास कर रहे है उनका अपने कौशल के आधार पर तेजी से समृद्ध हो रहे बी0पी0ओ0 में कार्य करना आर्थिक स्वतंत्रता का एक अच्छा संकेत हैं। मैंने उनकी सफलता की अनेक कहानियां सुनी है जो अंग्रेजी में बोलचाल के अपने कौशल के कारण संचार बाजार में नियोजित हुए है। धीरे धीरे ये व्यक्ति अपने कौशल का विकास करते हुए अपने जीवन स्तर को भी प्रभावित कर चुके हैं।

चम्पावत के तमाम बेरोजगार नवयुवकों के लिए प्रगति का रास्ता क्या हो सकता है? क्या यह पर्यटन तथा अतिथि सत्कार से सम्बन्धित हो सकता है? आई.टी. आधारित उद्योग अथवा स्थानीय कृषि सम्बन्धी या कला एवं दस्तकारी से सम्बन्धी? मेरे पास कोई उत्तर नहीं है। भविष्य के परिदृश्य को विकसित करने के लिए ऐसे प्रश्नों पर विचार विमर्श के उपरान्त ही एक कार्य योजना बने कि आज किस प्रकार के कौशल के विकास की आवश्यकता है और साविद्या की उर्जा को किस दिशा में केन्द्रित किया जा सकता है? विशेष रूप से जब सर्वशिक्षा अभियान शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। निसंदेह 21वीं शताब्दी में शिक्षा के क्षेत्र में यूनेस्को जैसी अनेक संस्थाएँ स्वअर्जित ज्ञान कार्य एवं गहन चिंतन द्वारा ज्ञान अर्जन, स्वजागरण एवं संवेगों की जानकारी के लिए एक मजबूत स्तम्भ की तरह कार्य कर रहें हैं क्योंकि जीवन के जो भी क्रियाकलाप हों उन पर इनका एक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उपर्युक्त तथ्य केवल मेरे विचार मात्र हैं। मुझे विश्वास है कि आप एवं प्रो0 पन्त साविद्या की कार्यावली को अधिक अच्छी प्रकार से समझते हैं।

ससम्मान

अतुल पन्त

* London U.k to Champawat U.K 5 minutes की एक मूवी है।

* श्री पन्त द्वारा तैयार उक्त मूवी गूगल में सर्च करके देखी जा सकती है।

8.2 श्रीमती ममता वर्मा प्रधानाध्यापिका-रा०प्रा०वि० ढकना बडौला

स्वंयसेवी संस्था 'हिमवत्स' द्वारा वर्ष 2009 से राजकीय प्राईमरी विद्यालय ढकना बडौला को अंगीकृत कर एक आदर्श विद्यालय बनाने का प्रयास किया जा रहा है। संस्था द्वारा गरीब बच्चों को आगे लाने का प्रयास किया जा रहा है। यह प्रयास गरीब बच्चों के लिए श्लाघनीय है। संस्था द्वारा वर्ष 2010-11 में विद्यालय को दिया गया योगदान इस प्रकार है संस्था द्वारा विद्यालय में दो अध्यापक दिये गये हैं जो पूर्ण मनोयोग से कार्य कर रहे हैं। अभिभावक अध्यापकों के प्रयासो से खुश हैं। वे हमेशा के लिए विद्यालय में इन्हीं शिक्षकों का सहयोग चाहते हैं।

संस्था द्वारा प्रत्येक छात्र को एक-एक शैक्षिक किट दिया है। विद्यालय में खेल के लिए फुटबॉल, रस्सी कूद, रिंग बॉल, आदि दिया है। प्रत्येक छात्र को लिव 52, डी वार्मिंग व विटामिन्स की गोलियां दी गयी हैं। संस्था द्वारा बच्चों को पूर्ण गणवेश दिया जाता है। संस्था द्वारा नियुक्त अध्यापक विद्यालय में अतिरिक्त समय देकर नवोदय विद्यालय की तैयारी करा रहे हैं। संस्था द्वारा समय-समय पर शैक्षिक कार्यक्रम, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता, व सुलेख प्रतियोगिता करायी जाती है, जिससे बच्चों में शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ती है। अन्त में मैं अपने पूरे विद्यालय परिवार व बच्चों के अभिभावकों की ओर से संस्था के इस कार्य के लिए हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ तथा संस्था से आगे भी इसी प्रकार के सहयोग की आशा करती हूँ।

धन्यवाद!

8.3 श्रीमती मीरा वर्मा प्रधानाध्यापिका - रा०प्रा०वि० ढकना

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि हिमवत्स संस्था द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। महोदय आपकी संस्था द्वारा वर्ष 2008 से हमारे विद्यालय को गोद लिया गया है जिसके उपरान्त विद्यालय तथा छात्रों को संस्था की तरफ से विभिन्न सुविधाओं का लाभ मिल रहा है जिनमें छात्रों को ड्रेस, दवाइयाँ, विभिन्न प्रकार की पुस्तकें प्राप्त हुई हैं। साथ ही विद्यालय में संस्था की तरफ से स्वयं सेवकों की नियुक्ति के उपरान्त विद्यालय के शैक्षिक विकास को बल मिला है।

महोदय संस्था का यह कार्य अत्यन्त सराहनीय है कि हमारे क्षेत्र के नौनिहालों के भविष्य को संवारने हेतु संस्था प्रयासरत है। महोदय, संस्था द्वारा नियुक्त स्वयं सेवक अत्यन्त निष्ठा एवं समर्पण भाव से हमारे विद्यालय में कार्यकर रहें हैं इन्हें आगे भी बनाये रखना बच्चों के भविष्य हेतु उचित रहेगा। विद्यालय में संस्था द्वारा अगर कुछ भौतिक सुविधाऐं भी दी जा सकें जैसे कि कम्प्यूटर, फर्नीचर आदि तो यह विद्यालय, बच्चों एवं समाज हित में अति उत्तम प्रयास होगा। संस्था के निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होने की विद्यालय की तरफ से हार्दिक शुभकामनाओं सहित। धन्यवाद!

8.4 श्रीमती हेमा नाथ रावल, उपप्रधानध्यापिका, रा०क०पू०मा०वि० डुँगरासेठी

रा0क0पू0मा0वि0 डुँगरासेठी में संस्था हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति डड़ा चम्पावत द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में शिक्षा, एवं बच्चों के प्रोत्साहन एवं रोजगार के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है। संस्था की ओर से छात्र/छात्राओं को गणवेश, भार एवं लम्बाई के लिए दवाइयाँ, ज्ञानवर्धक एवं रोचक कहानियों की किताबें प्रदान की जाती हैं जिससे एक आदर्श विद्यालय का वातावरण तैयार होता है एवं ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों में शिक्षा के प्रति रुझान पैदा होता है।

बच्चों को विज्ञान के प्रति रुझान पैदा करने के लिए संस्था द्वारा साइंस रिर्सोस सेन्टर बनाया गया है जहाँ पर कार्यरत शिक्षक प्रत्येक सप्ताह बच्चों को विज्ञान के प्रयोग दिखाते हैं इससे बच्चे विज्ञान के बारे में और अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। जो एक सराहनीय प्रयास है।

संस्था द्वारा नियुक्त अध्यापक बच्चों को कम्प्यूटर का ज्ञान देने के साथ-साथ विभिन्न विषयों और विद्यालय गतिविधियों पर पूरा योगदान देते हैं। संस्था के द्वारा किये जा रहे कार्यों के द्वारा अभिभावकों को भी बच्चों के प्रति जागरूक बनाया है। संस्था ने विगत वर्षों से जो कार्य किए हैं उन कार्यो से ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को निश्चय ही लाभ हुआ है तथ आशा करते हैं कि संस्था का योगदान भविष्य में भी मिलता रहेगा।

8.5 श्रीमती आशा पाण्डे प्रधानाध्यापिका-रा०प्रा०वि० कुलेठी

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि हिमवत्स संस्था द्वारा वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। हिमवत्स स्वयंसेवी संस्था द्वारा राजकीय प्राईमरी कुलेठी को गोद लेकर एक आदर्श विद्यालय का स्वरूप दिया गया है। जो कि शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान है। संस्था द्वारा विद्यार्थियों को हर संम्भव सहायता प्रदान की जा रही है। जिसमें छात्रों को ड्रेस, दवाइयाँ, स्वास्थ्य परीक्षण, खेल सामग्री, वाद्ययन्त्र, प्रतियोगिता विषयक पुस्तकें दी जा रही है और नवोदय परीक्षा की तैयारी कराके आगे बढ़ाया जा रहा है। वर्तमान में संस्था ने इस विद्यालय को तीन पूर्णकालिक शिक्षक दिए हैं। इसके अतिरिक्त संस्था ने एक लाइब्रेरी तथा एक साइन्स रिसोर्स सेण्टर की स्थापना की है। लाइब्रेरी में लाइब्रेरियन, सांइन्स रिसोर्स सेण्टर में मैनेजर व क्यूरेटर की नियुक्ति की गयी है। बच्चे पुस्तकें पढ़ते हैं एवं सांइस के प्रयोगों को सीखते हैं और विज्ञान के प्रति बच्चों की रूचि जाग्रत हो रही हैं। हिमवत्स संस्था द्वारा गोद लिए जाने एवं स्वयंसेवकों के सहयोग से इस स्कूल की शिक्षण गतिविधियों, खेलकूद की गतिविधियों में सुधार हुआ है और समय-समय पर इस क्षेत्र में भ्रमण कर बच्चों अभिभावकों को भी स्वयंसेवको ने शिक्षा के प्रति जागरूक किया है और भविष्य में भी संस्था सहयोग देकर क्षेत्र तथा बच्

के सर्वांगीण विकास हेतु अग्रसर रहे।

मैं संस्था के सहयोग के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ।

धन्यवाद!

8.6 श्रीमती षष्टी पाण्डेय प्रधानाध्यापिका-रा०प्रा०वि० डुँगरासेठी

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति डड़ा, चम्पावत स्वयंसेवी संस्था द्वारा सन् 2008 में रा0प्रा0पा0 डुँगरासेठी को अंगीकृत कर एक आदर्श विद्यालय बनाने का प्रयास किया जा रहा है और एक निश्चित सीमा तक संस्था ने अपने कार्य में सफलता का एक महत्वपूर्ण सफर तय भी किया है। छात्र छात्राओं का सर्वांगीण विकास अर्थात् शिक्षा के मौलिक उद्देश्य की प्राप्ति को क्रियाशील विधियां द्वारा सकारात्मक प्रतिफल के रूप में देखने हेतु संस्था द्वारा विद्यालय में तीन पूर्णकालिक शिक्षक शिक्षिकाओं की नियुक्ति की गयी है। जो पूर्ण लगन एवं निष्ठा के साथ छात्रों को विभिन्न शिक्षण सूत्रों के प्रयोग द्वारा शिक्षा प्रदान करते हैं। संस्था द्वारा विद्यालय में गणवेश, फर्नीचर, दवाएँ, खेल सामग्री मनोरंजन की पुस्तकें तथा अनेक प्रतियोगी पुस्तकें प्रदान की जाती है, जो उनके प्रतिदिन की जीवन शैली में काम आने वाली बातों का ज्ञान कराते हैं। प्रत्येक तीन महीने के अन्तराल पर चिकित्सक द्वारा छात्रों का शारीरिक परीक्षण किया जाता है तथा यथोचित उपचार किया जाता है। संस्था द्वारा नियुक्त शिक्षकों द्वारा पाठ्यक्रम के अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयार पर भी जोर दिया जाता है जैसे - नवोदय परीक्षा इत्यादि तथा इस दिशा में सकारात्मक परिणाम भी प्राप्त किया जाता है। संस्था न केवल विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करती है अपितु विद्यालयी शिक्षक शिक्षिकाओं को भी पुरस्कृत करके प्रोत्साहित करती है। संस्था द्वारा समय समय पर निबन्ध, चित्रकला, भाषण, सामान्य ज्ञान आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जाता है। शिक्षा को जीवन का आधार मानते हुए उसके प्रसार हेतु संस्था के सदस्य अभिभावकों से सम्पर्क बनाये रखते हैं तथा उन्हें जागरूक कराते रहते हैं। विद्यालय में होने वाली वी0ई0सी0 तथा एस0एन0सी0 की गोष्ठियों में भी संस्था के सदस्य प्रतिभाग करते हैं तथा अभिभावकों की समस्याओं को सुनते हैं। संस्था द्वारा उन समस्याओं का यथा सम्भव समाधान भी किया जाता है। संस्था के अधिकारी समय-समय पर नियुक्त शिक्षकों का अनुश्रवण करते हैं तथा उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। जिससे छात्रों को भी लाभप्रद ज्ञान प्राप्त होता है। प्रत्येक वर्ष 28 फरवरी को महान वैज्ञानिक डा0 रमन के जन्मदिन के अवसर पर विज्ञान दिवस का आयोजन किया जाता है। जिसके अन्तर्गत अनेक विद्वान शिक्षकों तथा वैज्ञानिकों द्वारा छात्रों में वैज्ञानिक शोध की प्रवृत्ति जाग्रत की जाती है तथा इसके द्वारा उनका मानसिक स्तर भी ऊँचा उठाया जाता है। संस्था द्वारा दिए जा रहे अतुलनीय सहयोग, अनुकरणीय मार्गदर्शन के लिए सम्पूर्ण विद्यालय परिवार, विद्यालय की प्रधानाध्यापिका तथा अभिभावक वर्ग संस्था के प्रति सहृदय आभार प्रकट करते हैं तथा भविष्य में भी इसी सहयोग की आशा करते हुए संस्था के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। धन्यवाद!

8.7 श्रीमती मोहनी वर्मा प्रधानाध्यापिका-रा०प्रा०वि० खर्ककार्की

राजकीय प्राथमिक विद्यालय खर्ककार्की को हिमवत्स संस्था द्वारा सराहनीय सहायता प्रदान की जा रही है। शिक्षण कार्य के लिए दो शिक्षक दिए गये हैं। जिससे बच्चों की पढ़ाई के स्तर में काफी सुधार आया तथा शिक्षण कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। बच्चों को गणवेश, पेस्ट, ब्रुश संस्था की ओर से बाँटे गये, जो एकता को दर्शाता है। एक समान गणवेश होने के कारण आपसी भेद-भाव को मिटाता है। संस्था द्वारा बच्चों को लिव 52, सुप्राडिन, डी-वार्मिंग वितरित की गयी। जिससे बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास काफी तीव्र गति से हो रहा है। बच्चों के स्वास्थ्य एवं रहन-सहन पर भी अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। शिक्षण कार्य के अलावा कम्प्यूटर शिक्षक द्वारा कम्प्यूटर का ज्ञान बच्चों को उपलब्ध कराया जा रहा है। जिससे बच्चों में कम्प्यूटर के प्रति रूचि बढ़ती जा रही है।

संस्था द्वारा विद्यालय को गोद लिए हुए दो वर्ष होने को हैं। संस्था के सहयोग से इस वर्ष विद्यालय को खेल किट

दिया गया है जिसमें कैरम, बैटमिण्टन, बास्केटबॉल, बॉलीबाल, फुटबाल, रिंग बॉल, रस्सी कूद आदि सामान दिया गया है। इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा प्रत्येक बच्चे को विषय से सम्बन्धित किट प्रदान किया गया, जिससे बच्चों को उनकी आवश्यकतानुसार सामग्री प्राप्त हुयी तथा विषयानुसार उनका उत्साह बढ़ा व ज्ञान में वृद्धि हुयी। संस्था के सहयोग द्वारा छात्र संख्या में वृद्धि हुयी। वर्तमान समय में छात्र संख्या 112 है। बच्चों द्वारा हर कार्यक्रम में प्रतिभाग किया जा रहा है। विद्यालय के छात्रों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे संकुल, क्षेत्रीय व जिला स्तर खेलकूद प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त कर राज्य स्तर पर भी प्रतिभाग किया गया। इन बच्चों के नाम 1. सुरेश समदार कक्षा 4 2. तरूण कुमार कक्षा 5 ।

मैं, स्वयं अभिभावकों की ओर से संस्था के सहयोग के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ।

धन्यवाद!

8.8 श्रीमती रेखा जोशी, प्रधानाध्यापिका, रा०क०पू०मा०वि० खर्ककार्की

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति डड़ा, चम्पावत स्वयंसेवी संस्था द्वारा रा0क0पू0मा0वि0 खर्ककार्की, विकास खण्ड चम्पावत, जिला चम्पावत, मार्च 2008 से अंगीकृत कर एक आदर्श विद्यालय बनाने का सतत् प्रयास किया जा रहा है। जो कि शिक्षा की विकासात्मक प्रक्रिया में अतुलनीय योगदान है। संस्था द्वारा छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु दो पूर्ण कालिक शिक्षकों की नियुक्ति की गयी है। जो अपनी लगन और परिश्रम से विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्वर्धन में अपना पूर्ण योगदान दे रहे हैं। संस्था द्वारा विद्यालय को कम्प्यूटर एवं कम्प्यूटर शिक्षक प्रदान किया गया है, जिससे छात्रों में निरन्तर कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति जिज्ञासाएँ प्रबल हुयी हैं। संस्था द्वारा तीन वर्षों से लगातार विद्यार्थियों को गणवेश, पेस्ट, ब्रुश, खेल सामग्री तथा दवाइयाँ (लिव 52, एलबण्डाजोल, सुप्राडीन) दी जा रही है जो अच्छे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक सिद्ध हो रही है तथा समय समय पर संस्था के विशेषज्ञों द्वारा छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाता है जिसमें नेत्र परीक्षण, दन्त परीक्षण एवं शारीरिक दुर्बलताओं का परीक्षण सम्मलित है। परीक्षणों के पश्चात सम्बन्धित बीमारियों के उपचार के लिए दवाइयाँ दी जा रही हैं। अग्रेतर चिकित्सा हेतु सलाह प्रदान की जाती है। संस्था द्वारा समय-समय पर शैक्षिक कार्यक्रम जैसे सामान्य ज्ञान, विज्ञान, निबन्ध, खेलकूद आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जिससे छात्रों के शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास भी होता है और आगे बढ़ने की प्रवृत्ति भी जाग्रत होती है। संस्था द्वारा नियुक्त क्यूरेटर द्वारा सप्ताह में नियमित एक बार विद्यालय में आकर विज्ञान विषय में प्रत्येक कक्षा में पाठ के अनुरूप उपयोगी प्रयोगों का प्रदर्शन किया जाता है। जिससे सभी छात्र बड़ी उत्सुकता से प्रयोगों को देखकर तथा स्वयं प्रयोग कर पाठ को सरलता से तथा अच्छी तरह से समझ जाते हैं और इससे छात्रों में विज्ञान के प्रति रूचि जाग्रत हुयी है। संस्था से सम्बन्धित शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों द्वारा निरन्तर विद्यालय में आकर छात्रों का मार्गदर्शन किया जाता है एवं विद्यालयी गतिविधियों का अनुश्रवण किया जाता है। इससे विद्यालय के शिक्षकों को उत्कृष्ट शैक्षिक परिवेश बनाने में सहायता प्राप्त होती है। संस्था द्वारा विद्यालय को अंगीकृत करने के पश्चात विद्यालय में प्रत्येक वर्ष निरन्तर छात्र संख्या में वृद्धि हो रही हैं। छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास में संस्था से अनुकरणीय कार्य एवं अतुलनीय सहयोग प्राप्त हो रहा है। स्थानीय जनता ग्रामीण, निर्धनजन जनप्रतिनिधि एवं प्रबुद्ध वर्ग संस्था का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु आशान्वित हैं।

धन्यवाद!

9 प्रेरणा दायक प्रसंग

9.1 रुपये को प्रतीक चिह्न देने वाली प्रतिभा

नाम के अर्थ को सार्थक करते हुए डी उदय कुमार एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में सामने आए हैं, जिन्होंने जीवन के शुरूआती वर्षों में ही वह ऐतिहासिक मुकाम हासिल कर लिया, जिसे महज संयोग कहकर टाला नहीं जा सकता। भारतीय रूपये को एक चेहरा देना आसान नहीं था, पर अपनी सोच और नजरिये से उन्होंने करीब तीन हजार प्रतिद्वंदियों को पीछे छोड़ते हुए प्रतियोगिता में बाजी मार ली। 10 अक्टूबर 1978 को चेन्नई में जन्मे डी उदय आई0आई0टी0 गुवाहाटी में बतौर एसोसिएट प्रोफेसर अपनी सेवा दे रहे हैं। उदय को गृहस्थान तंजावुर के भव्य मंदिर बचपन से ही लुभाते रहे हैं, इसलिए जब बैचलर डिग्री के लिए विषय चुनने की बारी आई, तो उन्होंने बेझिझक वास्तुकला को चुना उन्होंने आई0आई0टी0, मुंबई से मास्टर डिग्री हासिल की और वहीं से द्वितीय सदी में तमिल मुद्रण का विकास विषय पर शोध भी किया शोध कार्य के दौरान एक नए कंम्प्यूटर फान्ट पाराशक्ति का विकास करने का श्रेय भी उन्हें जाता है। सामान्य रहन-सहन में विश्वास रखने वाले उदय बागवानी के भी शौकीन हैं। जामुन, अमरूद और बेल जैसे कई पेड़ो को वह अपने बच्चों की तरह मानते हैं। अब भले ही उनके द्वारा डिजाइन किए गए चिह्न से भारतीय रूपये को पहचाना जाए, पर मुद्रण को लेकर उनकी भूख खत्म नहीं हुई है। यही कारण है कि आज भी वह भारतीय लिपि विशेषकर तमिल मुद्रण पर और काम करना चाहते हैं।

9.2 प्रतिभा का अवतार

दुनियाँ में प्रतिभाशाली लोगों की कमी नहीं है। लेकिन तथागत अवतार तुलसी की विलक्षणता इस मायने में सबसे अलग है कि उन्होंने तनाव और अवसाद के क्षणों के बीच भी अपना मुकाम हासिल किया। गौर कीजिए, देश में सबसे कम उम्र में भौतिकी में पीएचडी करने वाले तथागत पर इंडियन डिपार्टमेनट आफ सांइस एण्ड टेक्नोलॉजी ने एक समय झूठा होने का आरोप लगाया था, और जर्मनी के एक प्रतिष्ठित सम्मेलन में उन्हें भेजे जाने को एक भूल बताते हुए खेद जताया था। लेकिन आज आई0आई0टी0, मुंबई तथागत को अपने भौतिक विभाग में बतौर असिस्टेंट प्रोफेसर जोड़कर गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

ऐसा नहीं है कि दुनियाँ में तथागत अवतार तुलसी विलक्षण प्रतिभा वाले अकेले युवा रहे हैं, ऐसे लोगों की एक लंबी सूची है, और यह सूची जीवन के तमाम क्षेत्रों में पसरी हुई है। चाहे 12 भाषाओं में बेजोड़ तकरीर करने वाले सात साल के असद उल्ला कय्यूम हों या महज 13 वर्ष में ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने वाले चीनी खिलाडी फु मिंझिया, या फिर 17 साल में डाक्टर बनने वाले बालामुरली अंबाती, इन प्रतिभाओं ने हमेशा यह एहसास कराया है कि वे वाकई कुदरत के उपहार हैं। बरहाल, तथागत की चमत्कृत करने वाली प्रतिभा क्षमता के बारे में सुपर-30 के संचालक आनंद कुमार कहते हैं, उनकी प्रतिभा जन्मजात है, लेकिन तथागत ने कठिन परिश्रम भर किया है। उन्हें जो भी अवसर मिला, उसका उन्होंने भरपूर लाभ उठाया है। उनकी इच्छा नोबेल पुरस्कार पाने की है, और इसके लिए पूरा देश उन्हें अपनी शुभकामनाएं ही देगा।

बिहार के एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में नौ सितम्बर 1987 को पैदा हुए तथागत की विलक्षणता का इल्म उनके माता-पिता को उनके छह वर्ष के होने पर ही हो गया था और इसे उन्होंने नौ साल में दसवीं पास करके और 12 वर्ष, दो महीने, 19 दिन में पटना यूनिवर्सिटी से 70.5 प्रतिशत अंको के साथ एमएससी की परीक्षा उत्तीर्ण करके पुष्ट भी किया। उनकी इस उपलब्धि ने उन्हें गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में स्थान दिलाया और 21वें साल में इंडियन स्कूल ऑफ साईन्स बंगलुर से डाक्टर की उपाधि उनके हाथों में थी। तथागत हमेशा यह कहते है कि एक छात्र के लिए विश्लेषण, कल्पना और स्मरण की क्षमता उसकी मूल पूंजी है। और जिसने भी अपने जीवन में इनका सही निवेश किया, सफलताएं उसके कदम चूमती रहीं। अक्सर कहा जाता है कि बुद्धि जन्मजात होती है, ज्ञान अर्जित। क्वांटम सर्च ऐल्गरिज्म पर अपना सिद्धांत प्रस्तुत करने वाले तथागत अवतार तुलसी बुद्धि और ज्ञान के अद्भुत संयोग हैं।

9.3 सक्सेस फंडा

यह किसी अजूबे से कम नहीं कि होम स्कूलिंग का छात्र महज 14 साल की उम्र में आईआईटी जेईई जैसी चुनौतीपूर्ण परीक्षा पास कर जाए बात हो रही है दिल्ली के सहल कौशिक की, जिन्होंने न सिर्फ कम उम्र में आईआईटी जेईई क्रैक कर कीर्तिमान स्थापित किया, बल्कि अपने रीजन में टॉप किया। आल इंडिया में उनकी 33वी रैंक रही। नवीं कक्षा तक कभी स्कूल न जाने वाले सहल हाल ही में साउथ कोरिया में आयोजित होने वाले इंटरनेशनल बायोलॉजी ओलपियाड के लिए भी चुने गये हैं। उनसे हुई बातचीत के कुछ अंश:

इस सफलता का मूल मंत्र क्या रहा?

दरअसल सीबीएसई परीक्षा जहां स्टैप-बाय-स्टैप उत्तरों की मांग करती है, वहीं यह परीक्षा आईक्यू लेवल और मैंटल कैलकुलेशन की स्पीड जैसी स्किल्स टेस्ट करती है जो मेरी काफी अच्छी थी।

पढ़ाई कब और कैसे शुरू की?

मैंने 12 साल की उम्र में इस परीक्षा के बारे में सोचा था तब मैं 10वीं कक्षा में था। मैनें दिल्ली के एक संस्थान से कोचिंग क्लासेज ली थी। घर पर पढ़ाई करने के बाद मै वहां प्रश्नों के बदलते ट्रेड को समझा करता था। दिन में मुश्किल से पांच घंटे इस परीक्षा की तैयारी में लगाया करता था। लेकिन मेरा लक्ष्य इंजीनियरिंग नहीं, बल्कि एस्ट्रॉफिजिक्स में रिसर्च करना है।

होमस्कूलिंग का अनुभव कैसा रहा?

दरअसल स्कूलिंग सिस्टम मुझे विभिन्न विषयों को गहराई से पढ़ने की स्वतंत्रता नहीं दे पाता। दो साल की उम्र में मां ने अपना प्रोफेशन (डाक्टर) छोड़कर मुझे टाइम दिया। उनसे मैं कभी भी कितने ही प्रश्न पूछ सकता था। होमस्कूलिंग में किसी समय से बंधा नहीं था। कभी भी कुछ भी पढ़ सकता था।

9.4 अवसर की पहचान

'यथार्थ को वास्तविकता में बदलने की खातिर, जिन्दगी में कुछ कर गुजरने की खातिर,
कुछ ही होते हैं जो रातों को जागते हैं, सपनों को हकीकत में बदलने की खातिर'।

प्रीजा श्रीधरन - ग्वांझू एशियाड में 10,000 मी0 दौड़ में गोल्ड मैडल जीतने वाली प्रीजा भारत ही नहीं विश्व खेल में अपना नाम दर्ज करा चुकी हैं। लेकिन इस कामयाबी की उन्होंने बहुत बड़ी कीमत चुकायी है। जब वह बहुत छोटी थी, तब उनके पिता की मृत्यु हो गयी थी। भाइयों को अपनी पढ़ायी छोड़कर बढ़ई (कारपेंण्टर) का काम करना पड़ा और माँ को दूसरों के घर जा कर बर्तन साफ करने पड़े। इस माहौल में पली बढ़ी प्रीजा की कड़ी मेहनत ने उन्हें एक बेहतरीन एथलीट बना दिया। इसके बाद जब उनकी जॉब रेलवे में लगी तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। लेकिन इसके बावजूद प्रीजा अपने लक्ष्य को नहीं भूली। अन्ततः उन्होंने यह कर दिखाया जिस पर आज खुद उन्हें यकीन नहीं हो रहा है।

सुशील कुमार - बीजिंग ओलम्पिक में कॉस्य, फिर उसके बाद राजीव खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित सुशील कुमार एक बस ड्राइवर के बेटे थे। बस के इस बेटे ने अपने चचेरे भाई से प्रेरणा ली, जो गरीबी के कारण कुश्ती को अपना कैरियर नहीं बना सका। फिर सुशील पर कुश्ती का ऐसा जुनून चढ़ा कि खराब आर्थिक हालत और विपरीत परिस्थितियाँ भी उसे न रोक सकी।

एन०आर० नारायणमूर्ति- कामयाबी के लिए चाहिए जोखिम उठाने का जज्बा। एन0आर0 नारायणमूर्ति में यह जज्बा कूट-कूट कर भरा हुआ था। तभी उन्होंने अपनी पत्नी से 10,000 रूपये उधार लिये और शुरू की एक छोटी सी सॉफ्टवेयर कम्पनी। इस कम्पनी को बुलन्दियों में पहुँचाने का उनका ख्वाब हकीकत में बदल गया। आज उनकी 'इन्फोसिस' दुनियाँ की बेस्ट आईटी कम्पनी में शुमार है।

रजनीकान्त -भारत में सर्वाधिक मेहनताना पाने वाले एक्टर का नाम है रजनीकान्त। इनका बचपन बीता गरीबी में। उन्हें बस कन्डक्टर का काम भी करना पड़ा। लेकिन जब उन्हें अपने अन्दर छिपी प्रतिभा का आभास हुआ तो उन्होंने तुरन्त इस काम को छोड़कर मद्रास फिल्म इन्स्टीटूयूट ज्वाइन किया। फिर उन्होंने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। उनकी कोशिशें रंग लायी और इस प्रकार जन्म हुआ एक सुपर स्टार का।

संकलन -गौरव कुमार बोहरा क्यूरेटर सांइस रिसोर्स सेण्टर, कुलेठी

9.5 यदि मैं आज शिष्य होता

सोचता हूँ मैं कभी-कभी / यदि मैं आज शिष्य होता / कैसा अध्यापक मैं चाहता।
किस तरह पढ़ना चाहता / कैसा होता विद्यालय मेरा / कैसी होती कक्षा हमारी।
मेरा हर रोज कुछ नया / न होता मेरा न होता तेरा / सोचता हूँ मैं कभी-कभी।
यदि मैं आज शिष्य होता / न रहता कभी पीछे / हमेशा मैं रहता आगे।
मित्रों को पिरोता / हर समय पक्के धागे में / शिक्षक का होता मैं ताराकर।
लेता संसार मुट्ठी में सारा / सोचता हूँ मैं कभी-कभी / यदि मैं आज शिष्य होता।

दीपक टम्टा, कम्प्यूटर अध्यापक,
रा०क०पू०मा०वि० डुँगरासेठी

10 निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार विधेयक 2010 -

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत 1 अप्रैल 2010 से

अ : छात्र एवं शिक्षक का प्रावधान

प्राथमिक वि० 1-5 तक		उच्च प्राथमिक 5-8 तक	
छात्र	शिक्षक	छात्र	शिक्षक
60	2	100	कम से कम 3 शिक्षक
61-90	3	100 से अधिक	35:1 का आधार+प्रा0आ+पारट टाइम
91-120	4		टीचर कला शारीरिक शिक्षा
121-200	5		कार्यानुभव

ब: विद्यालय - मानदण्ड और मानक

भवन	एक- कक्षाकक्ष प्रति शिक्षक (एक आफिस स्टोर व प्रधानाचार्य कक्ष (स्वच्छ जल, बालक-बालिकाओं हेतु प्रसाधन; रसोई; खेल-मैदान; बाउन्डरी; दिवाल फैन्स)					
कार्यदिवस/प्रतिघण्टे	प्राथमिक विद्यालय-200 दिन/800 घण्टे; उच्च प्राथमिक विद्यालय-220 दिन/1000 घण्टे प्रति वर्ष					
कार्यअवधि/सप्ताह	45 घण्टे/सप्ताह (तैयारी अवधि सहित)					
पाठन सामग्री	पुस्तकालय; खेल-कूद एवं मैदान					
प्राथमिक छात्र	60 तक	61-90	91-120	121-150	> 150	>200
शिक्षक	2	3	4	5	6	छात्र/शिक्षक< 40
उच्च प्राथमिक छात्र/शिक्षक	एक शिक्षक प्रति कक्षा (विज्ञान-गणित, सामान्य ज्ञान, भाषा); 1 शिक्षक /35 छात्र (कम से कम)					
	>100 छात्रों हेतु एक प्रधानाध्यापक एक अर्धकालिक; कला, स्वास्थ्य शारीरिक, कार्यशिक्षा अध्यापक।					

महत्वपूर्ण शैक्षिक लेखः-

शिक्षा का अधिकार अधिनियम-गुणवत्ता के आईने में

--बी०डी० गुरूरानी

कैशोर्य के उल्लास और यौवन की ऊर्जा को पीछे छोड़ता हुआ, 'शिक्षा का अधिकार' धीमे-धीमे 2010 में आम आदमी तक पहुँचा। तब तक शिक्षा भी बूढ़ी हो गई। तीन दशक पुराना एक संस्मरण याद आता है। चुनावी माहौल था। नुक्कड़ सभाएँ चल रही थी। एक उदीयमान नेता का भाषण चल रहा था, भीड़ जुटी थी। कुछ मार्मिक तथ्य कानों में कौंधे और पैर ठिठके। बात, शिक्षा व्यवस्था पर आई। नेता जी बोले, सरकारी शिक्षा व्यवस्था को ही ले लो। गरीब का बच्चा जिसे घर में भरपेट रोटी नहीं मिली स्कूल में भी रोता है, 'मैया, मैं नहिं माखन खायो'। कक्षा तीन या चार से प्रारंभ होता है इस पाठ का रोना और एम0ए0 तक चलती रहती है यही रटन्त; मैया, मैं नहिं माखन खायों। पढ़ते-पढ़ते बचपन ढला, यौवन ढला पर माखन न मिला। वस्तुतः बात मार्मिक थी। सोचने को मजबूर करती थी। जब-जब प्रसंग आता है, मैं इस कथन को चलते-फिरते, चर्चा में या वार्ता में उद्धृत करता हूँ। बात चिन्तन की है और इंगित है उस व्यवस्था की ओर जो आजादी के बाद भी लावारिस ही पड़ी रही। सुविधा सम्पन्न लोग सत्ता में रहे हो या सत्ता के इर्दगिर्द, अपने लिए पृथक शैक्षिक व्यवस्था का लाभ उठाते रहे। आम आदमी के लिए युगापेक्षी व्यवस्था अनदेखी ही रह गई। दोहरी शिक्षा व्यवस्था के पनपते मूल शैक्षिक व्यवस्था गौण हो गई। शिक्षा में खास और आम का अन्तराल दिनों दिन गहराता गया। खास लोग सारा माखन गपक गए और आम आदमी का बच्चा रोता ही रहा 'मैया मैं नहिं माखन खायो'।

शिक्षा की राष्ट्रीय नीति के अभाव में पिछले अस्सी और नब्बे के दशक में आते-आते तथाकथित अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की भरमार हो चुकी थी। आज की स्थिति तो यह है कि आम-आदमी, गरीब और मजदूर भी सरकारी पाठशालाओं से परहेज करने लगा है और वहाँ से पलायन करने लगा है। ऑखिर ऐसा क्यों? यह प्रश्न हमेशा उठता रहा है। नीति-नियन्ताओं एवं शिक्षा प्रशासन के उच्च पदस्थ लोंगों के सामने यह सत्य क्यों प्रतिभासित नहीं होता? जिस व्यवस्था पर राजस्व का एक बहुत बड़ा हिस्सा खर्च होता है, विश्व बैंक परियोजनाओं के नाम पर जहाँ अरबों रूपया शैक्षिक स्तरोन्नयन में प्रतिवर्ष व्यय किया जाता है तथा नवाचार की नित-नूतन योजनाओं का ढिढोरा बजता रहता है वह व्यवस्था इतनी निष्प्रभावी क्यों? सरकारी विद्यालयों में निरन्तर घटते नामांकन से हमारा शिक्षा तंत्र तनिक भी विचलित नहीं होता। शिक्षक-प्रशिक्षण से सम्बद्ध जिन विद्यालयों को हम आदर्श विद्यालय (Model School) के नाम से जानते थे, उनका स्वरूप ध्वस्त हो चुका है। उनका नाम लेवा भी कोई नहीं है। आदर्श माने जाने वाले उच्च और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भी सम्प्रति ध्वंसावशेष मात्र है। भौतिक रूप से भी, यथार्थ में भी। यह तो भारत सरकार के नीतिनिर्धारण विषयक दस्तावेजों में भी स्वीकार किया गया है कि यदि व्यवस्थापक परिवर्तन न होने के कारण शिक्षा तंत्र इतना कुंठित न हो गया होता तो आज की शिक्षा की तस्वीर कुछ और ही होती।

आयन्त शिक्षा व्यवस्था जिसका प्रथम सोपान प्राथमिक शिक्षक है तथा शिखर पर शिक्षा निदेशक से लेकर सचिव एवं मंत्री आसन्न हैं, कितनी प्रभावी नीतियाँ बना पाते हैं और उन नीतियों से उनका कितना अन्तस्थ आत्मिक भाव जुड़ा होता है, वह उनके प्रतिफल में देखा जा सकता है और इस बात से भी आँका जा सकता है कि इस व्यापक तंत्र ने किस हद तक स्वयं को इन नीतियों से जोड़ा है। संभवतः यह जानने के लिए तो किसी सर्वेक्षण की भी आवश्यकता नहीं होगी कि सरकारी शिक्षा तंत्र से जुड़े कितने शिक्षकों व उच्च पदस्थ अधिकारियों के बच्चे विभागीय विद्यालयों में नामांकित हैं? स्पष्ट है कि नीति नियन्ता और अच्छी से अच्छी शिक्षा व्यवस्था का दम भरने वाले कर्ता-धर्ता जहाँ की रोटी खाते हैं उस व्यवस्था को अपने बच्चों के उपयुक्त नहीं मानते।

पिछले साठ के दशक से ही हम अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की अर्थात् प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण की बात करते आ रहे हैं। 50 वर्ष बीते, तीसरी पीढ़ी निकल गई। सारी कथा गोष्ठियों और कार्यशालाओं में सिमटकर रह गई। हम लक्ष्य से दूर रहे। इस बीच साक्षरता कार्यक्रम भी चला। करो या मरो की तर्ज पर कार्यक्रम को हटाकर

उसे अभियान का रूप देने का प्रयास किया गया किन्तु उसे सही गति नहीं मिली। सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में विगत कई वर्षों से सर्वशिक्षा अभियान चलाया जा रहा है। यह अभियान चल ही रहा है कि राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान भी चल पड़ा है। अभियान का अर्थ चलते रहो नहीं वरन् उससे करो या मरो की ध्वनि निकलती है। अभियान पर निकल पड़े तो लक्ष्य पाना ही है, एक निश्चित अवधि के अन्दर। अभियान, लक्ष्य पर विजय के लिए होता है। विजय में जो प्राप्त होता है उसकी अभिवृद्धि और रक्षा की जानी चाहिए। इसे योग और क्षेम की संस्कृति कहा जाता है।

ऐसे समय में जब कि प्राथमिक शिक्षा का काफी प्रचार-प्रसार हो चुका है और विगत वर्षों में विश्व बैंक परिपोषित जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP) के अर्न्तगत प्राथमिक विद्यालयों की सुविधाएँ बढ़ चुकी है और शहरों के अलावा देहाती क्षेत्र में भी निजी एवं स्ववित्त पोषित विद्यालयों की संख्या बढ़ती जा रही है और जनमानस शिक्षा के प्रति काफी जागरूक हो चुका है, विलम्ब से ही सही, अनिवार्य शिक्षा का अधिकार -2009 लागू हुआ है। अपेक्षा की जानी चाहिए कि देर आए दुरूस्त आए की कहावत चरितार्थ हो। अनिवार्य शिक्षा के अधिकार का मन्तव्य नामांकन पूरा करना ही नही वरन् शिक्षा की गुणात्मक सम्प्राप्ति होना चाहिए। इस सन्दर्भ में, मैं शिक्षा की चुनौती- नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य (भारत सरकार) 1985 की निम्नांकित पंक्तियां उद्धृत करना चाहूँगा-

'शिक्षा की योजना बनाने वाले कुछ लोग यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि जैसे ही एक विशेष अनुपात में नामांकन कर लिए जाएँगे वैसे ही यह वचनबद्धता पूरी हो जाएगी। किन्तु इस विचार को स्वीकार करना संभव नहीं है। शिक्षा एक अनुष्ठान नहीं है। इसे पूरा हुआ तब तक नहीं माना जाएगा जब तक कोई बच्चा उस स्तर को प्राप्त नहीं कर लेता जो एक 14 वर्ष के लड़के अथवा लड़की के लिए मानक बनाया गया है'।

प्राथमिक शिक्षा के पास एक विशाल शैक्षिक/प्रशासनिक ढाँचा है। शिक्षा के अधिकार के निहितार्थ को पाने के लिए लाभार्थी तक पहुँचना होगा और लाभार्थी को निहित लक्ष्य की राह दिखानी होगी। आजादी के साठ-बासठ वर्षों में जनता काफी जागरूक हो चुकी है। वह सरकार बनाती है और बदल भी देती है। जनता की सजगता का पता इस बात से चल जाता है कि उसे निःशुल्क पाठ्य-सामग्री, गणवेश, मिड-डे मील उतना आकर्षित नहीं करते जितना अच्छा शिक्षण स्तर व बच्चे का विकास। पढ़ाई भविष्य के लिए है, सामान्य अभिभावक भी यह जानने लगा है। अच्छा स्कूल, अच्छी पढ़ाई उसकी वरीयता है। यह उसे दीजिए। अन्य सुविधाएँ गौण है या लाचारी है। निजी विद्यालयों के लिए शिक्षा के अधिकार के अर्न्तगत 25 प्रतिशत स्थान आर्थिक रूप से कमजोर व अपवंचित वर्ग हेतु आरक्षित रखने की बाध्यता रखी गई है। इन विद्यालयों ने इसका प्रतिवाद भी प्रारंभ कर दिया है किन्तु अच्छे स्तर के निजी विद्यालयों में ऐसी समस्या प्रायः आएगी ही नहीं। प्रश्न शुल्क का ही नहीं स्तर और वैयक्तिक समायोजन का भी है। कमजोर और अपवंचित वर्ग के बच्चे को अन्य बातों में साधन-सम्पन्न वर्ग के साथ समायोजित हो पाने में कठिनाई होगी। ऐसी व्यवस्था उसमें हीनता और कुण्ठा बढ़ाएगी। दोहरी शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक/आर्थिक असमानता का विद्रूप भी देखने को मिल सकता है। खर्चीले किन्तु स्तरीय विद्यालय में अपने पाल्य को दाखिला दिलाने की चाह रखने वाला अभिभावक शुल्क मुक्ति पर निर्भर नहीं होगा वह वैचारिक रूप से जागरूक होगा। कक्षा 8 तक परीक्षा न लेना, अनुर्तीण न करना, अनुपस्थित रहने पर निष्कासित न करना, उम्र के अनुपात में किसी कक्षा प्रवेश दे देना आदि कई बिन्दु शिक्षा के अधिकार के अर्न्तगत ऐसे हैं जिनसे 14 वर्ष के बालक/बालिका द्वारा निर्धारित कक्षा के मानक स्तर को प्राप्त करने पर शंका व्यक्त की जा सकती है। विशेष रूप से तब जबकि सामान्य स्थिति में ही कक्षा का स्तर अपेक्षा से काफी नीचे है। शिक्षा के अधिकार की विवेचना में भी सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्नचिह्न लगाया गया है। ऐसे विद्यालयों की संख्या कुल मान्यता प्राप्त विद्यालयों की लगभग 80 प्रतिशत है। अधिसूचना भू0पू0 शिक्षामंत्री एम0सी0 चागला का यह कथन भी उद्धृत किया गया है कि 'जैसे तैसे साधन विहीन विद्यालयों में छात्रों को भर्ती कर हम यह कहें कि हमने संविधान के अनु0 45 का प्रतिपालन कर लिया, ऐसी हमारे संविधान निर्माताओं की कल्पना नहीं थी। उनका अभिप्राय 6-14 वयवर्ग के बच्चों को गुणवत्तापरक शिक्षा देना था'। अतः समझा जाना चाहिए कि शिक्षा के अधिकार का अभिप्राय 100 प्रतिशत आच्छादन तो होगा ही शिक्षा निःशुल्क भी होगी किन्तु गुणात्कम पहलू को पर अन्दाज करना अधिनियम की मूल भावना के प्रतिकूल होगा। आज जब कि विद्यालय अपेक्षाकृत कॉफी साधन-सम्पन्न हो चुके हैं तथा सूचना क्रान्ति के युग में विद्यालयों को उसके अनुरूप सुसज्जित करने की नित नूतन चर्चाएँ भी हैं तथा शिक्षा

के अधिकार के अन्तर्गत प्रत्येक विद्यालय को साधन-सम्पन्न करने की वचनबद्धता भी दुहराई गई है, शिक्षकों को अच्छे वेतनमान का लाभ भी मिल रहा है हमें आशा करनी चाहिए कि शिक्षा की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं होगा।

शिक्षा के अधिकार में कुछ जानने योग्य बातें

1. इस कानून के अन्तर्गत 6-14 आयुवर्ग के बालक बालिकाओं को अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा मुहया कराने का प्रावधान है जिसके लिए सरकार की कानूनी जिम्मेदारी होगी।
2. बच्चे के निकटतम का कोई भी स्कूल उसे दाखिला देने से मना नहीं कर सकता।
3. निजी स्कूलों को 25 प्रतिशत स्थान कमजोर और वंचित वर्ग के लिए आरक्षित करने होंगे। कॉपिटेशन फीस लेना अपराध होगा।
4. कानून में आठवीं कक्षा तक बच्चों को फेल न करने और हर साल की परीक्षा से बच्चों को मुक्त रखने का प्रावधान है।
5. दाखिले के लिए कोई प्रवेश परीक्षा नहीं होगी।
6. बच्चे को प्राथमिक शिक्षा के अधिकार से रोकने और बालश्रम कराने पर 10000 रू0 तक जुर्माना का विधान है।
7. विद्यालयों में हर शिक्षक के पास एक क्लासरूम होगा। छात्र छात्राओं के लिए पृथक शौचालय होंगे।
8. विद्यालय प्रबन्ध समिति में तीन चौथाई अभिभावक व उनमें 50 प्रतिशत महिलाओं का प्रतिनिधित्व होगा।

शिक्षा के अधिकार में राज्यों की दिसम्बर 2010 तक को प्रगति इस प्रकार है -

सभी राज्यों ने अधिसूचना जारी नहीं की। चार राज्यों ने अधिसूचना जारी में तत्परता दिखाई। केन्द्र शासित चण्डीगढ़ व अण्डमान निकोबार ने सरकार के नियमों को अपना लिया। दिल्ली, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर सहित ग्यारह राज्यों ने बाल अधिकार संरक्षण परिषद् का गठन कर लिया। 27 राज्यों ने शारीरिक दण्ड अथवा मानसिक यातना को प्रतिबन्धित कर दिया। 25 राज्यों ने बच्चों को फेल करने व निष्कासन पर रोक लगा दी है। उत्तराखण्ड भी इन राज्यों में एक है। अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा विधेयक 2008, अगस्त 2009 को संसद में पारित हुआ अप्रैल 2010 से उक्त अधिनियम समस्त भारत में लागू हुआ। भारत के संविधान में सन् 1960 तक इस लक्ष्य को पाने का संकल्प व्यक्त किया गया था। इस प्रकार इस कार्य में हम 50 वर्ष पीछे हैं। इंग्लैण्ड में वर्ष 1870 में यह प्रावधान किया जा चुका था।

भारत का संविधान

उद्देशिका :- हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को: सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वालह बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

शिक्षा का अधिकार एवं कतिपय चुनौतियाँ

--डॉ० एच०डी० बिष्ट एवं
बी०डी० गुरूरानी

आर्थिक विकास दर में 9 प्रतिशत की सम्प्राप्ति, राष्ट्रमण्डल खेलों में बेहतर प्रर्दशन, बंगलोर में आस्ट्रेलिया को क्रिकेट में हराकर भारतीय खिलाड़ियों की सर्वोच्चता, अक्टूबर 2010 में सुरक्षा परिषद् की सदस्यता, नव 2010 में अमेरिकी राष्ट्रपति वराक ओबामा की भारत यात्रा नि:संदेह भावी विश्व अर्थव्यवस्था में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका के संकेत हैं। तथापि समग्र राष्ट्रीय विकास के क्षेत्र में तमाम चुनौतियाँ भी हैं। उनमें से एक देश के निर्धन बच्चों की शिक्षा की चुनौती प्रमुख है। जनवरी 2010 की यूनेस्को रिपोर्ट बताती है कि प्राथमिक विद्यालयों में जाने योग्य बच्चों की सर्वाधिक संख्या भारत में है जिसमें 72 मिलि 6-11 आयवर्ग के बच्चे एवं 71 मिलि0 11-14 आयवर्ग के किशोर हैं। दलित, पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति, जनजाति तथा मुस्लिम जातियों के बच्चों और बालिकाओं का सम्प्राप्ति स्तर बहुत कम है। अपर्वंचित वर्ग की इस स्थिति में त्वरित सुधार के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 पारित किया गया। अप्रैल 2010 से उक्त अधिनियम सम्पूर्ण भारत में लागू हो गया। इंगलैण्ड यू0के0 में इस आशय का प्रावधान 1870 में हो चुका था। इस प्रकार अनेक अन्य क्षेत्रों की तरह भारत शिक्षा सुधार के क्षेत्र में भी विश्व के विकसित देशों से प्राय: सौ वर्ष से भी अधिक पीछे है।

विद्यालयों की गुणवत्ता का प्रश्न

भारत अपने देश में शिक्षा के किसी भी क्षेत्र में व्यापक रूप से समान मानक के आधार पर स्तर मूलक शिक्षा का व्यापक विस्तार नहीं हुआ है। विज्ञान एवं तकनीकी तथा प्रबन्धन के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गिनी जाने वाली I.I.T,I.I.M, AIIMS, जैसे उच्च शिक्षा संस्थानों को छोड़कर अन्य शिक्षा संस्थानों में अनेक विसंगतियाँ देखी जा सकती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा में सरकारी स्तर पर केन्द्रीय विद्यालय, जवाहर नवोदय एवं राजीव नवोदय विद्यालय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कतिपय निजी शिक्षा संस्थानों की गणना अच्छे विद्यालयों में की जा सकती है किन्तु गरीब से गरीब लोगों के लिए राज्य सरकार द्वारा संचालित सरकारी पाठशालाओं में गुणवत्ता परक शिक्षा का नितान्त अभाव है। अत: नि:शुल्क एवं शिक्षा के अधिकार के प्रभावी क्रियान्यवयन तथा कुछ हद तक इस क्षेत्र में इण्टर नैट एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर भी विचार आमंत्रित करने की आवश्यकता है।

शिक्षा के अधिकार के अर्न्तगत 6-14 आयुवर्ग के प्रत्येक बच्चे को तीन वर्ष के अन्दर निकटवर्ती विद्यालयों में समाच्छादित करने का लक्ष्य है फिर भी अपर्वंचित वर्ग के स्कूल न जाने वाले तथा बीच में स्कूल छोड़ देने वाले बच्चों को समाच्छादित करने तथा उन्हें गुणवतापरक शिक्षा प्रदान करने के मार्ग में काफी बाधाएँ हैं।

क्षेत्रीय अनुभवों पर आधारित समस्याएँ-

सविद्या के अर्न्तगत विगत 5 वर्षों के क्षेत्रीय अनुभव के आधार पर अनुभूत कुछ चुनौतियाँ निम्नांकित है -

1. बाल-श्रमिकों की समस्या - बालश्रम यद्यपि कानूनन अपराध है तथापि यदि निर्धन अभिवावकों के बच्चों दिन में कोई भी काम करके कुछ पैसा कमाकर लाते है तो अभिभावक खुश होते हैं। सड़को, गलियों, बाजारों में कुछ उपयोगी सामग्री बेचकर यहां तक कि कूड़ा बीन कर भी गरीब और अपर्वंचित वर्ग के बच्चे पैसा कमाते है। ऐसी स्थिति में ऐसे बच्चों के पुनर्वास, स्कूल भेजने के लिए अभिभावकों के प्रोत्साहन या कानूनी दबाव जैसे उपायों पर विचार करना उपादेय होगा।

2. बाल अभिरक्षा केन्द्र- अभिभावकों के काम पर चले जाने पर प्राय: घर का बड़ा बच्चा छोटे अबोध बच्चों की देखरेख के लिए घर पर रहता है। ऐसे में अभिभावकों को सही दिशा देने और बालवाड़ी जैसी व्यवस्था के सुदृढीकरण की आवश्यकता है। विकलांग बच्चो की शिक्षा व्यवस्था भी विचारणीय है। बढ़ती आबादी को नियंत्रित करने हेतु अशिक्षित पिछड़े

वर्ग को भी जागरूक करने की आवश्यकता है।

3. अनुपस्थित रहने की समस्या- 1 से 1.1/2 कि0मी0 की दूरी पर सामान्यत: प्राथमिक पाठशालाओं की व्यवस्था है तथापि पर्वतीय क्षेत्र में कई स्थानों पर छिटकी आबादी में तमामों घर दूर-दूर हैं। रास्ते असुविधाजनक उबड़ खाबड़ है। बच्चों में गैर हाजिर रहने की प्रवृत्ति पाई गई हैं। अकारण विद्यालय न आने अथवा बच्चों को घर पर रोकने को हर हाल में हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

4. अस्थायी प्रवास- पर्वतीय क्षेत्र में कुछ लोग काम की खोज मे अथवा मौसम के अनुसार ठण्डें-गरम स्थानों में सपरिवार स्थानान्तरित हो जातें है। ऐसे में स्कूल जाने वाले बच्चों का व्यवधान हो जाता है। अत: अभिभावकों को प्रेरित किया जाय कि जहाँ कुछ अवधि के निवास करें, समीपवर्ती विद्यालय में बच्चों को भेजें।

5. प्रतिकूल मौसम- कभी भीषण बारिश, कभी तपती लू तो कभी हाड़कँपा देने वाली ठंडक छात्रों की नियमित उपस्थिति में बाधक हो जाते हैं। जिलाधिकारी मौसम से होने वाली किसी भी अनहोनी की आशंका से बचने के लिए निश्चित समय के लिए विद्यालयों को बन्द रखने के आदेश निर्गत कर देते है। मौसम जन्य दुर्घटना प्राय: होती रहती हैं। इनके कुप्रभाव से बचने के लिए विद्यालय बन्द करने का आदेश सरल उपाय है। किन्तु पढ़ाई की क्षतिपूर्ति जन्य विकल्प पर भी विचार किया जाना आवश्यक है। शिक्षण दिवसों में कमी नहीं आनी चाहिए अन्य अवकाश दिवसों पर कार्य कर प्रतिपूर्ति होनी चाहिए। शीतावकाश /ग्रीष्मवकाश से समय निकाला जा सकता है। मौसम के अनुसार छात्रों को बरसाती छत्री/ गरम कपड़े वितरित करने पर भी सोचा जा सकता है।

6. पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता - पाठय पुस्तकें सत्रारम्भ में छात्रों को उपलब्ध हो जानी चाहिए। देखा गया है सत्र प्रारंभ होने के 4-6 माह बाद तक पाठय पुस्तकें सुलभ कराने का क्रम चलता रहता है। इससे पठन-पाठन क्रम बाधित होता हैं। विलम्ब के लिए उत्तरदायी संस्था/अधिकारी की जवाब देही सुनिश्चित की जानी चाहिए। दूसरी ओर अभिभावकों के अन्दर इतनी जागरूकता होनी चाहिए कि तब तक पूर्व छात्रों से पुस्तकें लेकर तात्कालिक व्यवस्था कर ली जाय। शासन और स्थानीय जनता के परस्पर सहयोग से उपयोगी पुस्तको का संकलन कर विद्यालयों में पुस्तकालयों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

7. भाषा बोली की भिन्नता से लेकर विभिन्न आर्थिक- सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चे विद्यालय में पढ़ने आते हैं। घर का वातावरण, पास-पड़ोस, बालक की ग्रहण क्षमता आदि कई बातें हैं जो बच्चों की शैक्षिक प्रगति को प्रभावित करती है। शिक्षा के उच्च स्तर के अभाव में छात्र पढ़ने में रूचि नहीं लेते और विद्यालय जाने से जी चुराते हैं। अत: शिक्षकों को चाहिए कि शिक्षण विज्ञान के मूल सिद्धान्तों के अनुरूप बच्चों की वैयतिक भिन्नता के अनुरूप उनकी अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित होने का अवसर प्रदान करें। विद्यालयों में खेल-कूद विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, लोकगीत-लोकनृत्य, विभिन्न पाठ्येत्तर व पाठ्य सहगामी क्रिया-कलाप योग-स्काउट आदि की व्यवस्थाएँ शिक्षण व्यवस्था को प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध होंगी।

8. उपचारात्मक शिक्षण- पढ़ने लिखने में अति कमजोर छात्रों पर विशेष अवधान केन्द्रित करने की आवश्यकता होगी। शैक्षिक सम्प्राप्ति का एक न्यूनतम स्तर तो निर्धारित करना ही होगा। जो छात्र न्यूनतम निर्धारित स्तर से भी नीचे हों उनके निदानात्मक परीक्षण व उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था भी विचारणीय है। इसके लिए अतिरिक्त समय व संसाधन जुटाना उपादेय होगा?

9. आत्मविश्वास की वृद्धि- बच्चों को अन्दर समाहित संकोच व हिचक को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए। साफ स्वच्छ गणवेश, कक्षा में बैठने की अच्छी व्यवस्था विद्यालय का अच्छा परिवेश बच्चे के अन्दर आत्मविश्वास जगाने में सहायक सिद्ध होंगे। इस दिशा में प्रयास होने चाहिए। विद्यालयों में ढॉचागत सुधार की अपेक्षा की जाती है। विद्यालय का अच्छा भवन, अच्छे शिक्षण का छात्र-छात्राओं के लिए पृथक शौचालय शुद्ध पेयजल, खेल का मैदान, पुस्तकालय वाचनलय विज्ञान उपकरण, बैठने की सुचारू व्यवस्था, मूलभूत आवश्यकताएँ हैं।

10. शिक्षकों की गुणवत्ता का प्रश्न- शिक्षा व्यवसाय में उच्च गुणसम्पन्न शिक्षकों की पर्याप्त आपूर्ति से अधिक महत्वपूर्ण

कुछ भी नहीं है। कुछ इस प्रकार की भावना की गई भी शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन में नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार को विलम्ब से ही सही प्रायोजित करते समय हमें हर स्तर पर आत्ममंथन करना होगा कि इस क्षेत्र में हमारी सफलता क्या हैं? इस परिप्रेक्ष्य में निम्नांकित बिन्दु महत्वपूर्ण हैं-

शिक्षकों की कार्य निष्ठा, राष्ट्रीय मानकों के आधार पर छात्र-शिक्षक अनुपात का अनुपालन। विद्यालय स्तर पर इसका अनुपालन होना चाहिए। विकास खण्ड अथवा जिला आधारित नहीं, एक शिक्षकीय विद्यालय नहीं होने चाहिए। न्यूनतम शिक्षक संख्या दो होनी चाहिए जहाँ तक संभव हो शिक्षक छात्र अनुपात 1:25 किया जाय ताकि छात्रों पर व्यक्तिगत अवधान केन्द्रित करने व शिक्षा का स्तर उठाने में आसानी हो। न्यूनतम मानक से कम छात्र संख्या वाले विद्यालयों को बन्द कर दिया जाय ताकि छात्र दूसरी निकटवर्ती पाठशाला में जा सकें।

पूर्व सेवा प्रशिक्षण व पुनर्बोधित्मक प्रशिक्षण व्यवस्था सुचारू व प्रभावशाली बनाई जाय। अवकाश प्राप्त शिक्षकों शिक्षाविदों का संवारत प्रशिक्षणों में स्वैछिक सहयोग प्राप्त करना लाभदायक होगा। इस कार्य हेतु मानदेय की व्यवस्था होनी चाहिए। उन्हें मोनिटरिंग और फीड बैक के कार्य में लगाया जा सकता है। हमारी संस्था हिमवत्स द्वारा चम्पावत में अंगीकृत विद्यालयों में यह प्रयोग किया जा रहा है। विश्व के विकसित राष्ट्रों के सापेक्ष शिक्षक के लिए सप्ताह में 40 घण्टा कार्य में उपस्थित रहना चाहिए। निर्धारित कार्य दिवसों का सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। शिक्षणेतर कार्यों में शिक्षकों को नियोजित करने से शिक्षा के अधिकार के कानून का निहितार्थ पूरा नहीं होता। उक्त बिन्दुओं पर गंभीर विचार मंथन की आवश्यकता है।

11. गुणात्मक शिक्षा- गुणात्मक स्वरूप से रहित शिक्षा का कोई अर्थ है ही नहीं। शिक्षा पर खर्च किया जाने वाला श्रम, समय और धन तभी सार्थक है जब शिक्षा गुणात्मक हो। नामांकन का लक्ष्य प्राप्त कर लेना भर शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य नहीं है क्योंकि शिक्षा एक अनुष्ठान नहीं है। इस बात को राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्वीकार किया गया है। अत: शिक्षकों की कार्य निष्ठा व प्रधानाध्यापकों की समर्पणशीलता तथा प्रभावी निर्देशन व पर्यवेक्षण सर्वोपरि है।

12. सामाजिक चेतना एवं सरकारी विद्यालयों की छवि- आम आदमी किसी हद तक काफी जागरूक भी हो चुका है। विशेष रूप से बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए अधिकतर अभिभावकों में चेतना जगी है। सरकारी पाठशालाओं में नि:शुल्क पाठ्यसामग्री तथा अन्य कई सुविधाओं की परवाह न कर गरीब से गरीब तमाम लोग कठिन श्रम करके अपना पेट काटकर भी निकटवर्ती व्ययसाध्य निजी स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ा रहे हैं। सरकारी तंत्र के सामने इससे बड़ी चुनौती और क्या हो सकती है? सरकारी स्कूलों को अपनी छवि इतनी उज्जवल करनी होगी कि धनवान् व प्रबुद्ध वर्ग के लोग स्वत: सरकारी स्कूलों की ओर आकृष्ट हों और अपने बच्चों को वहां पढ़ावें।

13. भ्रष्टाचार का दानव- दुर्भाग्य से देश में भ्रष्टाचार का दानव सक्रिय है। किसी योजना की तह तक, कहा जाता है कि 5 से 10 प्रतिशत बजट ही जा पाता है। भ्रष्टाचार देश के रक्त में ही नहीं हेमोग्लोबिन में जा चुका है। कुछ तुम खाओ कुछ हम ऐसी हमारी मानसिकता हो चुकी है। वर्तमान में शिक्षा के अधिकार के क्रियान्वयन के लिए स्वीकृत 6 लाख करोड़ रू0 की राशि, सुनियोजित प्रबन्धन और उपयोग पर निर्भर है अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा का दारोमदार शिक्षा की चुनौती नीति सम्बन्धी परिपेक्ष्य-1985 में व्यक्त इस भावना पर आत्ममन्थन करना होगा कि 'यदि साधनों की कमी और व्यवस्थापक परिवर्तन न होने के कारण शिक्षा तंत्र इस तरह कुंठित न हो गया होता तो आज की शिक्षा की तस्वीर कुछ और ही होती।'

कोई भी योजना तभी सफल होती है जग सही रूप से क्रियान्वित हो। उक्त क्षेत्रों में हम संवैधानिक वचनबद्धता से ही 50 वर्ष पीछे है। लक्ष्य के सापेक्ष सफलता के प्रति हमें आशान्वित होना होगा।

शिक्षा के अधिकार की समीक्षा

शिक्षा का अधिकार कानून के अर्न्तगत निकटतम विद्यालय छात्र को प्रवेश देने से मना नहीं कर सकते। किसी भी प्रकार की प्रवेश परीक्षा गैर कानूनी मानी गई है। ऐसी स्थिति में जवाहर नवोदय/राजीव नवोदय विद्यालयों व सैनिक स्कूल जैसी शिक्षा संस्थाओं की स्थिति क्या होगी। तब उनमें प्रवेश परीक्षा क्यों? स्थिति स्पष्ट नहीं है। 6-14 आयुवर्ग के लिए आठ

वर्षीय पाठयक्रम के अन्तर्गत परीक्षा लेने और फेल करने पर भी कानूनी प्रतिबन्ध है। तब केवल नामांकन पूरा कराना और आठ वर्ष तक छात्रों को विद्यालय में रोकने मात्र से शिक्षा का संवैधानिक उद्देश्य पूरा नहीं होगा। अधिनियम में सरकारी विद्यालयों की गुणवत्ता और फलित पर भी प्रश्न चिह्न लगाया गया है जिनकी संख्या कुल मान्यता प्राप्त विद्यालयों की 80 प्रतिशत से कम नहीं है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रारंभिक दस्तावेज में यह स्पष्ट उल्लेख है कि बच्चे किसी भी जाति, लिंग, क्षेत्र, आर्थिक स्तर के क्यों न हो, उन सभी को अच्छी प्रारंभिक शिक्षा देने के लिए हम संविधान के अनुसार वचनबद्ध हैं।

6-14 आयुवर्ग के बच्चों की शिक्षा में व्यवधान डालने एवं बालश्रम लेने पर रू0 10000 तक के जुर्माने का प्रावधान है। इसके अन्तर्गत अभिभावकों की भूमिका निर्धारित करने एवं बालश्रम को परिभाषित करने की भी आवश्यकता है। प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में हम अपने निर्धारित लक्ष्य से पीछे हैं। अब समय आ गया है जब शिक्षा-प्रशासन, शासन एवं समाज इस लक्ष्य को पूरा करने के प्रति निष्ठावान एवं जागरूक हैं। अभिवावकों की इस महान कार्य में विशेष भूमिका होगी।

मेरे अनुभव : साविद्या के साथ

-- रितेश तिवारी बी०टैक० (आई.आई.टी. रूड़की)

साविद्या से मेरा परिचय आज से करीब डेढ़ साल पुराना है। इससे पूर्व मेरी जानकारी हिमवत्स नामक संस्था तक सीमित थी जो कि डॉ0 एच0डी0 बिष्ट जी के मार्गदर्शन में मैं भली भाँति अवगत नहीं था। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान अनायास ही एक दिन मैने गूगल सर्च इंजन में चम्पावत सर्च किया तो वहाँ साविद्या का लिंक मिला। वहीं एक इंजीनियरिंग स्नातक छात्र द्वारा प्रेषित रिर्पोट मिली, जिसने कुछ माह पूर्व ही संस्था द्वारा अंगीकृत विद्यालयों का निरीक्षण किया था। इस छात्र की रिर्पोट ने मुझे काफी प्रभावित किया और मैंने सोचा कि डिग्री पूरी होने के बाद ग्रीष्मावकाश में मैं भी अपनी सेवाऐं संस्था को दे सकता हूँ। दीपावली अवकाश में मैंने अपनी इच्छा संस्था के संरक्षक श्री जी0बी0 रस्यारा जी के सामने रखी, उन्होंने शाबासी देते हुए कहा कि तुम्हारा स्वागत है, और इच्छा अब निर्णय में बदल गयी, इसी बीच सातवें सेमेस्टर की परीक्षाओं के दौरान मैं बीमार पड़ गया और परीक्षा खत्म होने के बाद बीमारी और बढ़ गई। पेट से शुरू हुआ दर्द, कमजोरी तेज सिर दर्द में तब्दील हो गया। विजन blunred धुंधला हो गया था। कहाँ एम0टेक0 की प्रवेश परीक्षा देनी थी, यहाँ पहुँच गया अस्पताल में, पाँच महीने आराम व इलाज के बाद लिख व पढ़ पाने में सक्षम हुआ और आठवें सेमेस्टर की परीक्षा उर्तीण कर डिग्री प्राप्त की। इलाज जारी था मैं लिख पढ़ सकता था पर कोई सूक्ष्मक कार्य करने में परेशानी थी। ज्यादा पढ़ता तो सिरदर्द, ज्यादा टी0वी0 देखता तो सिरदर्द। घर में अकेले समय व्यतीत करना मुश्किल था और मैं सोच रहा था कैसे मैं खुद को व्यस्त रखूँ। तो एक दिन कमलेश सर ने सुझाव दिया क्यों नहीं तू कुछ दिन साविद्या में काम कर लेजा है? मुझे अपना निर्णय याद आया जो कि मैं भूल ही चुका था इस आपाधापी में और सुझाव भी पसन्द आया। रोजाना 3-4 किमी चलना भी हो जायेगा, क्योंकि दवाईयों से शरीर फूल रहा था और इससे अधिक महत्वपूर्ण वो काम भी कर पाऊंगा जो मैं करना चाहता था। तो अगले दिन प्राथमिक पाठशाला कूलेठी पहुँचा, मैनेजर श्री एम0सी0 रस्यारा जी के सामने अपनी इच्छा जाहिर की, उन्होने गर्मजोशी से स्वागत किया और 3 जून 2010 मै एक स्वयंसेवी के रूप में संस्था से जुड़ गया। मेरा मानना है कि शिक्षा पीढ़ियाँ बना सकती है व पीढ़ियाँ परिवर्तन भी कर सकती है। शिक्षा का प्रभाव केवल पढ़ने वाले छात्र पर ही नही पढ़ता अपितु एक सुशिक्षित छात्र/छात्रा आगे चलकर एक सुशिक्षित पिता/माँ/पति/पत्नी तथा विस्तृत रूप में एक सुशिक्षित पीढ़ी का प्रणेता बनता है।

शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं है, शिक्षा वह है जो हमें जीविका देती है, जो हमें व्यावहारिक बनाती है, जो हमें एक सोच देती है तथा जो हमें जीना सिखाती है। इसलिए शिक्षक का स्थान समाज में सर्वोपरि है। चिकित्सक के हाथ में केवल उसके मरीज का जीवन होता है, पर शिक्षक के हाथ में छात्र के साथ-2

उसकी पूरी पीढ़ी का जीवन होता है, ऐसी ही विचारधारा के साथ मैं साविद्या से जुड़ा, जिससे कि ऐसी व्यवहारिक शिक्षा उन बच्चों को दे सकूं जो कि साधनहीन है तथा जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से विपन्न हैं। विज्ञान वर्ग से होने

के कारण मैने LASRC (learning and science resource center) में काम शुरू किया। LASRC एक ऐसा केन्द्र है जहाँ प्राथमिक स्तर से लेकर बारहवीं तक के स्तर के प्रयोग विशेषकर भौतिकी के उपलब्ध हैं। प्रयोग जो कि परम्परागत प्रयोगों से अलग हैं, बेकार सी दिखने वाली व सस्ती चीजों से बने हैं, परन्तु विज्ञान के जटिलतम रहस्यों को सरलता से समझाते हैं। इन प्रयोगों को डिजाइन किया है, आई0आई0टी0 कानपुर के प्रोफेसर डॉ0 एच0सी0 वर्मा जिनकी Concept of physics" पढ़ कर ही हमने इंजीनियरिंग की परीक्षाऐं दी हैं, मैं काफी उत्साहित था, बीमारी का ध्यान यदा कदा ही आता, यद्यपि विजन अभी भी धुँधला था। दो से तीन घण्टे LASRC में आराम से व्यतीत हो जाते, उसके बाद आराम और शाम को घूमना मै बीमार कहाँ था? कोई कह सकता था क्या कि मैं बीमार हूँ।

ग्रीष्मावकाश में हमने निर्णय लिया कि एक ओपन समर सांइस कैंप का आयोजन करेंगे। जिसमें कोई भी विद्यार्थी, किसी भी कक्षा का 6 से 12 तक, किसी भी विद्यालय का पंजीकरण करवा सकता था। समर कैंप शुरू हुआ, मैं भिन्न 2 प्रयोग दिखाता और उसके सिद्धान्त को समझाता और क्यूरेटर गौरव बोहरा प्रयोग प्रदर्शन में मेरी मदद करता। समर कैंप का आयोजन अच्छा रहा। औसतन प्रतिदिन पच्चीस से तीस छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

ग्रीष्मावकाश के बाद मैंने सोचा क्यों न कक्षाओं के पाठ्यक्रम के अनुसार प्रयोगों के माड्यूल बनायें। हर कक्षा के लिए अलग माड्यूल जिससे छात्र पाठ्यक्रम को व्यावहारिक रूप से समझ सकें, इसी बीच दो पब्लिक स्कूल 1 मल्लिकार्जुन पब्लिक स्कूल 2 बीयरशेवा पब्लिक स्कूल के कक्षा नौ एवं दस के छात्र/छात्राऐं भी थे। मैंने व गौरव ने इन्हें पाठ्यक्रम के अनुरूप बने माड्यूलों के अनुसार प्रयोग दिखाऐ। यह प्रयोग उनके पाठ्यक्रम से सम्बन्धित थे तथा वे विषय को प्रयोगों द्वारा व्यावहारिक रूप से समझ रहे थे। पब्लिक स्कूलों के साथ-साथ, हमारे अंगीकृत विद्यालयों के छात्र भी प्रयोग सीखने LASRC आते थे, परन्तु नियमित रूप से नहीं इसके पीछे भी कई व्यवहारिक परेशानियाँ थी। उनके नियमित न आने से मुझे बड़ा कष्ट होता, क्योंकि यदि प्रयोग छात्र नहीं सीखेंगे तो सारी चीजों का फायदा क्या? तो मैंने सुझाव दिया क्यों न मैं व गौरव अंगीकृत विद्यालयों में सप्ताह में एक निर्धारित दिन कुछ प्रयोगों के साथ जायें व छात्रों को प्रयोग दिखायें। सुझाव के निर्णय में परिवर्तित होने में देर न लगी प्रारम्भ में जूनियर स्कूल खर्ककार्की व डूँगरासेठी में क्रमशः सोमवार व शुक्रवार को जाना निश्चित हुआ। हम हफ्ते में दो दिन किसी एक कक्षा के माड्यूल के अनुसार प्रयोग दिखाने इन स्कूलों मे जाते तथा बाकी के चार दिन शेष माड्यूल बनाने तथा प्रयोगों की मरम्मत का काम करते। अब मुझे व्यवहारिक कठिनाइयों का भान हुआ, कि क्यों खर्ककार्की से कुलेठी (दोनों के मध्य लगभग 5 कि0मी0 की दूरी है छात्रों का हर सप्ताह आना मुश्किल है। इसी बीच प्रयोगात्मक परीक्षाओं की तैयारी के कारण मैनें LASRC जाना कम किया और अब तो लगभग बन्द ही हो चुका है। लेकिन अब गौरव अकेले स्कूलों में जाता है, हर हफ्ते एक निंधारित क्रम में। मैं जब साविद्या से जुड़ा था तो मैं सोचता था कि मैं निर्धन बच्चों के लिए कुछ करने जा रहा हूँ। पर जितना भी थोड़ा-बहुत मैंने उन्हें सीखाया, उससे कहीं ज्यादा मैनें उनसे सीखा ये बच्चे निर्धन नहीं है, वो तो बस निर्धन अभिभावकों के बच्चे है। ये उतने ही प्रतिभाशाली हैं, जितने कि हम मध्यवर्गीय या उच्चवर्गीय परिवार के बच्चे। उनकी जिज्ञासा गरीबी से दबी नहीं है, ये उतने ही जिज्ञासु है, जितने कि पब्लिक स्कूलों के छात्र। उन्हें तो पता ही नहीं कि गरीबी क्या है और अमीरी क्या। वे मस्त हैं, आनन्दित हैं बचपन में। कई बार ये आपको आश्चर्यचकित करते हैं, अपने जवाबों से, अपने कामों से। इन बच्चों ने मुझे कही कुछ सीखाया। डॉ0 एच0डी0 बिष्ट कई बार ई-मेल के अन्त में मुझे लिखते थे कि इन बच्चों की दुआऐं तुम्हें जल्दी अच्छा करेंगी। और ये हुआ भी, धीरे-धीरे पता नहीं कब एक दिन LASRC में काम करते करते मेरा विजन बिल्कुल साफ हो गया। मैं अक्सर खुद से कहता हूँ I joined Savidya with blurred vision,but when I left I have clear vision" मेरी आँखो का विजन भी साफ हुआ व काफी हद तक जीवन का भी, और इसमें बहुत बड़ी भूमिका इन बच्चों की रही।

मैं पुनः कह रहा हूँ यह छात्र/छात्राऐं निर्धन नहीं है, अपितु निर्धन है तो हमारी शिक्षा प्रणाली तथा सरकारी स्कूलों की जर्जर हालत जो इन्हें निर्धन हि रहने देती है। छात्रों के जवाबों ने मुझे कई बार आश्चर्यचकित किया, एक उदाहरण प्रस्तुत करूँगा। एक बार खर्ककार्की में घर्षण बल समझाने के बाद मैंने छात्रों से पूछा कि अपने जीवन या आसपास से घर्षण का कोई उदाहरण दो। एक छात्र खड़ा हुआ और बोला, 'सर चप्पल, जब बो घिस जाते हैं तो हम फिसलते हैं'। मैं आश्चर्यचकित था, क्या उदाहरण था उस छात्र ने घर्षण का बिल्कुल व्यावहारिक उदाहरण दिया, जो वह अपने जीवन में अनुभव कर चुका

था। क्या आप कहेंगे कि ये छात्र गरीब है, पिछड़े हैं। ऐसे ही कई उदाहरण मेरे सामने आये जो प्रदर्शित करते हैं कि मेधा व प्रतिभा की कमी नहीं हैं, इन बच्चों में। कमी है तो प्रयासों की जो इन्हें निखार सके। और यही प्रयास 'साविद्या' कर रही है। चम्पावत क्षेत्र में अपने सात अंगीकृत विद्यालयों में हर उस सुविधा व मौके को उपलब्ध करा कर, जो सरकारी तंत्र नहीं कर पा रहा है। और इसके परिणाम दिखाते हैं, जब प्रार्थना में 10 साल की बच्ची मधुर ताल में ढोलक बजाती है और उसकी हम उम्र सहपाठी हारमोनियम में कोई प्यारी धुन छेड़ती है। तब दिल खुद को गरीब कहता है। अंगीकृत विद्यालय के छात्र पब्लिक स्कूलों से फुटबाल व क्रिकेट मैच खेलते हैं व फाईनल, सेमी फाइनल तक पहुँचते हैं। प्रतिवर्ष कुछ छात्र जवाहर नवोदय विद्यालय के लिए चयनित होते हैं तो संस्था द्वारा विद्यालयों में नवोदय परीक्षा के लिए दी जा रही, कोचिंग की सार्थकता सिद्ध होती है। परिणाम आ रहे हैं, पर धीरे-धीरे।

एक बार मैंने डॉ0 बिष्ट को लिखा,
'फल आयेंगे जरूर, चाहे देर से, एक दिन उस वृक्ष में जो कि रोंपा गया है व सींचा गया है आपके द्वारा, चम्पावत जैसे मरूस्थल में, जहाँ लोग गैर सरकारी संगठनों को भ्रष्टाचार का पर्याय कहते हैं।' और अन्त में, मेरा अनुभव साविद्या में काफी कुछ सीखने वाला रहा। एक पारदर्शी संस्था, बच्चों को समर्पित शिक्षक, काम करने का व्यवस्थित ढंग, सुझाव देने की आजादी, काम करने की स्वतन्त्रता लोकतान्त्रिक प्रणाली, ये है साविद्या के मेरे अनुभव और उम्मीद है मुझ जैसे साधारण छात्र, से जो न तो विज्ञान का विद्वान है और न अध्यापन में निपुण, द्वारा पढ़ाये गये विषयों को जब छात्र सोचेंगे तो गैर परम्परागत तथा व्यावहारिक ढंग से सोचेंगे और उन्हें दवाईयों से फूले इस मोटे सर की याद जरूर आयेगी।

मधुमेह होने पर भी स्वस्थ कैसे रहें?

-डॉ०ए०बी० मोवार एम०डी० सहा० प्रोफेसर, मेडीसिन
-एस०आर०एम०एस० चिकित्साविज्ञान संस्थान- बरेली

जैसा हम जानते है कि आजकल मधुमेह एक आम बीमारी का रूप ले चुकी है। स्त्री-पुरूष काई भी किसी भी आयुवर्ग में इससे प्रभावित हो सकते है। यदि समय पर इसका उपचार न कराया जाय तो इसके कई दुष्परिणाम हो सकते हैं। इससे जीवन ही प्रभावित नहीं होता वरन् व्यक्ति तथा परिवार पर बड़ा आर्थिक बोझ भी आ जाता है। अत: हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम बीमारी के आवश्यक पहलू को जानें।

निम्नांकित लक्षण मधुमेह की शंका जताते है-

1 अधिक पेशाब होना (Polyuria)
2 अधिक भूख लगना अथवा अधिक भोजन करना (Polyphagia)
3 अधिक प्यास लगना (Polydypsia)
4 त्वचा के संक्रमण होना, विशेष रूप से फंगल इनफैक्शन
5 जटिल लैग अल्सर होना
6 थकान, वनज घटना तथा टाँगो में खॉय-खॉय होना
7 नजर का उतार-चढ़ाव।

मुख्य रूप से मैटाबोलिक गड़बड़ाने अथवा असन्तुलन के कारण यह स्थिति पैदा होती है जिससे पैंक्रियाज की क्रिया गड़बड़ा जाती है। पैंक्रियाज इंसुलीन बनाते हैं तथा शर्करा को नियमित करते हैं। पैंक्रियाज के असन्तुलन के कारण शरीर में असामान्य रूप से शर्करा का स्तर बढ़ जाता है।

मधुमेह के लिए उत्तरदायी कारक-

1. पारिवारिक पृष्ठभूमि 2 मोटापा 3. उम्र 45 से अधिक 4 पूर्वकारक, ग्लूकोज अवशोषण क्षमता की कमी 5 उच्च रक्तचाप> 140/90 ml 6. मन्द्राग्नि या अजीर्ण 7. पोलिसीस्टिक ओवरी सिन्ड्रोम।

सावधानी बतौर 45 वर्ष की आयु के बाद हर स्त्री-पुरूष को कम से कम वर्ज में एक बार रक्तशर्करा की जॉच करा लेनी चाहिए। यदि समुचित उपचार न कराया गया तो कई दुष्परिणाम हो सकते हैं। उनमें से कुछ प्रमुख निम्नांकित हैं-

1 आँख अन्य बीमारी- मोतियाबिन्द, अंधापन 2. स्नायु सम्बन्धी- हाथ-पावों की जलन, सनसनाहट, पैरों का सुन्न होना, 3. गुर्दे फेल होना, एलब्यूमिन निष्क्रमण 4. हृदय विकार-एंजाइना, साइलैन्ट हार्ट एटैक हृदयगति रूकना, 5 टाँगो/पैरों के विकार- गैंगरीन, फूट अल्सर, अंगविच्छेद 6 मस्तिष्क संबन्धी विकार- कोमा, पैरालिसिस लकवा, मस्तिष्काधात 7 पेट के विकार- मलावरोध, पेट भराभरा रहना, मिचली आना, उल्टी होना, 8.त्वचा व नाखूनों के विकार, फंगल संक्रमण, घाव भरने में विलम्ब, 9 पुरूषों में नपुंसकता के लक्षण
10. मसूढ़ो का संक्रमण, कैविटी आदि।

उपर्युक्त पहलुओं के आलोक में यदि किसी व्यक्ति को मधुमेह (Diabetes) है तो दैनिक जीवन में स्वस्थ रहने और जटिलताओं से दूर रहने के लिए कुछ सावधानियां बरतनी चाहिए। उनमें मुख्य हैं-

1 **आहार**- आहार में नियंत्रण जरूरी है। प्राय: इसकी अनदेखी की जाती है। शरीर के वजन के अनुरूप में कैलौरी अनुपात को देखते हुए आहार लेना चाहिए। डाइटिशियन एवं चिकित्सकों से परामर्श कर डाइट चार्ट का अनुपालन करना चाहिए। मिठाइयाँ, चावल, आलू, चीनी, अधिक मीठे फल जैसे आम, पपीता, सकरकन्द आदि वर्जित हैं।

2 **व्यायाम**- शर्करा के लेवल को नियंत्रित करने में व्यायाम बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। 15-20 मिनट तक (ब्रिस्क वाक) घूमना लाभदायक है। ऐसे कठिन व्यायाम से दूर रहना चाहिए जिससे कोई अन्य दुष्परिणाम हों।

3 ब्लड सुगर की नियमित जाँच अपने चिकित्सक के परामर्श के अनुसार करावें।

4 दवाओं को नियमित प्रयोग करें तथा निंधारित मात्रा के अनुरूप इन्सुलिन लें।

5 वनज कम करें। डाइबिटीज को नियंत्रित करने का सबसे अच्छा उपाय वजन को नियंत्रित करना है।

6 जीवन शैली में सुधार- बैठे रहने की आरामतलब जीवनशैली से दूर रहें। नशीली दवाओं के प्रयोग से बचें अच्छे, अनुभवी चिकित्सक से इलाज करावें। 3 से 6 माह की अवधि में नियमित रूप से रक्त शर्करा की समीक्षा कराते रहें। आवश्यकता पड़ने पर ई.सी.जी. अथवा अन्य परीक्षण भी करावें।

मधुमेह का रोगी यदि सामान्य रूप से अपनी आदतों पर नियंत्रण रखे और उपर्युक्त सावधानियाँ बरते तो वह न केवल सुखी, स्वस्थ एवं सामान्य जीवन जी सकता है वरन् मधुमेह जन्य परेशानियों से भी बच सकता है।

(मूल अंग्रेजी लेख का हिन्दी रूपान्तरण)

विविध

1. रोगों का प्राकृतिक उपचार

रोग प्राय: शरीर की आन्तरिक क्रियाओं के असन्तुलन तथा खान-पान, रहन-सहन व आचार विचार सम्बन्धी अनियमितता से होते हैं। हमारे आम जीवन में प्रयोग होने वाली शाक-सब्जियॉ, फल-फूल तमाम रोगों के उपचार में सहायक और कभी-कभी तो अचूक सिद्ध होते है। कुछ उपयोगी नुस्खे नीचे दिये जा रहे है।

	रोग का नाम		उपचार
1.	सिरदर्द	-	मछली खाना लाभप्रद है। मछली के तेल की मालिश सिरदर्द में राहत देती है।
2.	अनिद्रा	-	अदरक और शहद का प्रयोग करें। अदरक सूजन व दर्द में राहत पहुँचाता है। शहद टॅक्यूलाइजर का काम करता है।
3.	दमा	-	भोजन में प्याज का प्रयोग करें। प्याज श्वसन तंत्र की रूकावट को दूर करता है। श्वसन क्रिया में राहत देता है।
4.	आर्थराइटिस		आर्थराइटिस में मछली खावें, आराम पावें, मछली के तेल से प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है
5.	हृदयाघात		चाय के नियमित प्रयोग से धमनियों मे वसाजन्य अवरोध कम हो जाता है प्रतिरोधक

क्षमता बढ़ाने में ग्रीन टी उपयोगी है।

6. - पेट की गड़बड़ी पेट की गड़बड़ी में केले और अदरक का प्रयोग मुफीद है। केला पेट को नियमित करता है अदरक मिचली रोकता है।

7. - हड्डियों का दर्द- अनानास का जूस पीवें। इसमें पाये जाने वाले मैंगजीन से फ्रैक्चर की सम्भावना कम हो जाती है।

उपयोगी नुस्खे:- सर्दी-जुकाम लहसुन का प्रयोग करें। खाँसी- कालीमिर्च और तुलसी के पत्ते चबावें। छाती का कैंसर- इसमें बन्दगोभी व चोकर युक्त गेहूँ का आटा लाभप्रद है। फेफड़ों का कैंसर- हरी सब्जियाँ व सन्तरे का प्रयोग लाभकारी है। अल्सर- बन्दगोभी खावें इसमें अल्सर के घावों को भरने का गुण है। डायरिया- केला और अंगेठी में सेका हुआ सेव लाभ पहुंचाता है। उच्च रक्त चाप- अजवाइन खावें। जैतुन का तेल उच्च रक्तचाप को कम करता है। ब्लड शुगर- हरी फूलगोभी और मूंगफली खाने से लाभ होता है।

---

2. हल्दी अनेक रोगों की एक दवा (हरिद्रा सर्वोषधिः)

भारतीय परम्परा में हर शुभ कार्य में प्रयुक्त होने वाली हल्दी अनेक रोगों की सर्वोत्कृष्ट औषधि है। हमारे खान-पान में इसका नियमित प्रयोग होता है। हल्दी उत्कृष्ट का काम करती है।

हल्दी के प्रमुख गुण निम्नांकित हैं-

1. खाने में हल्दी के प्रयोग से आखों की रोशनी बढ़ती है।
2. हल्दी रक्तविकार को दूर करती है।
3. बेसन में हल्दी और सरसों का तेंल मिलाकर उबटन करने से सूखी त्वचा नरम और मुलायम होती है।
4. हल्दी कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने में सहायक होती है।
5. भोजन में हल्दी के प्रयोग से वसा का जमना रूकता है।
6. इसके प्रयोग से एल्जाइमर जैसी बीमारी की आशंका कम हो जाती है।
7. रात को हल्दी डालकर दूध पीने से हड्डियां मजबूत होती हैं।
8. हल्दी कॉलेस्ट्रोल जमने से रोकती है।
9. लीवर की कार्य प्रणाली को दुरूस्त करती है।
10. हल्दी के नियमित प्रयोग से मधुमेह की आशंका कम हो जाती है।

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य कि वह-

क- संविधान का पाजन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।

ख- स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें।

ग- भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे ओर उसे अक्षुण्ण बनाए रखे(

घ- देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।

ङ- भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो महिलाओं के सम्मान के विरूध हो।

च- हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।

छ- प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन झील, नदी और वन्य जीव हैं रक्षा करें और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे।

ज- वैज्ञानिक दृष्टिकोण, माननवाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।

झ- सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे

व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके और

ट- यदि माता- पिता संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

---

4. नवोदय विद्यालय के प्रतिभाशाली छात्रों के लिए आर्कषक उपहार- दक्षिणा फाउण्डेशन

प्रतिभाशाली छात्रों के लिए इंजीनियरिंग तथा मैडिकल के क्षेत्र में अध्ययन करने हेतु गरीबी कोई रोड़ा नहीं हैं। यू0एस0ए0 में कार्यरत स्वयंसेवी संस्था दक्षिणा फाउण्डेशन गरीबी के खिलाफ प्रतिभाशाली छात्रों को राहत प्रदान करती है। इसकी स्थापना मोहनिस पबराय और उनकी पत्नी हरिना कपूर द्वारा की गई। दक्षिणा फाउण्डेशन का इण्डिया एजूकेशन ट्रस्ट भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त न्यास है। फाउण्डेशन आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछडे ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिभाशाली छात्रों को मैडिकल एवं इंजीनियरिंग की कोचिंग और उसके बाद पूरी पढ़ाई के लिए आर्थिक मदद करता है। नवोदय विद्यालय से निकलने वाले छात्रों को प्रायः यह सहायता प्रदान की जाती है।

जवाहर नवोदय विद्यालय में प्रवेश की तैयारी :

नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा की तैयारी के लिए छात्रों की ली गयी परीक्षा का परिणाम:-

8/01/2010

विद्यालय छात्र का नाम	प्राप्तांक 100 में	विद्यालय छात्र का नाम	प्राप्तांक 100 में	विद्यालय छात्र का नाम	प्राप्तांक 100 में	विद्यालय छात्र का नाम	प्राप्तांक 100 में
कुलेठी		**डुंगरासेठी**		मनीष	66	मुकेश	39
रेखा बिष्ट	78	गौरव	68	रूबी भण्डारी	59	पूजा टम्टा	A
युवराज	84	अमन सिंह	67	चंचल चन्द्र	51	**बडौला**	
पूर्णिमा	67	आशीष	51	मन्जू आर्या	14	राधा बोहरा	68
ज्योति	70	**ढकना**		**खर्ककार्की**		तनूजाबोहर	50
बबीता	62	संजय सिंह	68	रजनी	66		
मनोज	60	सौरभ	61	निकिता	57		

मैसर्स पाण्डे स्टेशनरी व जनरल स्टोर

एवम्

पाण्डे ट्रेडर्स हल्दूचौड़ (नैनीताल)

हमारे यहाँ प्रतिष्ठान में स्टेशनरी एवम् दैनिक गृह उपयोग की सामग्री उचित दाम पर उपलब्ध है। सेवा हेतु निवेदन

प्रोपा० त्रिलोचन पाण्डे

सरस्वती वन्दना

हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें पार दे माँ

हे शारदे माँ हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें पार दे माँ।
तू स्वर की देवी, है ये संगीत तुझसे, हर शब्द तेरा, है हर गीत तुझसे।

हम हैं अकेले, हम है अधूरे, तेरी शरण में हमें प्यार दे माँ,
विद्या का हमको अधिकार दे माँ।
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें पार दे माँ।

तू श्वेत वर्णी, कमल पै विराजे, हाथों मे वीणा, मुकुट सर पै साजे।
मन से मिटाके, हमारे अंधेरे, हमको उजालों का संसार दे माँ,

हे शारदे मां, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें पार दे माँ।
मुनियो न समझी, मुनियों ने जानी वेदों की भाषा, पुराणों की वाणी,

हम भी तो समझे, हम भी तो जाने, विद्या का हमको भी वरदान दे माँ।
हे शारदे मां हे शारदे माँ अज्ञानता से हमें पार दे माँ।

❖❖❖

श्रद्धांजलि

सावित्री के संस्थापक सदस्य श्री चन्द्रबल्लभ पाण्डेय का 76 वर्ष की अवस्था में दिनांक 10.12.2010 को निधन हो गया। श्री पाण्डेय का प्रारंभ से ही इस संस्था को सराहनीय योगदान मिला। वे संस्था के कोषाध्यक्ष भी रहे। स्व0 पाण्डेय मूलत: ग्राम हल्दुआ, द्वाराहाट के निवासी थे और लोक निर्माण विभाग में लेखा अधिकारी पद से अवकाश प्राप्त थे। अपने अन्तिम समय में अपने साहित्यकार पुत्र अशोक पाण्डेय के साथ जजफार्म हल्द्वानी मे निवास कर रहे थे। हिमवत्स परिवार श्री पाण्डेय की आत्मा की शान्ति व परिजनों को धैर्य प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।

क्या आप जानते हैं

1. तिब्बत शब्द का क्या अर्थ है?:- बर्फ की जमन या प्रदेश
2. शुष्क वर्फ (Dryice) किसे कहते हैं?:- ठोस कार्बन डाइ आक्साइड जिसे धुआँ समान पानी के सफेद बादल निकलते हैं।
3. एक वयस्क घोड़ा कितना छोटा हो सकता है?:- अर्जनटीना में पाया जाने वाला "लाबेला नस्ल का घोड़ा बहुत छोटा होता है कुछ तो केवल 15 इंच (38-40 से.मी) तक ऊँचे होते है और वनज में केवल 18.20 किलोग्राम होते हैं।
4. एसीमो (Asimo) नाम से क्या या कौन विख्यात है?:- होन्डा कम्पनी द्वारा निर्मित 1.2 मीटर ऊँचाई का रोबोट जो बहुत कुछ मनुष्य की तरह आचरण करता है और संगीत पर मन्द गति से नाच भी सकता है।
5. ऐसा कौन सा जानवर है जिसका दूध गुलाबी होता है?:-तिब्बत का याक।
6. वह कौन सा जन्तु है जिसकी मादा डेढ़ साल की उम्र में 10,000 अंडे देती है और छ: महीने इनकी देखभाल करती है इस दौरान वह कुछ भी नही खाती है और अंतत: इतनी कमजोर हो जाती है कि उसकी मृत्यु हो जाती है?:- आक्टोपस
7. विक्टोरिया मेमोरियल हौल को बनाने में कितना समय लगा?:-21 वर्ष
8. 'इनोला गे' (Enola Gay) क्या है या क्या था?:- 3G जहाज का नाम जिसने हिरोशिमा में 6 अगस्त 1945 को एटम बम गिराया था जिससे लगभग- 140000 लोगों की मृत्यु हुई।
9. सभी लिपियाँ दो आयामी ढंग में लिखी जाती है ऐसी कौन सी लिपि है जो तीन आयामी ढंग से लिखी जाती है?:- नेत्रहीनो के लिए ब्रेल लिपि।
10. जूता खरीदना हो तो इसकी नाप व फिटिंग सही हो इसके लिए उपयुक्त समय कौन सा है- सुबह या शाम?:- शाम का समय क्योंकि तब तक पैर की नाप अपने पूरे विस्तार पर आ जाती है।
11. वर्षा ककी एक बूँद अधिक से अधिक कितनी बड़ी हो सकती है?:- अधिकतम 8 मि.मी ब्याज की/इससे अधिक होने पर वह विभाजित हो जायेगी।
12. एक अन्तर्राष्ट्रीय धावक 100 मीटर की दूरी 10 सेकेण्ड में तय कर लेता है। यदि इस धावक की लम्बाई 2 मीटर है तो वह एक सेकिन्ड में अपनी लम्बाई का पांच गुना दौड़ता है। एक मक्खी इसकी तुलना मे कितनी तेज होती है?:- मक्खी अपने शरीर की लम्बाई के 250 गुना प्रति सेकन्ड उड़ती है।
13. पेन्सिल शब्द कहाँ से आया?:- पेन्सिल शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द पेनसीलियम (Pencilium) से हुई जिसका अर्थ छोटी पूँछ होता है।
14. एक हंस में लगभग कितने पंख होते हैं? :- हंस में लगभग 25,000 और बतख में 12,000 पंख होते हैं।
15. मगरमच्छ के अंडो के लिए 87^0c से कम और ज्यादा तापमान पर सेकने पर क्या अन्तर पड़ता है? :- 87^0c से ऊपर के तापमान पर सेहे (Hatched) गये अंडो से नर बच्चे और इस तापमान से कम पर मादा बच्चे पैदा होते हैं।

-आर०के० पन्त

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय ऊँचापुल, हल्द्वानी

फोन नं0 05946-221122, 261123 फैक्स: 05946-264232

वेबसाइट- http://uou.ac.in

उत्तराखण्ड शासन के द्वारा वर्ष 2005 में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी। नवम्बर, 2009 में वर्तमान कुलपति प्रो0 विनय पाठक के कार्यभार ग्रहण करने के उपरान्त इस विश्वविद्यालय की गतिविधियों का व्यापक विस्तार हुआ हैं। हाल के दिनों में विश्वविद्यालय ने 08 क्षेत्रीय केन्द्र व 190 अध्ययन केन्द्र बनाए हैं, जो पूरे प्रदेश में फैले हैं। पाठ्यक्रमों का विस्तार किया गया है और इनमें विविधता लाते हुए विभिन्न रोजगारपरक, व्यावसायिक एवं अल्पकालिक पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ किया गया है। इस प्रकार कुलपति प्रो0 विनय कुमार पाठक व कुलसचिव प्रो0 आर0सी0 मिश्र के निर्देशन में यह विश्वविद्यालय निरन्तर प्रगति की ओर अग्रेसर है।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित प्रमुख पाठ्यक्रम निम्नवत हैं :-

* पी0जी0 उपाधि पाठ्यक्रम : एम0बी0ए0, एम0कॉम0, एम0एस0डब्ल्यू0, (आई0टी0), एम0ए0 (शिक्षाशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीतिशास्त्र), एम0सी0ए0।
* डिप्लोमा एवं प्रमाण-पत्र : कमर्शियल हार्टिकल्चर, फूड एवं न्यूट्रीशिन, कर्मकाण्ड, भारतीय ज्योतिष, पत्रकारिता, योग विज्ञान, संगीत, आयुर्वेदिक मसाज व प्राकृतिक चिकित्सा।

(आर०सी० मिश्र)
कुलसचिव

नैनीताल डिस्ट्रिक्ट को-ऑपरेटिव बैंक लि०

नैनीताल डिस्ट्रिक्ट को-आपरेटिव बैंक लि0 हल्द्वानी की ओर से हार्दिक शुभकामनायें एवं कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों का बैंक हार्दिक अभिनन्दन करता है।

बैंक द्वारा उपलब्ध कराई जा रही विभिन्न सुविधाओं का लाभ उठायें :-

* हल्द्वानी शहर में बैंक ग्राहकों को ए.टी.एम. सुविधा। निक्षेप संचय- Saving,Current,F.D.,R.D& No Frill A/C, सम्पूर्ण भारत वर्ष में। गपे ठंदा के माध्यम से ऋण की सुविधा। कामर्शियल वाहन/निजी वाहन क्रय हेतु ऋण की सुविधा। पैक्स समितियों के माध्यम से कृषकों को फसली ऋण की सुविधा। गृह निर्माण/भवन क्रय हेतु आवास ऋण की सुविधा। घरेलू आवश्यक सामग्री) यथा-फ्रिज, टी0वी0, फर्नीचर, वाशिंग मशीन आदि) क्रय हेतु उपभोक्ता टिकाउ ऋण की सुविधा। होटल/मोटल आदि निर्माण हेतु वीरचन्द्र सिंह गढ़वाली पर्यटन योजनान्तर्गत ऋण की सुविधा। राष्ट्रीय कृषि बागवानी एवं फलोरीकल्चर हेतु ऋण की सुविधा। सहकारिता सहभागिता योजनान्तर्गक कृषकों को सस्ते ब्याज पर ऋण की सुविधा। वेतनभोगी सहकारी समितियों के माध्यम से ऋण की सुविधा। स्वरोजगार क्रेडिट कार्ड योजना के तहत ऋण की सुविधा। सहकारी ऋण समितियों के माध्यम से सी-15 योजना के तहत कृषि एवं विविध कार्यों हेतु ऋण की सुविधा।

एल०डी० भगत	दीपा नयाल	पंकज पाण्डेय
सचिव/महाप्रबन्धक	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष

एवं संचालक मण्डल के समस्त सदस्यगण

यूनिफार्म

हमारे यहां विद्यालय की गर्मी व जाड़ो का कपड़ा व तैयार रेडीमेड ड्रेस, रेडीमेड स्काउट ड्रेस कराटे ड्रेस, ट्रैक सूट, टाई, बैल्ट, कोट, स्पोर्ट कलर, स्वेटर व मौजे के एकमात्र विक्रेता

मित्रों की दुकान

जामा मस्जिद के पास, नया बाजार,
हल्द्वानी (नैनीताल) 250045,
दुकान-250532
9412035753 मो.

Providing Need Based Investment Solution

NAINITAL STOCKS & SECURITIES

(D P Wealth Mantra Limited)

First Floor, Commercial Building, Mallital, Nainital-263001

05492-232117-9719235774

(Please contact for Equities, Derivatives, Demat Services, Mutual Funds, Fixed Income Plans, Online- Off line share trading.)

कम्प्यूटर द्वारा नेत्र परीक्षण एवं कान्टैक्ट लैंस की सुविधा सहित

शंकर आप्टीकल्स

खड़ी लाइन बड़ा बाजार

दुकान नं० 329 मल्लीताल, नैनीताल

फो: 237909, 9897049681 मो० 09548949653

टापके फैम्ली का आप्टिकल

BHARAT OPTICAL CENTER

Rampa complex, Kaladhungi Chauraha
Haldwani, Nainital (U.K)263139
Ph:05946-254818
Mob:9412086818
E mail:bharat_op@yahoo.com

DISTRIBUTORS OF UTTARAKHAND

Bausch+ Lomb Eye Care India Pvt Ltd.
& Essilor India Pvt. Ltd.
FACILITATOR

*Contact lenses
*Goggles
*Frames
*Low Vision aids

ASK US:

*Would you prefer to have thinner light lenses?
*Would you like to protect your eyes from harmful UV adiations?
*Would you like reflection free Coating?
*Do you want to get rid of the line in those bifocals and try a progressive lens?

HEMANT KUMAR PANT
D.R. Opt., DBE, CO, CLEP
Consultant Optometrist & Contact Lens Specialist

With Best Compliments From

Offest Printing
Colour
Photo Printing
Screen Printing
Colour
Photo State

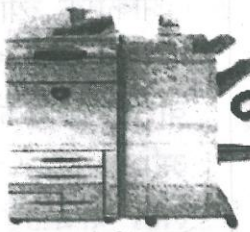

Consul printers
Mallital, Nainital - 263001
Ph. : 05942-235219, 236479
Fax : 05942-239853

With Best Compliments From

Consul Book Depot

DISTRIBUTOR - NCERT BOOKS
BOOK-SELLERS,LIBRARY SUPPLIERS, STATIONERS,
ART MATERIAL & COMPUTER STATIONERS
BARA BAZAR, MALLITAL, NAINTAL - 263001
TEL. : 05942-235164, FAX : 05942-239853
E-mail : consulbookdepot@gmail.com

NAINITAL BANK
THE NAINITAL BANK LTD.

दि नैनीताल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय : जी.बी. पंत मार्ग, नैनीताल

उत्तर भारत

का एक प्रमुख

वाणिज्यिक बैंक

कोर बैंकिंग

आर.टी.जी.एस. एवं

एन.ई.एफ.टी

सेवा सहित

जमा योजनाएं

आकर्षक ब्याज

तुरन्त व व्यक्तिगत सेवा

वरिष्ठ नागरिकों के लिए

अधिक ब्याज

लोन योजनाएं

रिटेल लोन, व्यापार लोन

कृषि लोन

एस.एम.आई लोन सरकारी

योजनाओं के अन्तर्गत लोन

अन्य योजनाएं

ग्रूप जीवन बीमा व्यक्तिगत

जीवन बीमा

सामान्य बीमा मेडिक्लेमक्रेडिट

कार्ड

म्युच्युअल फंड वेस्टर्न यूनियन

मनी ट्रांसफर

1992 से आपकी सेवा में

Visit us at:- www.nainitalbank.co.in

e-mail us at:- premises@nainitalbank.co.in

तिवारी मेटरनिटी सेंटर एण्ड डाइबिटिक क्लीनिक

मुखानी, हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

डा० मोहन तिवारी
एम.बी.बी.एस, एम.डी, मेडि.
फिजिशियन हृदयरोग एवं
डायबिटीज विशेषज्ञ
मो. 9412087823

डा० श्रीमती जयश्री तिवारी
एम.बी.बी.एस, एम.एस
प्रसूती एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ
फोन- 263674, 263817

सुविधाएं :-

- सभी प्रकार के आपरेशन, डिलिवरी, सिजेरियन, मेडिकल एबोंशन।
- अल्ट्रासाउन्ड, कोल्पोस्कोपी द्वारा बच्चेदानी की जाँच
- नि:संतान दम्पतियों का इलाज, दूरबीन विधि से आपरेशन
- आपातकालीन सेवा 24 घण्टे की सुविधा
- डाइविटीज मरीजों के लिए भी भर्ती की सुविधा

With Best Compliments From

Tewari Maternity Centre & Diabtic Clinic

Mukhani Haldwani, Nainital Uttarakhand
(A Gateway of Kumaun)

Dr. Mohan Tiwari
M.B.B.S, MD Medicine &
Physican, Heart Disease Diabetes Specialist

Dr. Smt Jay Shree Tewari
M.B.B.S, MS
Obstitician & Gynochogist

Facilities:

FCG
Ultrasound
Pulse Oximeter

1 All kind of operations, delivery, caeserian, medical abortion
2 Ultrasound, colposcopic examination of uterus, Nabulizer.
3 Pathology, E.C.G, Cardiac Monitor Facilities are available.

नगर पालिका परिषद नैनीताल

नगर पालिका परिषद् द्वारा जन कल्याण हेतु संचालित विभिन्न योजनाओं का जन समुदाय अधिक मे अधिक लाभ उठा सके इस हेतु नगर पालिका सदैव तत्पर है। पालिका द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं एवं सेवायें निम्न है-

1- शिकायत साफ्टवेयर संतुष्टि साफ्टवेयर के माध्यम से घर बैठे टेलीफोन नं0 05942-231497 के माध्यम से शिकायत दर्ज करायें।

2- बैबसाइड www.nagarnainital.com के माध्यम से नगर पालिका परिषद नैनीताल से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी प्राप्त करें।

3- नगर को स्वच्छ रखने में नगरपालिका द्वारा संचालित योजना में सहयोग प्रदान करें, तथा सदस्य बनें। कूड़ा इधर-उधर न फेंके अन्यथा रूपया 250.00 का दण्ड प्राविधान है।

4- नगरपालिका परिषद् नैनीताल के समस्त करों का भुगतान यथासमय कर छूट का लाभ उठाएं।

5- नगरपालिका परिषद् नैनीताल द्वारा समय-समय पर तालाब एवं नालियों में आयोजित किये जाने वाले सफाई अभियान कार्यक्रमों में अपनी सक्रिय भागीदारी दें।

6- नगर के अन्तर्गत स्थित 13 वार्डो में जागरूकता कार्यक्रम/विशेष सफाई अभियानों का आयोजन किया जा रहा है आप उक्त बैठकों में प्रतिभाग कर कार्यक्रमों का अधिक से अधिक लाभ उठायें।

7- जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीनीकरण मिशन के अन्तर्गत विभिन्न योजनाओं के सफल क्रियान्वयन कूड़ेदानों में कूड़े को न जलायें और न किसी को जलाने दें। इसमें आप व हम सबका सहयोग वांछनीय है।

नीरज जोशी
अधिशासी अधिकारी

मुकेश जोशी
अध्यक्ष

S.T.No. HN- 0146536

जय भवानी सेवा संस्थान

खड़िया फैक्ट्री के पास, छोटी मुखानी,
हल्द्वानी, जिला- नैनीताल (उत्तराखण्ड)

Ph: 05946-263589, 9319160020

उत्तराखण्ड खादी तथा ग्रामद्योग बोर्ड, हल्द्वानी, नैनीताल से पंजीकृत एवं वित्त पोषित काष्ट एवं लौह इकाई फर्नीचर के थोक तथा फर्नीचर के थोक तथा फुटकर निर्माता एवं विक्रेता डबलबैड, सोफे, डाइनिंगसैट, कुर्सी, टेबेज, स्कूल फर्नीचर चक्ता शीट डैक्स तथा आधुनिक फर्नीचर के सरकारी सप्लायर एवं चौखट विन्डो तथा दरवाजों के विक्रेता।

अध्यक्ष जीवन चन्द्र भट्ट

चम्पावत–सी0के0बिष्ट गॉव में 2 प्रेम बिष्ट(चिन्नई) 3 पौधारोपण 4 खेलकूद 5 प्रमाण पत्र प्रर्दशन 6 विशिष्ट सम्मान 7 छात्र सहभाग 8–9 निजी पाठशालाओं के छात्र विज्ञान केन्द्र में 10–11 यू0एस0ए में डा0 शुक्ला(F.F.E), बैकलासन(A.I.F), I.I.T कानपुर 12–14 60–65 प्रथम बैच भौतिक विज्ञान (रीयूनियन)

विनयमोदी, हल्द्वानी, 15–20 ए0के0सेठ S.S.I डॉ0आर0सी0पाठक व श्यामघानक NAB डा0बाबूलाल गुप्ता व डॉ0के0के0पाण्डेय,डॉ0जी0बी0बिष्ट,नेत्र परीक्षण,प्रो0पा0सुभाष नगर शिक्षक व प्रबन्धन समिति सदस्य।

REGISTRATION OPEN 2011

Amrapali Institute of Management & Computer Applications

Affiliated to Uttrakhand Technical University & Approved by AICTE

MBA	Graduate, MAT Score	UTU Counselling
MCA	Graduate, 10+2 Maths	UTU Entrance Qualified & Counselling

Amrapali Institute of Hotel Management

Affiliated to Uttrakhand Technical University & Approved by AICTE

BHMCT	10+2	UTU Counselling
DHMCT	10+2	JEEP Counselling*

(Affiliated to Uttrakhand Technical Board & Approved by AICTE)

Amrapali Institute of Technology & Sciences

Affiliated to Uttrakhand Technical University & Approved by AICTE

B. Tech.	CSE, ECE, EEE, EIE, IT, ME	10+2, Maths & Science

Through AIEEE Counselling

Amrapali Institute of Applied Sciences

Affiliated to Kumaun University

BBA	10+2 with 45%	Merit of Qualifying Exam
BCA	10+2 Maths, with 45%	Merit of Qualifying Exam
BHM	10+2	Direct on the basis of merit.

Note Registration for admission open in all courses. Admission as per norms above.

Our Collaborators

- Experienced Faculty
- Corporate Tie-up
- Excellent Placement Record
- Mentorship Programme
- Online Journals
- Education Loan Facility
- Scholarships
- International Student Exchange Programme
- Add-on Certifications
- Communication Lab

AMRAPALI
GROUP OF INSTITUTES

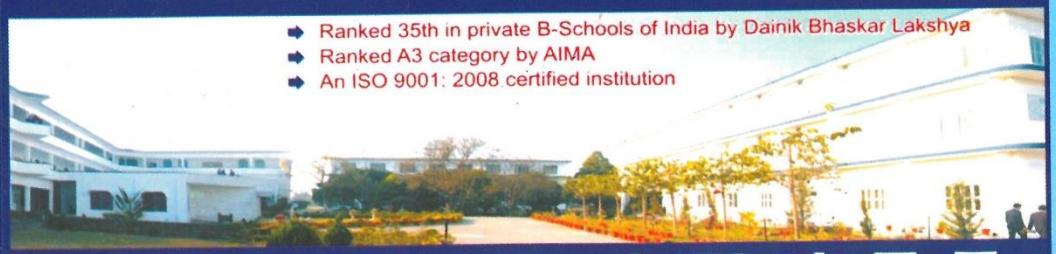

Celebrating 10 years of academic excellence

Website: www.amrapaliinstitute.ac.in, www.amrapaliinstitute.info
Ph: 05946-238201, 02. mob.: 9837302005, e-mail:admission2ai@gmail.com
SHIKSHA NAGAR, KALADHUNGI ROAD, HALDWANI, DISTT. NAINITAL - 263139
Ph. No. 09759670200, 09759670300, 09759670400, 09759670500

print'n'design- Uttarayan Prakashan, Hld. -221125